पं. राधाकृष्ण श्रीमाली

मंत्र शक्ति साधना

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

॥ श्री गणेश उवाच ॥

पुनरुचे गणाधीशः स्तोत्र मेतत् पठेन्नरः ।
त्रिसन्ध्य त्रिदिनं तस्य सर्व कार्यं भविष्यति ॥९॥

यो जपेदष्ट दिवसं श्लोकाष्टकमिदं शुभम् ।
अष्ट वारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्ट सिद्धिरवाप्नुयात् ॥१०॥

यः पठेनन्मास मात्रं तु दशवारं दिने दिने ।
स मोच येद् बन्धगतं राजवध्यं न संशयः ॥११॥

विद्या कामो लभेद् विद्यां पुत्रार्थी पुत्र माप्नुयात् ।
वांछितांल्लाभवे सर्वांनेक विंशति वारतः ॥१२॥

यो जपेत् परया भक्त्या गजानन परोनरः ।
एव मुक्त्वा ततो देवाश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥१३॥

लक्ष्मी सिद्धि के लिए

लक्ष्मी प्राप्ति और अपनी आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए निम्न स्तोत्र के २१ पाठ नित्यप्रति करने चाहिए—

ॐ नमो विघ्न राजाय सर्व सौख्य प्रदायिने ।
दुष्टारिष्ट विनाशाय पराय परमात्मेन ॥

लम्बोदरं महावीर्यं नाग यज्ञोप शोभितम् ।
अर्ध चंद्र धरं देवं विघ्न व्यूह विनाशनम् ॥

ॐ ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः ।
सर्व सिद्धि प्रदोऽसि त्वं सिद्धि बुद्धि प्रदोभवः ॥

चिन्तितार्थ प्रदस्त्वं हि सततं मोदक प्रियः ।
सिन्दूरारुण वस्त्रेश्च पूजितो वरदायकः ॥

इदं गणपति स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः ।
तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुंचति ॥

पुत्र प्राप्ति के लिए

निम्न स्तोत्र के २१ पाठ नित्यप्रति करना चाहिएं—

नमोऽस्तु गणनाशाय सिद्धि बुद्धि युताय च ।
सर्वं प्रदाय देवाय पुत्र वृद्धि प्रदाय च ॥

गुरू दराय गुरवे गोप्ते गुह्या सिताय ते ।
गोप्याय गोपिताशेष भुवनाय चिदात्मने ॥

विश्व मूलाय भव्याय विश्व सृष्टि करायते ।
नमो नमस्ते सत्याय सत्य पूर्णाय शुण्डिने ॥

एक दन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः ।
प्रपन्न जन पालाय प्रणतार्विविनाशिने ॥

शरणं भव देवेश संतति सुदृढ़ कुरू ।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गण नायक ॥

ते सर्वे तव पूजार्थंमिरताः स्युवंरो मतः ।
पुत्र प्रदमिदं स्तोत्रं सर्वं सिद्धि प्रदायकम् ॥

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु पांच कल्प

तांत्रिक ग्रंथों में वर्णित ये कल्प अभी तक गोपनीय रहे हैं, इसका प्रभाव अचूक एवं आश्चर्यजनक होता है। निर्धनता की चरम सीमा पर पहुँच जाने पर भी साधकों द्वारा किये जाने वाले ये कल्प अत्यन्त प्रभावकारी सिद्ध हुए हैं।

वे परिवार अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं, जहाँ ये पाँचों कल्प सिद्ध कर लिए गए हैं। आर्थिक अनुकूलता की दृष्टि से इन कल्पों से बढ़ कर कोई भी अन्य तांत्रिक-यांत्रिक प्रयोग नहीं हैं।

जीवन में वही व्यक्ति सही रूप में सही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है, जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो, परन्तु यह अर्थ प्राप्ति सही तरीकों से हो और उसका सही प्रकार से प्रयोग होता हो।

तन्त्र साहित्य में लक्ष्मी प्राप्ति के कई प्रयोग हैं । कुछ प्रयोग अपने आप में अद्भुत फलदायक हैं तथा उनका लाभ एवं प्रभाव प्राप्त होता ही है। शास्त्रों में कहा गया है कि कमलगट्टा लक्ष्मी का प्रिय फल होता है। अतः जो भी प्रयोग किया जाए उसमें कमलगट्टे की माला का ही प्रयोग किया जाए। यह माला मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त लक्ष्मी चैतन्य हो।

तांत्रिक ग्रन्थों मे कुछ कल्प सिद्ध करने के प्रयोग हैं जो सर्वथा गोपनीय है और बहुत ही कम साधकों, साधुओं एवं विद्वानों को ज्ञात हैं। मुझे एक प्राचीन प्रति कुछ वर्ष पहले स्वामी केशवानंद जी से प्राप्त हुई, जो अपने आप में अद्भुत थी, उसमें कुछ कल्प सिद्ध करने के प्रयोग थे।

उसके बाद मैंने उस पुस्तक मे दिए हुए तरीके से कल्प सिद्ध करने के प्रयोग किये थे और मैं स्वयं यह देखकर आश्चर्यचकित था कि उनका प्रभाव अचूक एवं आश्चर्यजनक होता है। मैंने अपने शिष्यों से भी इस प्रकार के प्रयोग करवाये और उन्होंने भी इनका प्रभाव एक स्वर से स्वीकार किया है। यही नहीं अपितु दिवालिया की कगार तक पहुँचे हुए व्यक्तियों को भी मैंने प्रयोग बताए हैं और उन्होंने इनका प्रयोग कर कुछ ही दिनों में पुनः अपनी आर्थिक स्थिति अनुकूल बनाने मे सफलता पायी है।

मैं तन्त्र या मन्त्र को गोपनीय रखने के पक्ष में नहीं हूँ। इस पुस्तक के माध्यम से इन दुर्लभ एवं गोपनीय कल्पों को प्रकाशित कर रहा हूँ, साधक इसका लाभ उठा सकते हैं।

लक्ष्मी से सम्बंधित प्रयोगों में पाँच कल्प अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, जो कि निम्नलिखित हैं :

१. रुद्राक्ष कल्प, २. रक्तगुंजा कल्प, ३. मयूरशिखा कल्प, ४. एकाक्षी नारियल कल्प, ५. दक्षिणावर्त शंख कल्प।

मैंने स्वयं कई श्रीमानों के लिए ये कल्प सिद्ध किए हैं और अनुभव किया है कि प्रत्येक कल्प श्रेष्ठ है, तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इससे बढ़ कर कोई कल्प नहीं है। मन्त्र या तंत्र नहीं है।

ये पाँचों कल्प अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं और इनका प्रयोग सौभाग्य-शाली ही कर सकता है। मैं आगे के पृष्ठो में इन कल्पों का प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ।

१. रुद्राक्ष कल्प

जो साधक एकसाथ भोग और मोक्ष की इच्छा रखते हैं उन्हें यह कल्प अवश्य ही करना चाहिए। यद्यपि यह कल्प महँगा है परन्तु अन्ततः इसे सिद्ध करने के बाद जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

सामान्य रुद्राक्ष ही व्यक्ति को उन्नति देने में और पापों को दूर करने में सहायक हैं।

रुद्राक्ष कल्प के लिए एकमुखी रुद्राक्ष आवश्यक है। यह रुद्राक्ष दुर्लभ है परन्तु फिर भी मिल सकता है। बाजार में कई नकली रुद्राक्ष प्राप्त होते हैं और एकमुखी रुद्राक्ष बताकर बेचने वाले तो हर स्थान पर पाये जाते हैं। अतः सोच समझ कर तथा जानकार व्यक्ति को दिखाकर ही एकमुखी रुद्राक्ष खरीदना चाहिए। सामान्यतः श्रेष्ठ एकमुखी रुद्राक्ष लगभग २५०० रुपये में प्राप्त हो जाता है।

एकमुखी रुद्राक्ष गोल या काजू के आकार का होता है। काजू के आकार का रुद्राक्ष दुर्लभ है और यह कठिनाई से ही प्राप्त होता है।

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि से या चैत्र शुक्ला अष्टमी से किया जा सकता है। सर्वप्रथम चाँदी की थाली या कटोरी मे चन्दन या केशर से अष्ट-दल बनावें और उस पर रुद्राक्ष को स्थापित कर दें। स्थापित करने से पूर्व इस रुद्राक्ष को मन्त्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त तथा एकमुखी रुद्राक्ष के मन्त्र से चैतन्य कर दें।

इसके बाद इस रुद्राक्ष का १०८ लाल पुष्पों से पूजन करें। प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—ॐ एं ह्रं औं ऐं ॐ।

इसके बाद रुद्राक्ष के सामने दीपक व अगरबत्ती जलाएं। केशर, चन्दन तथा कपूर बराबर-बराबर लेकर उसे घोटकर अर्थात मिलाकर इस रुद्राक्ष पर तिलक करें और फिर निम्न मन्त्र की ११ मालाएं उस रुद्राक्ष के सामने फेरें। प्रत्येक बार मन्त्र पढ़कर एक कमलगट्टा, एक इलायची का दाना तथा एक पुष्प (किसी भी प्रकार का पुष्प) उस रुद्राक्ष पर चढ़ावें। इस प्रकार दीपावली की रात्रि को पूरी ११ मालाएं फेरें। यह माला कमलगट्टे की हो तथा एक माला में १०८ दाने हों। प्रत्येक दाना पूर्ण हो अर्थात् टूटा हुआ न हो।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं एकमुखाय भगवतेनुरूपाय सर्वं युगेश्वराय त्रैलोक्यनाथ
सर्वकाम फलप्रदाय नमः ।

जब ११ मलाएं पूरी हो जाएं तब साधक को चाहिए कि पुनः रुद्राक्ष
की पूजा करें और सारी रात उसके सामने दीपक एवं अगरबत्ती जलाये
रखें ।

प्रातःकाल उस रुद्राक्ष को सोने में मढ़ाकर गले में धारण कर लें या
अपनी तिजोरी में रख लें ।

रुद्राक्ष के सामने जो इलायची, पुष्प तथा कमालगट्टा चढ़ाया था वह
किसी कुएं, नदी या तालाब में विसर्जित कर दें ।

यह एक श्रेष्ठ और आश्चर्यजनक फलप्रदायक प्रयोग है तथा ऐसा
प्रयोग सम्पन्न होने पर उस व्यक्ति के जीवन में कभी भी आर्थिक अभाव
नहीं आता । यह सिद्ध एवं प्रामाणिक प्रयोग है ।

२. रक्तगुंजा कल्प

रक्तगुंजा एक वनस्पति होती है, और अत्यन्त कठिनता से उपलब्ध हो पाती है । यह पौधा सामान्यतः नहीं पाया जाता परन्तु हिमालय के अत्यन्त ऊँचे स्थान पर यह पौधा पाया जाता है । जंगल में कहीं-कहीं यह पौधा देखने को मिल जाता है ।

इसकी पत्तियाँ अत्यन्त दुर्लभ मानी गई हैं । प्रयोग में इसकी पाँच पत्तियाँ काम में लायी जाती हैं । कुछ साधु इस प्रकार की पत्तियों को सम्भाल कर रखते हैं और प्रत्येक पत्ती तीस से चालीस रुपये में देते हैं ।

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि को किया जाता है । दीपावली के दो दिन पूर्व धन त्रयोदशी की रात्रि को किसी स्वच्छ बर्तन में केशर तथा कुंकुम मिलाकर अष्टदल बनावें तथा उस पर रक्तगुंजा की पाँच पत्तियाँ एक सीध में रख दें या ये पत्तियाँ किसी भी क्रम में उस अष्टदल पर रख दें ।

इसके बाद "मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" मन्त्र से इन पत्तियों

की पूजा करें । इसके सामने चन्दन, चावल, पुष्प और नैवेद्य रखें तथा सामने अगरबत्ती व दीपक जलावें ।

दूसरे दिन उस थाली को ज्यों की त्यों दिन भर उसी प्रकार रहने दें ।
दीपावली के एक दिन पूर्व चर्तुदशी की रात्रि को पुनः इसी प्रकार पूजा करें।

दीपावली की रात्रि को इन पत्तियों के सामने निम्न मन्त्र की १०८ मालाएँ फेरें । यह माला कमलगट्टे की होनी चाहिए ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं रक्तगुंजा सिद्धि देहि देहि श्रेष्ठ फलप्रदाये ऐं ह्रीं नमः ।।

दीपावली के दूसरे दिन चाँदी के या ताँबे के खोल या ताबिज मे इन पत्तियों को भरकर ऊपर ढक्कन बंद कर अपने गले मे धारण कर लेना चाहिए अथवा बाँह पर बांध लेना चाहिए। इसे पुरुष या स्त्री कोई भी धारण कर सकता है ।

प्रभाव

१. यदि किसी को विष चढ़ गया हो तो यह ताबीज पानी के गिलास में डालकर ऊपर लिखे मन्त्र को पाँच बार पढ़कर, वह पानी उस व्यक्ति को पिला देना चाहिए । इससे उसका विष उतर जायेगा ।

२. जो व्यक्ति यह ताबीज पहने रहता है उसे जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती रहती है और समाज में उसे विशेष सम्मान प्राप्त होता रहता है ।

३. यदि किसी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाना हो तो यह ताबीज उस व्यक्ति को दिखाते हुए उपरोक्त मन्त्र को मन ही मन तीन बार पढ़ें तो वह व्यक्ति अनुकूल हो जाता है और अपने कहे अनुसार कार्य करने को तत्पर हो जाता है ।

४. यदि कोई स्त्री इस प्रकार का ताबीज कमर में बांधकर पति के साथ रमण करे तो पुत्र प्राप्ति होती है ।

५. यदि इस ताबीज को सरसों के तेल में डालकर हिलाते हुए २१ बार उपरोक्त मन्त्र का जाप किया जाए और वह सरसों का तेल अपने

शरीर पर लगावें तो रोग से मुक्ति मिलती है।

तांत्रिक ग्रन्थों में इसके और भी कई लाभ बताये गए हैं। यदि साधक इस मन्त्र को मात्र धारण किए रहें तब भी उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

यदि कोई साधक स्वयं इस कल्प को सम्पन्न नहीं कर सके तो किसी योग्य विद्वान से यह कल्प सिद्ध करवाकर ताबीज धारण कर सकता है।

३. मयूरशिखा कल्प

यह एक जड़ी है और बहुत ही दुर्लभता से प्राप्त होती है। तांत्रिक ग्रन्थों में इसके कई प्रयोग हैं। यह प्रयोग भी प्रामाणिक और अनुभूत है। सबसे पहले साधक को मयूरशिखा जड़ी प्राप्त करनी चाहिए। इस प्रकार की जड़ी साधुओं के पास या जानकार व्यक्तियों के पास से प्राप्त हो सकती है। मयूरशिखा जड़ी का टुकड़ा लगभग २०० रुपये में सामान्यतः प्राप्त हो जाता है।

दीपावली के दिन साधक सर्वथा नग्न होकर सामने चाँदी या ताँबे की थाली में मयूरशिखा जड़ी रख दे और उस पर सिंदूर, कपूर एवं कस्तूरी लगावें तथा इसके सामने अगरबत्ती व दीपक जलावे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं मयूरशिखा महासुसर्वकार्यं साधय-साधय स्वाहा।

फिर उसी रात्रि को अर्थात् दीपावली की रात्रि को ही उस थाली से जड़ी हटा ले और चावल तथा तिल एक अलग स्थान पर डाल दें तथा उस थाली में चन्दन या केशर से अष्टदल बनाकर उस पर जड़ी रख दे और निम्नलिखित मन्त्र की एक माला फेरें।

मन्त्र

ॐ नमो महासेनाय शक्ते हस्ताय महेश्वर वरलखी प्रसादाय ज्वल-ज्वल प्रज्जवल औषधि सर्वं दुष्ट नाशिनी सह मम भवतु स्वाहा।

इस प्रकार १०८ बार उच्चारण करने से यह जड़ी सिद्ध हो जाती है। तब इसका केशर से पूजन करना चाहिए और उसके सामने अगरबत्ती एवं दीपक जलाना चाहिए। निम्नलिखित मन्त्र की १०८ मालाएँ फेरनी चाहिएं। इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ह्सौं राजलक्ष्मी ज्ञायेन लाभं देहि देहि महालक्ष्म्यै नमः।

पूरी रात में १०८ मालाएँ पूरी हो जानी चाहिए। तथा प्रातःकाल उठकर स्नान आदि कर इस जड़ी के कुछ भाग को चाँदी या ताँबे के तावीज में भरकर अपने गले में या बाँह पर बाँध लें। शेष जड़ी का भी प्रयोग हो सकता है।

प्रभाव

१. मयूरशिखा की इस प्रकार की सिद्ध जड़ी को तावीज में भरकर दाहिने हाथ पर बाँध लें। किसी के भी पास जाकर साधक जो कुछ भी माँगेगा उसे प्राप्त होगा।

२. जड़ी को पानी के साथ घिसकर ललाट पर तिलक लगाकर साधक जिसके सामने भी जाकर खड़ा होगा और मन ही मन 'अमुकं (नाम) वशमानाय स्वाहा' कहे तो वह जीवन भर के लिए वश में हो जाता है। इस मंत्र में अमुक के स्थान पर सम्बंधित व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए।

३. मयूरशिखा की उपरोक्त तरीके से सिद्ध जड़ी को साधक हाथ में बाँधकर जावे तो मुकदमे में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

४. यह जड़ी यदि धूप देकर रोगी की बाँह पर बाँध दी जाए तो उसका रोग समाप्त हो जाता है।

५. यह जड़ी यदि घर में रखी जाये तो चोर आदि का भय नहीं रहता है।

६. इस प्रकार की सिद्ध जड़ी को तिजोरी आदि में रखें तो अक्षय भंडार प्राप्त होता है। दुकान में रखें तो बिक्री बढ़ती है। फैक्ट्री में रखें तो किसी भी प्रकार की आर्थिक समस्या नहीं रहती।

वशीकरण एवं आर्थिक उन्नति के लिए यह एक श्रेष्ठ प्रयोग माना गया है।

४. एकाक्षी नारियल कल्प

प्रकृति का यह आश्चर्यजनक वरदान है। सामान्यतः नारियल के
ऊपर जटा होती है। इस जटा को दूर करने पर कठोर सा नारियल
दिखाई देता है। जिसके अन्दर नारियल होता है। इस कठोर गोले पर दो
बिन्दु आँख की तरह दिखाई देते हैं। ये दो बिन्दु सभी नारियलों पर पाये
जाते हैं परन्तु सौभाग्य से कुछ ही नारियल ऐसे होते हैं जिन पर एक ही
बिन्दु होता है। यह बिन्दु आँख की तरह दिखाई देता है। अतः जिस
नारियल पर एक बिन्दु होता है उसे एकाक्षी नारियल कहा जाता है।

इस प्रकार का नारियल कठिनाई से प्राप्त होता है और यह लक्ष्मी
का स्वरूप माना जाता है। हजारों लाखों नारियलों में से एक ही नारि-
यल ऐसा होता है, इसलिए यह दुर्लभ माना गया है। प्रयत्न करने पर
कठिनाई से ३०० रु० से ५०० रु० तक ऐसा नारियल प्राप्त हो सकता है।

यदि कुछ भी प्रयोग न किया जाए तो भी ऐसा नारियल लक्ष्मी प्राप्ति
में सहायक होता है और अत्यन्त सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घरों में ही
इस प्रकार का नारियल पाया जाता है।

दीपावली के दिन इस नारियल पर कल्प का प्रयोग किया जाता है।
सबसे पहले साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने थाली में
चन्दन एवं कुंकुम से अष्टदल बनाकर उस पर नारियल को रख दें और
अगरबत्ती व दीपक जला दें।

फिर पंचामृत दूध, दही, घी, शक्कर, शहद से इस श्रीफल को स्नान
कराकर पवित्र वस्त्र से पोंछ लें। फिर इस पर पुष्प, चावल, नैवेद्य आदि
रखें और लाल रेशमी वस्त्र चढ़ावें।

इसके बाद रेशमी वस्त्र को जो कि आधा मीटर लम्बा हो, बिछाकर
उस पर केशर से निम्न मन्त्र लिखें :

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः
सर्वसिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।

फिर उस रेशमी वस्त्र पर उस नारियल को रख दें और निम्न मंत्र

पढ़ते हुए उस पर १०८ गुलाब के पुष्प चढ़ावे, और प्रत्येक पुष्प चढ़ाते
समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करता रहे।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इसके बाद गुलाब के पुष्प हटाकर उस रेशमी वस्त्र में नारियल को
लपेटकर थाली में चावलों की ढेरी पर रख दें और निम्नलिखित मन्त्र की
१०८ मालाएँ उस रात्रि को (दीपावली की रात्रि को) फेरें।

मूल मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एकाक्षाय श्रीफलाय भगवते विश्वरूपाय सर्वयोगे-
श्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्य प्रदाय नमः।

प्रातःकाल उठ कर पुनः २१ गुलाब से पूजा करें और रेशमी वस्त्र में
लिपटे हुए नारियल को पूजा के स्थान पर रख दें।

प्रभाव

१. इस प्रकार का नारियल अत्यन्त सौभाग्यदायक और लक्ष्मीदायक
होता है। जिस घर में ऐसा नारियल होता है, उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि
से कोई अभाव नहीं रहता है।

२. ऐसा नारियल गर्भवती स्त्रियों को सुंघाने मात्र से बिना कष्ट के
बच्चा हो जाता।

३. बाँझ स्त्री को ऋतु-स्नान के बाद पानी में यह नारियल घोलकर
वह पानी पिला दिया जाए तो अवश्य ही संतान होती है।

४. यदि घर में भूत-प्रेत का उपद्रव हो तो मूलमन्त्र को ७ बार पढ़कर
इस नारियल को पानी में डुबोकर पुनः सात बार मन्त्र पढ़ें। फिर
नारियल निकाल दें और पानी घर में छिड़क दें। ऐसा पानी जिस घर में
छिड़का जायेगा उस घर से भूत-प्रेत का उपद्रव समाप्त होता है।

५. यदि कोई बैरी या शत्रु हो तो लाल कनेर का फूल लेकर इस
नारियल पर रखकर उस शत्रु का नाम लेकर मूल मन्त्र की एक माला फेर
कर वह फूल दक्षिण दिशा में फेंक दें तो शत्रु समाप्त हो जाता है।

६. यदि इस प्रकार का नारियल तिजोरी में रखें तो कई पीढ़ियों तक
धन का अभाव नहीं रहता।

५. दक्षिणावर्त शंख कल्प

मूलतः भारत में जितने भी शंख पाए जाते हैं वे वामवर्त शंख होते हैं।
परन्तु यह प्रकृति का चमत्कार ही है कि बहुत कम शंख दक्षिणावर्त शंख
होते हैं। ऐसे शंख ही दुर्लभ और दक्षिणावर्त माने जाते हैं। हजारों लाखों
शंखों में से एक-दो ही दक्षिणावर्त होते हैं।
शंखों में विशेषकर दक्षिणावर्त शंखों में भी तीन भेद होते हैं।
१. नर शंख, २. मादा शंख, ३. नपुंसक शंख।
इसमें मादा एवं नपुंसक शंख व्यर्थ होते हैं। केवल नर शंख का ही
महात्म्य है। श्याम और धूंएं के रंग के शख शंखली कहलाते हैं।
दक्षिणावर्त शंख ही लक्ष्मी का प्रर्याय माना गया है। यदि ऐसा शंख
मंत्र सिद्ध न हो फिर भी वह घर में हो तो जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई
अभाव नहीं रहता।
दक्षिणावर्त शंख का प्रयोग दीपावली पर होता है। साधक को
चाहिए कि वह इससे पहले ही दक्षिणावर्त शंख प्राप्त कर ले। साधुओं
एवं योगियों के पास से इस प्रकार के शंख प्राप्त हो सकते हैं। नर शंख
६०० रु० में प्राप्त हो जाता है। परन्तु यदि यह शंख इतने रुपये में ही
प्राप्त हो जाता है तो भी सस्ता और अनुकूल ही है।
दीपावली की रात्रि को साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध
वस्त्र धारण कर पश्चिम की तरफ मुंह कर आसन पर बैठ जाए और सामने
चाँदी या कांसी की थाली में कुंकुम से अष्टदल बनाकर उस पर दक्षिणा-
वर्त शंख रख दे। इस शंख का मुंह साधक की तरफ होना चाहिए। उसके
बाद उसे जल से स्नान करवाये। फिर पंचामृत से स्नान करवाये। पुनः
जल से स्नान कराकर सफेद वस्त्र से पोंछ लें। यदि संभव हो तो इस
प्रकार के शंख को सोने में मढ़ा लेना चाहिए।
इसके बाद इस शंख की अक्षत् पुष्प आदि से पूजा करें और सामने
अगरबत्ती और दीपक जलावें।
फिर शंख पर गुलाल एवं इत्र लगावें और उसके सामने नैवेद्य आदि
रखें और निम्न मन्त्र का बराबर उच्चारण करते रहें—

मन्त्र (शंख-ध्यान)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताय लक्ष्मी सहोदराय
चिन्तितार्थ संपादकाय श्री दक्षिणावर्तशंखाय श्रीकराय पूज्याय क्लीं श्रीं ह्रीं
ॐ नमः सर्वाभरणभूषिताय प्रशस्यांगोपांगसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय
कामधेनु-चिन्तामणिनदनिधि रूपाय चतूर्दशनवरत्न परिवृताय अष्टादश-
महासिद्धि सहिताय श्री लक्ष्मीदेंवता श्रीकृष्णदेवकरतललालिताय श्री
शंखमहानिधये नमः।
इस प्रकार ध्यान के करने के बाद साधक को चाहिए कि वह मूल
मन्त्र की १०८ मालाएँ फेरे परन्तु रात्रि को आसन नहीं बदले और न ही
बीच में उठे।

मूल मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभवाय शंखाय
नमः।
प्रातःकाल उठ कर इस शंख को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदें
या किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें।
वस्तुतः जो व्यक्ति भाग्यशाली होते हैं, जिनके जीवन में ही भाग्योदय
होता है, उन्हीं के घर में इस प्रकार का दक्षिणावर्त शंख पाया जाता
है।

प्रभाव

१. इस प्रकार के शंख में जल भरकर रोज मस्तक पर छोड़ने से पाप
का नाश होता है।
२. शंख में जल भर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।
३. पूजन के बाद शंख में दूध आदि भर कर यदि बाँझ स्त्री पिए तो
उसके निश्चय ही सन्तान पैदा होती है।
४. यदि इस प्रकार का शंख घर में होता है तो किसी भी प्रकार का
रोग नहीं होता।
५. यदि इस शंख के सामने नित्य अगरबत्ती जलाई जाए तो उस
व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है।

६. जिसके घर में यह शंख होता है उसके घर में अक्षय भंडार होता
है।
७. यदि इस शंख में पानी भर कर "अमुक वर्शमानाय स्वाहा" २१
बार उच्चारण कर वह जल उस पर डाल दें तो वह निश्चय ही वश में होता
है। इस मंत्र में अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम उच्चारण करना
चाहिए जिसको वश में करना है।
वस्तुत: ये कल्प अत्यन्त गोपनीय एवं महत्वपूर्ण रहें हैं। कुछ सौभाग्य-
शाली ऐसे भी होते हैं जिनके घर में ये पाँचों कल्प सिद्ध किए हुए पाए
जाते हैं। प्रत्येक भारतीय के घर में ऐसे कल्प की अनुकूलता रहती ही है।
यदि साधक इस प्रकार के कल्प सिद्ध न कर सके तो किसी योग्य
पंडित या विद्वान से सिद्ध करवा सकता है।

धन प्राप्ति के सिद्ध प्रयोग

धन का अर्थ मात्र रुपया पैसा ही नहीं होता। गृहस्थ साधक का धन
उसकी कीर्ति, यश-सम्मान सभी कुछ होता है। धन के इस विस्तृत अर्थ को
ध्यान में रखकर इस धन प्राप्ति के कुछ विशेष प्रयोगों पर प्रकाश डाला
है। ये प्रयोग प्रामाणिक और अनुभूत हैं। इसके विधि-विधान सरल हैं,
अत: सामान्य गृहस्थ साधक के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।
जीवन में धन प्राप्त करना कोई बुरा कार्य नहीं है। आवश्यकता इस
बात की है कि जो धन प्राप्त किया जाए वह सही विधि से और समाज की
दृष्टि से उचित कार्यों के द्वारा ही सम्पन्न हो।
प्राचीन काल से लक्ष्मी की पूजा प्रचलित रही है। लक्ष्मी का अर्थ
केवल धन प्राप्त करना ही नहीं है, अपितु जीवन में पूर्ण उन्नति की ओर
सभी प्रकार से भौतिक प्रगति इसी के अन्तर्गत आती है। धन-धान्य, पृथ्वी-
भवन-कीर्ति-आयु-यश-सम्मान-संचित सम्पत्ति, वाहन आदि को भी लक्ष्मी
कहा गया है। अत: लक्ष्मी की उपासना से केवल धन प्राप्ति ही नहीं होती
अपितु अन्य भौतिक सम्पदा भी इसके माध्यम से प्राप्त होती है।
इस लेख में मैं लक्ष्मी से संबंधित कुछ मन्त्र प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ

जो कि अब तक गोपनीय रहे हैं। ये मन्त्र मुझे एक उच्च कोटि के साधक द्वारा प्राप्त हुए थे और मैंने अपने शिष्यों को इस प्रकार की साधनाएँ सिखाई हैं। उन्होंने स्वयं के लिए एवं दूसरों के लिए इस मन्त्र का प्रयोग किया है तथा अपने जीवन में पूर्णत: सफल रहे हैं।

ये मन्त्र और विधियाँ प्रामाणिक हैं तथा इनके माध्यम से कोई भी साधक सफलता प्राप्त कर सकता है। इन प्रयोगों के द्वारा आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि तथा ऋण को समाप्त करने में शीघ्र तथा पूर्ण सफलता प्राप्त होती हैं। ये प्रयोग अनुभूत हैं, श्रेष्ठ हैं, सरल हैं, जिससे कि प्रत्येक गृहस्थ इनका लाभ उठा सकता है।

प्रयोग-१

यह प्रयोग पाँच दिन का है। यह प्रयोग किसी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। दीपावली के दो दिन पूर्व धनतेरस आती है। इस दिन भी इस प्रयोग का प्रारम्भ किया जा सकता है। साधक को चाहिए कि चाँदी की थाली में अष्टदल बनावें। यह अष्टदल चन्दन या कुंकुम से बनाया जा सकता है। इस अष्टदल के ऊपर चावलों से "श्री" अंकित करें। साधक सफेद धोती या सफेद वस्त्र पहनकर बैठना चाहिए। सामने अगरबत्ती व दीपक जलाना चाहिए और यदि संभव हो तो लक्ष्मी की मूर्ति भी रखी जा सकती है। निम्न मन्त्र की १०८ मालाएं नित्य जाप करें।

'ॐ ऐं ह्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै गरुड़ वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।'

जब पाँचवें दिन मालाएँ पूरी हो जाएं जब साधक पाँच कन्याओं को भोजन करावे और उन्हें वस्त्र आदि देकर सन्तुष्ट करे। इस प्रकार यह अनुष्ठान सम्पन्न किया जा सकता है। इससे पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त होता है।

प्रयोग-२

यह प्रयोग धन त्रयोदशी से पाँच दिन आगे तक किया जा सकता है, और इसमें रात्रि को ही मन्त्र जपा जाता है।

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने

हुए दीपक जलाकर उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाएं और नीचे लिखे मन्त्र की सात मालाएँ नित्य फेरें, परन्तु सूर्योदय से पूर्व तीन मालाएँ फेरनी आवश्यक हैं। इस प्रकार रात्रि को नौ बजे तक सात मालाएं फेरें, तथा सवेरे ५ से ७ बजे के बीच तीन मालाएं फेरें, इस प्रकार यह पाँच दिन का प्रयोग है।

मन्त्र

ॐ सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

जब पाँचवें दिन रात्रि को यह जप पूरा हो जाए तब प्रातःकाल कमलगट्टे की १० आहुतियाँ उपरोक्त मन्त्र से दे। ऐसा करने पर उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।

प्रयोग-३

यह प्रयोग भी दीपावली के दिन सम्पन्न किया जाता है और दीपावली की रात्रि को इस मन्त्र की १०८ मालाएँ फेरनी चाहिएं इसमें कमलगट्टे की माला का प्रयोग किया जाता है। साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र स्थापित कर दें और उसकी विधि विधान से पूजा करे। उसे गुलाब का पुष्प व इत्र समर्पित कर दे तथा सामने अगरबत्ती एवं दीपक जलावें।

मन्त्र

ॐ ह्रीं दारिद्रय विनाशने अष्टलक्ष्म्यै ह्रीं नमः ॥

साधक को चाहिए कि जब तक मालाएं पूरी न हो जाएँ तब तक अपने आसन से उठे नहीं। रात्रि को विशेष कर अर्द्ध रात्रि को घुंघरुओं की आवाज आ सकती है या प्रत्यक्ष लक्ष्मी के दर्शन हो सकते हैं। परन्तु उस समय भी साधक सतत् मन्त्र का जाप करता रहे। यदि उसे किसी भी प्रकार की आवाज सुनाई दे तब भी उसका उत्तर न दे, और इस बात का ध्यान रखे कि उसके हाथ से माला न गिरे और न ही मन्त्र जाप बन्द हो।

यह मन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली हैं और कई लोगों ने इस मन्त्र जप से लाभ उठाया है। इसका प्रयोग दीपावली की रात्रि से ही किया जा सकता है।

मन्त्र जप करते समय कमलगट्टे की माला प्रयोग हो, पर ऐसी माला मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त, लक्ष्मी चैतन्य हो। इसके बाद जब कभी भी लक्ष्मी से सम्बंधित मन्त्र जप करें या बाद में भी इस मन्त्र का जप करें तो उसी कमलगट्टे की माला का प्रयोग हो।

अनिष्टनाश के लिए

किसी बुरे शकुन अथवा अशुभ मुहूर्त के उपस्थित होने पर जब किसी कार्य को आरंभ करने में आशंका हो तो गायत्री मंत्र की एक माला का जाप करके वह अमुक कार्य आरंभ किया जा सकता है। विवाह इत्यादिक कार्य में चन्द्रमा, देव गुरू बृहस्पति अथवा सूर्यादि की कोई बाधा बताई जाती हो या विवाह नहीं हो पा रहा हो और अन्य कोई रुकावट हो तो गायत्री का नौ दिन का २४ हजार जप का एक लघु अनुष्ठान कर लिया जाना चाहिए। इससे इस प्रकार की समस्त बाधाएँ शान्त हो जाती है और किसी प्रकार के अनिष्ट का भय नहीं रहता तथा अशुभ मुहूर्त एव अपशकुन का परिहार हो जाता है।

गायत्री मन्त्र

ॐ भू र्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

विरोधियों को अनुकूल बनाना

विरोधी चाहे जितना शक्तिशाली, बलशाली, उच्च पदासीन हो तथा अपने हर कार्य में बाधा ही उपस्थिति कर रहा हो और हर सम्भव प्रयास करने पर भी अनुकूल नहीं हो रहा हो तो उसे अपने अनुकूल बनाने के लिए ३ प्रणव ॐ लगाकर गायत्री का जाप किया जाना उत्तम रहता है। जप काल में इस प्रकार का ध्यान रखा जाना चाहिए कि हमारे मस्तिष्क में से नील वर्ण का विद्युत प्रवाह निकलकर उसके मस्तिष्क में जा रहा है, जिसे

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्या ॥२॥
शं नो अज एक पाद देवो अस्तु शम हिर्बुध्न्यः शं समुद्र ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥३॥
आदित्य रुद्रो वसवो जुषन्तामिदं ब्रह्म क्रियमाण नवीयः ।
शृण्वन्तु नो दिव्य पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ॥४॥
ये देवना ऋत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
तदस्तु मित्रावरुण ते तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ॥५॥
ते नो रासन्तानुरुगायमद्य यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय ॥६॥

वशीकरण मन्त्र

१. 'ॐ चह चटा मल धरति सु ठः ठः स्वाहा ।'

धतूरा फली १, मसाण धून

इन दोनों को लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर इस मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में डालने से उच्चाटन हो जाता है तथा आर्द्रा नक्षत्र में लाल कनेर की ४ अंगुल कील लेकर इस मन्त्र से छः बार अभिमंत्रित कर जिसके घर में डाल दी जावे वह वश में हो जाता है । यह अनुभूत सिद्ध प्रयोग है ।

२. 'ॐ हूँ स्वाहा ।'

मघा नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ चार अंगुल इस मन्त्र से अभिमंत्रित कर जिसके घर में गाड़ दी जाए वह वश में हो जाता है ।

३. 'ॐ सिली चीली स्वाहा ।'

अनुराधा नक्षत्र में सरीष की चार अंगुल की कील इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके जिसके घर में डाल दी जाए वह वशीभूत हो जाता है ।

रक्तस्राव रोकना

'ॐ मातंग राजाय चिलि चिलि मिलि मितवली अमुकस्य (नाम) रक्तं स्तंभय स्तंभय स्वाहा ।'

सफेद रंग के डोरे को इस मन्त्र से २१ बार अभिमंत्रित करें । फिर

उस डोरे को बाँधे तो स्त्रियों का रक्तस्राव रुक जाता है ।

सुखकारक प्रसव

'जरद्रेण कृतं द्वारं इन्द्रेह भ्रुकुटी कृतं भंजती दः कपाटा नि सर्वं मुख सुशोणित हुलु हुलु मुंच स्वाहा ।'

इस मन्त्र से तेल २१ बार अभिमंत्रित करके पेट के ऊपर मालिश करें और पानी मंत्रित करके पिलावें तो सुख से प्रसव होता है ।

घण्टाकर्ण मन्त्र

ॐ ह्रीं घण्टाकर्ण महावीर ! सर्व व्याधि विनाशक ।
विस्फोटकभयान् घोराद् रक्ष रक्ष महाबल ॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वातपित्त कफोद्भवा ॥
तत्र राजभयं नास्ति याति कर्णे जपात्क्षयम् ।
शाकिनीभूत वेताल राक्षसाः प्रभवन्ति नः ॥
नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दंशनम् ।
अग्नि चोर भयं नास्ति ॐ ह्रीं घण्टाकर्ण नमोऽस्तुते ॥

यह घण्टाकर्ण का महामन्त्र भारी चमत्कारिक पाया गया है । इसका प्रत्यक्ष अनुभव मैंने हर बार, बार-बार किया है । भूत-प्रेत पिशाच बाधा में मन्त्र पढ़ते हुए पीड़ित जातक का स्पर्श करने तथा मंत्रित जल पिलाने से सुन्दर-सुखद लाभ होता है । रुग्ण पशु को भी अभिमंत्रित जल पिलाया जा सकता है । मार्ग भय, चोर भय से रक्षार्थ उसका उपयोग किया जा सकता है । यह हमारा पितृ क्रमागत है । पाठक लाभ उठायें ।

स्त्री व शूद्र जातक 'ॐ' कारों की जगह 'ह्रीं' लगाकर पढ़ें । घण्टाकर्ण भगवान् बदरीनारायण के अन्तरङ्ग पार्षद हैं जो अपने कानों में घण्टे लटकाये अन्वर्थ नाम बने भगवान श्रीनारायण के सतत गुणानुवाद घण्टानाद करते रहते हैं ।

मन्त्रों की महिमा बहुत गूढ़ और विस्मयकारी है, जो कार्य नितान्त असंभव प्रतीत होते हैं । मन्त्र साधना के द्वारा वे बहुत ही सरलता से

सम्पन्न हो जाते हैं। आज तो सब कुछ जीवन का हर पहलू भौतिक दृष्टि से देखा परखा जाता है। पर एक युग वह भी था जब देश में सर्वत्र आध्यात्मिक वातावरण था। सब कुछ धर्म, सत्य, न्याय और सदाचार के दृष्टिकोण से किया जाता था। समस्त जीवन नैतिकता से निर्देशित और अध्यात्ममय था। इसका अर्थ यह नहीं कि उस युग में समस्त लोग गृहत्यागी, उदासीन तथा सन्यासी थे। नहीं, वे सब सांसरिक थे। पारिवारिक मायामोह से प्रभावित थे। फिर भी उनमें नैतिक चेतना थी। उनका विवेक जागृत था। लोभ और मोह से परे वे जीवन और जगत के यथार्थ की, सद्र की ओर देखते सोचते थे। मन्त्र साधना, उनकी दिनचर्या का प्रमुख अंग था और वे सोत्साह अध्यात्म का चिन्तन करते थे।

प्राचीन महर्षियों ने स्वानुभव से मन्त्रों का वर्गीकरण करके उन्हें विभिन्न श्रेणियों में विभक्त कर दिया था। ताकि साधक जन सरलता से अपनी समस्याओं का समाधान करें।

यहाँ कुछ अति प्रसिद्ध और प्रभावशाली मन्त्र दिए जा रहे हैं। आप भी किसी योग्य पण्डित पुरोहित से पूछकर किसी शुभ मुहूर्त में यथारुचि कोई एक मंत्र नियमपूर्वक जपना प्रारम्भ कर दें। अवश्य ही उसकी प्रभाव शक्ति आपको चमत्कृत करेगी।

भय निवारण हेतु

राह चलते, अँधेरे-उजाले में, रात को सोते समय स्वप्न में अथवा कहीं भी, किसी भी स्थिति में यदि आप को डर लगता है, आप घबराते हैं, दुष्कल्पनाएं आपको आतंकित करती हैं तो नीचे लिखे मन्त्र का जप करने से आप व्याधिमुक्त हो जायेंगे।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः।

विधि—घर के किसी पवित्र स्थान में हनुमान जी का चित्र लगा दें। लाल फूल और अगरबत्ती तथा दीपक (घी का दीपक) जला कर शान्त चित्त से बैठें और पूर्ण आस्था के साथ उपरोक्त मन्त्र का १०८ जाप करें

और हो सके तो अधिक भी जाप करें। कुछ दिनों में मन्त्र का चमत्कार प्रत्यक्ष हो जाएगा। जप के समय शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जावे।

संकट निवारण तथा शत्रु दमन हेतु

मानव जीवन में अनेक प्रकार की उलझने आती रहती हैं। पड़ोसी के विरोध, विभागीय वैमनस्य, आर्थिक समस्या, व्यवसायिक संकट, पदोन्नति, प्रतियोगता, न्यायालय के वाद, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता जैसे विषयों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए नीचे लिखा मन्त्र परम कल्याणकारी सिद्ध होता है। बगलामुखी देवी का यह मन्त्र भारतीय अध्यात्म का एक महत्वपूर्ण रत्न है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानाय वाचं, मुखं, पदं, स्तम्भाय जिह्वाम्, कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्रीं ॐ।

विधि—एकान्त कमरे को शुद्ध करके लकड़ी के पीठे पर आसन (पीला कपड़ा) बिछाएं और उस पर बगलामुखी देवी का चित्र स्थापित कर दें। पीले फूलों तथा धूप दीप से उसकी पूजा करें, तदुपरान्त उपरोक्त मन्त्र का जाप करें। १०८ बार जाप प्रत्येक दिन, २१ दिन तक करें। जप पूरा हो जाने पर १०८ बार शुद्ध घी की आहुति दें। उपरोक्त मन्त्र से ही आहुति दी जाएगी। साधक को स्वयं भी पूजा के समय पीले वस्त्र धारण करने चाहिएं। आहुति के पश्चात् यथासामर्थ्य ५ या ७ कन्याओं को भोजन कराएं।

यह साधना विभिन्न प्रकार के भौतिक कष्टों, अवरोधों और विघ्नों से साधक की रक्षा करती है।

दरिद्रता निवारक मन्त्र

दरिद्रता सारे दुःखों की जननी है। अर्थ संकट ही सबसे बड़ा संकट है। फिर आज के युग में तो द्रव्य ही जीवन है। अतः नीचे लिखे मन्त्र द्वारा लक्ष्मी को प्रसन्न करके विभिन्न अभावों से मुक्ति पाई जा सकती है। लक्ष्मी की कृपा हो जाने पर अन्य सभी देवी देवता स्वयं ही साधक की रक्षा करते हैं।

मन्त्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद प्रसीद श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

विधि—एकान्त पवित्र कमरे में लक्ष्मी का चित्र लगाकर लाल फूलों से उसकी पूजा करें और धूप दीप अर्पित करके सवा लाख बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करें। चूंकि एक दिन में इतना जप नहीं किया जा सकता है अतः ७ दिन में पूरा कर लें। इस पूजा के लिए कातिक मास विशेष उत्तम रहता है। वैसे तो कभी भी देवी की पूजा की जा सकती है। फिर भी जप का आरम्भ किसी शुभ दिन, शुभ मुहुर्त में ही करें। जितने दिनों में पूजा समाप्त करने का कार्यक्रम हो मन्त्र संख्या को उतने में बराबर विभक्त कर लें और तदनुसार जप पूर्ण करके अन्तिम दिन कुछ हवन और कुमारी कन्याओं को भोजन करवायें। लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्त करने का यह श्रेष्ठ उपाय है।

एक दूसरा मन्त्र भी है—

ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

इसको भी उपरोक्त विधि से जपकर लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्त की जा सकती है। दोनों ही समर्थ और प्रभावशाली मन्त्र हैं। यथा रुचि दोनों में से कोई एक ले सकते हैं।

आकस्मिक दुर्घटना से रक्षा का मन्त्र

आज की राजनीति ने सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न कर दी है। सुरक्षा व्यवस्था दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। मेले बाजार से लेकर दूर की यात्रा तक सर्वत्र अराजक तत्वों की शंका घेरे रहती है। वाहन दुर्घटनाएं भी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही हैं। रेल, मोटर, वायुयान सब अरक्षित हो गए हैं। इनके अलावा कहीं-कहीं शासकीय सेवा कर्मचारी सेना, पुलिस और चुंगी वाले भी कष्टदायक हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में यात्रा पर जाते समय अथवा कहीं भी जा रहे हों, निम्नलिखित दो मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का जप तुरन्त कर दें। संकट टल जाएगा।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। अथवा

श्री कृष्णं शरणं गच्छामि।

विधि—यात्रा में इसे कभी भी, प्रस्थान वेला से ही प्रारम्भ कर दें। जहां तक सम्भव हो जप सकते हैं। वैसे दैनिक दिनचर्या के रूप में नित्य प्रतिदिन स्नानोपरान्त १, ५, १० माला जप लेने से परम लाभ होता है।

मन्त्र

ॐ जूं सः मा पालय सः जूं ॐ।

विधि—जहां भी जैसी भी स्थिति हो इसका जप कर सकते हैं। यदि दैनिक पूजा में इसकी एक माला नित्य जपते रहें तो विशेष लाभ होता है। रक्षाकारी मन्त्रों में यह सर्वश्रेष्ठ है।

रक्षाकारी एवं संकटहरण अन्य मन्त्र

हृषीकेशं भयेषु च।

विधि—भय संताप अस्थिरता शंका आदि के क्षणों में अथवा सामान्य स्थिति में भी इस मन्त्र का जप बहुत सहायता करता है। प्रतिदिन जप करने वालों को कोई त्रास नहीं रहता।

मन्त्र

अन्धकारे तमस्तीव्रे नरसिंहनुस्मरेत्।

विधि—आकस्मिक संकट के क्षणों में अराजक तत्वों अर्थात् दस्युदल या शत्रुदल के मध्य घिर जाने पर उपरोक्त मन्त्र का मानसिक आरम्भ कर दे। संकट टल जाएगा। वैसे इसको सवा लाख जपकर हवन करने से यह स्थाई रूप से लाभकारी होता है।

मन्त्र

अग्निदाहे समुत्पन्ने संस्मरेत जलशायिनम्।

विधि—अनेक प्रकार के संकटों (अग्नि, वृष्टि, चक्रवात या उल्कापात)

या ऐसे ही किसी अन्य प्राकृतिक प्रकोप में पड़ जाने पर इस मन्त्र का जप करने से रक्षा होती है। सामान्य स्थिति में १८००० जप करके हवन करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसको यथा सामर्थ्य कुछ निश्चित संख्या में नित्य जपना चाहिए। संकट के समय कहीं भी १०८ बार जप करें, कष्ट से त्राण मिलेगा।

शाबर मन्त्रों का प्रभाव

शाबर मन्त्रों की महिमा असन्दिग्ध है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

कलि बिलोक जगहित हर गिरजा,
साबर मन्त्र जाज जिन सिरजा,
अनमिल आखर अर्थ न जापू,
प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू।

पाठकों के लाभार्थ यहां कुछ अति प्रसिद्ध सावर मन्त्र प्रस्तुत हैं।

पशु रोग निवारण मन्त्र

ॐ नमो वैंली देहली बांधि, देहलीय राम सारो—सटके पशु नीक हो जाये।

विधि—जहां गौशाला हो वहां जाकर हाथ में कंकड़ लेकर ३ बार मन्त्र पढ़ें। रोगी पशु को स्पर्श कर ७ कंकड़ फेंकें, तीन दिन प्रयोग पर रोगों से मुक्ति मिल जाती है।

अग्नि बुझाने का मन्त्र

ॐ नमो कोरा करवा जल सा भरीयां। ले गौरा के सिर पर धरियां ईश्वर ले गौरा नहाय, जलती अग्नि शीतल हो जाए, शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—यह मन्त्र होली, दीपावली ग्रहण में सिद्ध कर लेना चाहिए।

कीड़ा झाड़ने का मन्त्र

नमो कीड़ा रे तू कुण्ड कुण्डला, लाल लाल पूंछ मुंह काला। मैं तोय पूछूं कहां से आया, मास काटकर सबको खाया।

जब तू जाकर भस्म हो जाए, श्री सतगुरु जी करे सहाय।

विधि—नीम की डाली लेकर जहां कीड़े पड़ गए हों वहां ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ दो, कीड़े झड़ जायेंगे। मन्त्र ग्रहण, होली, दीपावली पर सिद्ध करना आवश्यक है।

नजर झाड़ने का मन्त्र

गुरु चरण दिया मन, श्री हरि मोक्ष कारण, देव दानव दैत्यादि, वाई नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई आलाली पालाली चोटी चोटी हुंकारे फूंकारि उड़ाव मारी शलि लेकर पांव पांव टुकरियां जाए, अनुकार अंगे, डाईनिर दृष्टि, पलायकरा अक्षा वीर नरा सिंह आज्ञा।

विधि—सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, दीपावली, होली में सिद्ध करके इस मन्त्र के झाड़ने का विधान है।

आधा शीशी मन्त्र

शनिवार को रात्रि में खोये की बनी मिठाई में चने के बराबर कपूर को पीसकर मिला दें। किसी पात्र में ढककर रख दें। प्रातः रविवार को सूर्योदय पूर्व निम्न मंत्र को सात बार पढ़कर सोए हुए रोगी को जगाकर खिला दो। आधा शीशी ठीक हो जाएगी।

ॐ नमो अधक पारी हूं हुंकारी पहर पचारा मुख मूंद पाटले डारी अमुका के शीशी रहे, मुख मोहेश्वरी की आज्ञा फुरे ॐ ठं ठं स्वाहा।

सर्प कीलने का मन्त्र

बजरी बजरी वजर किवाड़ बजरी कीलु आसपास मरे सांप होय खाक मेरा कीला पत्थर कील पत्थर फूटे पर कीला न छूटे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, ईश्वरो वाचा।

विधि—शिवरात्रि के दिन इसको जपना शुरु कर दें। इसको एक वर्ष तक बराबर अढ़ाई पहर तक जपें, सिद्धि होने पर अरने गोबर की राख ऊपर लेकर लिखे मन्त्र को सात बार पढ़ें और सर्प के ऊपर डाल दें तो सर्प का कीलन हो जाएगा।

मदारी पछाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो गदाधारी हनुमान वीर स्वामी भास्कर का तेज बैरी का शरीर महर्षि चक्र मातृ कालिका चलाया चलो बैरी न कर बैरी न कर बैरी करी हो तेरे जीव को घात में न डरूं, तेरे गुरु पीर से मारूं, तुझे एक ही तीर से मारूं, मेरा मारा एकसक घूमें जैसे भूजगी सर्प की लहर परे तोहि शीघ्र मारू बाण फेरे चले तो गुरु गोरखनाथ की आन।

विधि—उड़द के ७ दाने लेकर सात बार ऊपर के मन्त्र को पढ़कर मदारी को मारें, मदारी पछाड़ खाकर जमीन पर गिरेगा।

प्लीहा दमन मन्त्र

कोखा का पूरा कोखा मारकर बहा दूं मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मन्त्र ईश्वर वाचा।

प्लीहा वाले को सामने बिठाकर चाक खोलकर पृथ्वी पर लकीर करें, करते रहे। होलिका, दीपमालिका, ग्रहणादि में १, २ माला जपने से ही सिद्ध हो जाता है।

पागल कुत्ता, सियार विषनाशक मन्त्र

दोहाई मानसा दे वीरदोहाई वीर माता विष रात नींद आवो आ सैर थने मन सार महामन्त्रे अमुकेर अगेर अमुकेर विष से दो पैई काला से तर से दो।

विधि— एक साफ कांसे की थाली पीठ पर रखकर तीन बार मन्त्र पढ़ो। विष होगा तो थाली चिपक जाएगी। विष न होने पर थाली नहीं चिपकेगी। जब विष निकल जाएगा थाली जमीन पर गिर जाएगी।

१. अन्य मंत्र क्लीं देव की सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहिमे तनय कृष्ण त्वामहाम् शरणं गतः।

२. कौशल्या सश्रुवेयेन पुत्रणा मित तेजसाः यथा वरेण देवनामि युक्त वज्र पाणिना।

विधि—इनमें से किसी मन्त्र का सवा लाख जप स्वयं करें या किसी विद्वान से करवाए और खीर घी दशात हवन करें और हवन दशांत से तर्पण

और उसके दशांश से मार्जन की दशांश संख्या में भोजन करावें। संतान अवश्य होगी। परन्तु यह ध्यान रखना जरूरी है कि कार्य भक्ति श्रद्धा से कराया जाए।

प्रसव शीघ्र व सुखमय होने का मन्त्र

अस्ति गोदावरी तीरे जम्भाका नाम राक्षसी। तस्या स्मरेण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्॥

विधि—उपरोक्त मन्त्र चक्रव्यूह तथा अर्जुन के दस नाम कांसे की थाली पर लिखकर धूप दें। तत्पश्चात् गर्भिणी को दिखा दें। प्रसव शीघ्र होगा।

आकस्मिक दुर्घटना से बचने का मन्त्र

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि विनाशनम्। विष्णु पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

विधि—विष्णु की मूर्ति का विधिवत् पूजन कर उपरोक्त मन्त्र से तीन बार चरणोदक लें। आकस्मिक दुर्घटना का भय नहीं रहता।

तीन मास में ही धन लाभ

धन प्राप्ति के लिए कुबेर मन्त्र ॐ यक्षाम कुबेराय वैश्रवणाय, धन धान्य धिपतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा॥

विधि—इस मन्त्र को १०८ बार जपने से तीन मास में ही लाभ होता है।

महालक्ष्मी मन्त्र (अक्षय भंडार)

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः।

विधि—शुभ तिथि व शुभ दिन प्रातः जप करना प्रारम्भ कर दें। कम से कम ११०० जप तो अवश्य ही करें।

भविष्यवाणी सिद्धि मन्त्र

ॐ गणेश देवि वाग देवी मम वाक्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त मे प्रातः बेला में जप प्रारम्भ करें। जप संख्या ११०० हो।

शुभाशुभ शकुनों को जानिए और लाभ उठाइए

यात्रा के समय शुभाशुभ शकुनों की ओर ध्यान देने की प्रथा हमारे देश में प्राचीन काल से चली आ रही है। यहां मैं यात्राकाल के कुछ शकुनों के फलों का उल्लेख कर रहा हूं पाठक इसे समझकर अधिक-से-अधिक लाभ उठाएं।

मंगल पदार्थों के शकुन—प्रस्थान के समय यदि सामने जल से पूर्ण मंगल घट दिखाई दे तो यात्रा सफल होती है।

प्रस्थान के समय दाएं भाग में दो मछली, ध्वजा, पताका, छत्र, कलश, अलंकार, आभूषण, शहद, चंदन, फल, केशर, पानी, रत्न, स्वर्ण, आसन, पुष्प, माला, दूर्वा, चंवर, मुकुट, मिट्टी, शंख, चावल, सरसों, लड्डू, दही, मास, घंटा, शस्त्र, वस्त्र, अंकुश तथा ताम्बूल दिखाई दें तो उसे शुभ समझना चाहिए।

बैल सम्बन्धी शकुन—यात्रा के समय रस्सी से युक्त बैल सामने से आता दिखाई दे तो विजय प्राप्त होती है।

यात्रा के समय बैल अपने बायें सींग या बायें पांव से पृथ्वी खोदता हुआ दिखाई दे तो सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

यात्रा के समय बैल का दाईं ओर मुंह किए खड़े दिखाई देना शुभ होता है। बाईं ओर अशुभ होता है।

सर्प का शकुन—यात्रा के समय धामन जाति का सर्प अपना फन ऊंचा किए हुए अथवा बाईं ओर को जाता हुआ दिखाई दे तो शुभ जानना चाहिए।

यात्रा के समय केवल फन उठाए हुए सर्प बाईं और दाईं ओर को जाता हुआ दिखाई दे तो भोजन प्राप्त होता है।

यात्रा में दो सर्पों को एक साथ जाते देखना या लड़ते देखना अशुभ माना गया है।

चूहा तथा अन्य सरीसृपों का शकुन—यात्रा के समय चूहा पथिक के बाएं भाग में हो और प्रसन्न होकर शब्द कर रहा हो तो शुभ होता है।

यात्रा के समय नेवला दिखाई दे तो उसे अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

यात्रा के समय कनखजूरा बाईं ओर हो तो शुभ और दाएं हो तो अशुभ माना जाता है, कलेशकारक होता है।

मुर्गी का शकुन—प्रस्थान करते समय यदि मुर्गी दाईं ओर दिखाई दे अथवा बोले तो यह शुभ होता है।

प्रस्थान के समय यदि मुर्गा मुर्गी के साथ क्रीड़ा करता हुआ दिखाई दे तो यात्रा शुभ होती है।

पक्षी शकुन—यात्रा के समय पोद की चिड़िया प्रसन्न दिखाई दे तो यात्रा शुभ समझनी चाहिए।

यात्रा के समय खंजन पक्षी दाईं ओर को दिखाई दे तो अत्यन्त सुख प्राप्त होता है।

यात्रा के समय टिटहरी दाईं ओर को बोले तो लाभ होता है। बाईं ओर को बोले तो अशभ समझना चाहिए।

यात्रा के समय सांप का जोड़ा दिखाई दे और वह शब्द कर रहा हो तो धन-सुख, पुत्र-सुख, कल्याण की प्राप्ति होती है।

मोर का शकुन—यात्रा के समय मोर नृत्य करता हुआ दिखाई देता है तो सुख चैन प्राप्त होता है।

यात्रा के समय मोर का शब्द निरन्तर सुनाई देता रहे तो कल्याण होता है।

यात्रा के समय मोर का शब्द केवल एक बार सुनाई दे तो सुख, तीन बार सुनाई दे तो धन-सम्मान एवं पांच बार सुनाई दे तो अत्यन्त सुख एवं कल्याण का लाभ होता है।

शकुन आपके भविष्य सूचक होते हैं

कुत्ते का शकुन—यात्रा के समय यदि कुत्ता अपने मुंह मे हाड़-मांस, रोटी अथवा अन्य कोई आहार लिए हुए सामने दिखाई दे तो यात्रा सफल होती है। पथिक की मनोकामना पूर्ण होती है।

कौआ सम्बन्धी शकुन—यदि कौआ किसी दरिद्र स्त्री अथवा पुरुष के मस्तक पर आ बैठे तो उसे श्रेष्ठ लाभ कराता है। परन्तु अन्य कुछ विद्वानों के मतानुसार कौए का मस्तक पर बैठना शुभ नही होता।

साधु सन्यासी शकुन—यदि यात्रा के समय कोई दण्डी सन्यासी, बैरागी, जोगी, फकीर अथवा जटाधारी साधु सामने आ पहुचे तो यात्रा निष्फल हो जाती है।

ध्वनि सम्बन्धी शकुन—यदि घर से निकलते समय षड्ज, ऋषभ और गोचर इन तीनों में से कोई सुनाई दे तो शुभ समझना चाहिए।

यदि यात्रा आरम्भ करते समय वेद ध्वनि, शास्त्र ध्वनि, मांगलिक गीत की मनोरम ध्वनि, देव मन्दिर से आरती अथवा घण्टा, बादल की ध्वनि, नृत्य की ध्वनि, मनोरम वाद्य यन्त्रों की ध्वनि अथवा मन में प्रसन्नता भरने वाली कोई अन्य ध्वनि सुनाई दे तो उसे यात्रा की सफलता का सूचक समझना चाहिए।

अन्य शकुन—यदि प्रस्थान के समय कोई सधवा स्त्री अपनी गोद में बालक को लिए हुए सामने आ जाए तो उसे अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

मनुष्य का शकुन—प्रस्थान के समय कोई प्रसन्न मुख व्यक्ति सामने दिखाई दे तो यात्रा शुभ होती है।

प्रस्थान के समय कोई पुरुष हाथ में हरी पताका, गन्ना अथवा कमल पुष्प सामने लिए दिखाई दे तो उसे कार्य सिद्धि का सूचक समझना चाहिए।

हाथी का शकुन—यात्रा के समय मन्द चाल से चलता हुआ हाथी सामने से बढ़ता हुआ दिखाई दे तो उसे अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

यात्रा के समय हाथी किसी वृक्ष अथवा दण्ड को उखाड़ता हुआ दिखाई दे तो विजय लाभ होता है।

यात्रा काल में हाथी तीव्र चाल से चलता हुआ दिखाई दे तो विजय प्राप्त होती है।

यात्रा काल में ऐसा हाथी दिखाई दे जिसके बाएं दांत का मध्य भाग टूटा हुआ दिखाई दे तो शत्रुओं का नाश करने वाला सिद्ध होता है।

घड़े का शकुन—घर से निकलते समय यदि पानी से भरा हुआ घड़ा दिखाई दे तो पूर्ण शुभ का सूचक होता है।

यदि पानी से भरे हुए दो घड़े एक साथ मिलें तो अत्युत्तम फल प्राप्त होता है।

यदि यात्रा के सामने खाली घड़ा अथवा कोई अन्य जल-पात्र दिखाई दे तो लाभ के स्थान पर हानि होती है अतः यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए।

विशेष स्वप्नों के विशेष फल

स्वप्न में देवी का दिखाई देना प्रयोग में सफलता का सूचक होता है।

स्वप्न में देवी किसी को अपनी गोद में लेकर ताज पहनती हुई दिखाई दे तो दृष्टा के यश तथा पद में वृद्धि होती है।

स्वप्न में देवता का दिखाई देना लाभ एवं सफलता का सूचक होता है।

विद्यालय—यदि विद्यालय में जाने का स्वप्न दिखाई दे तो वह जातक के श्रेष्ठ चरित्र का परिचायक होता है।

विद्यालय से भाग आने का स्वप्न दिखाई दे तो अच्छा तथा जातक की सर्वतोमुखी सफलता का सूचक होता है।

चीता—स्वप्न में चीते का दिखाई देना जातक की सफलता के मार्ग में कठिनाइयों का सूचक होता है।

यदि स्वप्न में चीता जातक पर हमला करते हुए दिखाई देता है तो जातक पर कठिनाइयां शीघ्र बढ़ जाती हैं।

यदि स्वप्न में चीता किसी दूसरे व्यक्ति पर आक्रमण करता हुआ दिखाई दे तो जातक किसी गंभीर दुर्घटना के कारण बड़े संकट में पड़ता है।

ढोलक—यदि स्वप्न में कुमारी स्त्री स्वयं को ढोलक बजाती हुई देखे तो उसका विवाह शीघ्र ही हो जाता है।

यदि कोई व्यक्ति स्वप्न में अपने घर पर ढोल बजता हुआ देखे तो उसके परिवार में पुत्र का जन्म होता है।

यदि कोई किसी उत्सव में स्वयं को ढोल बजाता हुए देखे तो उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मशीन—यदि स्वप्न में पंचिंग मशीन दिखाई दे तो दृष्टा को कोई उच्च पद प्राप्त होता है।

रहस्यमय सिद्धियां छिपी हुई हैं। लुप्तप्रायः घण्टाकर्ण महामंत्र असाध्य कार्यों को पूर्ण करने की क्षमता वाला, शीघ्र फलप्रद और अद्भुत एवं चमत्कार पूर्ण सिद्धियों का आगार है। शत्रुदमन, विवाद में विजय, चोरी, राज भय, अग्नि भय एवं आकस्मिक दुर्घटना आदि में तथा रक्षा-कार्यों के लिए इसका प्रयोग अमोघ एवं अचूक माना गया है। धन सम्पत्ति प्रदान करने के लिए भी इसके विविध गुह्यातिगुह्य काम्य प्रयोग तांत्रिकों द्वारा किए जाते रहे हैं। जिनमें से कुछ मंत्र एवं यंत्रों का उल्लेख इस लेख में किया जाएगा।

प्रयोग के लिए इच्छुक साधनों का पहले चन्द्रबल देखकर गुरु या रविपुष्य, अमृत सिद्धि योग अथवा सर्वार्थ सिद्धियोग में पुरश्चरण करके इस महामंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। बाद में कार्य साधना के लिए प्रयोग में लाने से ही पूर्ण फल की प्राप्ति होना सुलभ होता है। मूल मंत्र इस प्रकार है—

घंटाकर्ण मंत्र

ॐ घंटकर्णो महावीर सर्व व्याधि विनाशकः।
विस्फोटक भयं प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबलः॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव लिखितोक्षर पंक्तिभिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वातपित्तकफोद् भवाः॥
तत्र राजभय नास्ति यान्ति कर्णे जमात्क्षयम्।
शाकिनी भूतवेताला राक्षसा प्रभवन्ति नो॥
नाकाले मरणं तस्य न च स्पर्ण दश्यते।
अग्नि चौर भयं नास्ति ॐ ह्रीं श्री घंटाकर्ण।
नमोस्तुते। ॐ नरवीर। ठः ठः ठः स्वाहा॥

इस मंत्र को सिद्ध करने पर केवल २१ बार जपने से राज भय, अग्नि, सर्प, चोर आदि का भय दूर हो जाता है। भूत प्रेम बाधा शान्त होती है। मोर की पंख से झाड़ा देने पर वात, पित्त तथा कफ सम्बन्धी सभी व्याधियों का उपचार होता है।

व्यापार-सिद्धि-प्रयोग—इस घंटाकर्ण महामंत्र को व्यापार सिद्धि

हेतु भी उपयोग में लाया जाता है। शुभ मुहूर्त व बलिष्ठ चन्द्रमा से प्रारम्भ करके २१ दिन तक नित्य २१ पाठ महामंत्र का करके आम की पट्टी पर अबीर डाल कर १०८ बार नीचे लिखे व्यापार सिद्धि यंत्र को लिखें—

२२	२४	१	१८	१०
३	२०	७	२४	११
६	२१	१३	५	१७
१५	२	१९	९	२३
१६	८	२५	१२	४

मूलार्क या पुष्यार्क में दुकान के द्वार के नीचे मिट्टी के पात्र में सुपारी, मौली, मधु, सिन्दूर डाल कर अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखा हुआ व्यापार सिद्धि यंत्र गढ़ा खोद कर बन्द कर दे। उसके बाद उक्त दुकान में बैठकर निम्न मंत्र का १२५०० जप करें—

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं घंटाकर्णो महावीर।
सर्वं व्याधि विनाशकः।
ऋद्धि. वृद्धि लाभं, सुखं
कुरू कुरू स्वाहा॥

यह प्रयोग कई व्यापारीगणों द्वारा किया जा चुका है। सभी ने अपने-अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए इसे पूर्ण लाभप्रद बतलाया है।

महाप्रभाविक घंटाकर्ण यन्त्र—इस प्रकार के अनेक यंत्र एवं प्रयोग

प्राचीन तांत्रिक ग्रन्थों में मिलते हैं, उसमें एक और महाप्रभाविक यंत्र का यहाँ वर्णन किया जावेगा। इस नीचे लिखे यंत्र को भी ऊपर बतलाई गई विधि से २१ दिन तक घंटाकर्ण मंत्र के २१ पाठ नित्य करते हुए यंत्र को १०८ बार लिखना चाहिए।

३३९	३३२	३३७
३३४	३३६	३३८
३३५	३४०	३३३

इसके पश्चात् यंत्र को दुकान या मकान के द्वार के नीचे गाड़ कर नीचे लिखे मंत्र का १२५०० बार जप करना चाहिए—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महावीर, घंटाकर्ण महाबलः।
शान्ति तुष्टि च पुष्टि च, कुरू स्वाहा महाश्रियम् ॥
त्वान्नामाक्षर मन्त्रस्य, यंत्र रूपेण तिष्ठसि ।
तत्रशान्तिमहातुष्टि, पुष्टिश्च जायते ध्रुवम ॥

इन सब सिद्ध मंत्रों को वांछित एवं व्यवहारिक प्रयोग में लाकर इच्छुक साधकों को लाभान्वित होना चाहिए।

लक्ष्मीदायी कुछ प्रयोग

जब भी कोई कार्य सिद्ध नहीं होता हो, व्यवसाय में हानि हो रही हो या कोई व्यवसाय विशेष जम नहीं रहा हो, अर्थाभाव से आप कष्ट पा

रहे हों, किसी क्रूर ग्रह का विशेष प्रकोप हो, शत्रु पीड़ा अथवा साझेदार बार-बार धोखा देने का प्रयास कर रहे हों, ऐसी अवस्था में निम्न मन्त्र के सवा लाख जाप पूर्ण कर दशवांश यज्ञ होने पर मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। मन्त्र का आरम्भ शुभ मुहूर्त में एवं जप प्रातःकाल पूर्वाभिमुख बैठकर नियमित रूप से करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ सर्वेश्वराय सर्व विघ्न विनाशनाय मधुसूदनाय स्वाहा।

मन्त्र

ॐ सं सां सि सीं सुं सूं सें सैं सों सौं सं सः वं वां वि वीं वुं वूं वों वौ वं वः हः सः अमृत वर्च्चे से स्वाहा।

शत्रु पीड़ा दे। व्यवसाय में साझेदार विरोधी हो जाएं अथवा धोखा दें, कोई इच्छानुकूल कार्य न हो रहा हो, ऐसी स्थिति में उपरोक्त मन्त्र के जाप शुद्ध चित्त से, पूर्ण विश्वास के साथ २१ हजार जप करें। शुभ मुहूर्त में मन्त्र जाप आरम्भ कर दें। शुक्ल पक्ष को प्रधानता देते हुए चन्द्रमा का विशेष ध्यान रखें। २१ हजार जाप पूर्ण होने पर १/१० दशवांश हवन करें। ऐसा करने पर समस्त अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं। शत्रु मित्र बन जाते हैं।

जैन साहित्य में लोगस्स कल्प का सर्वाधिक महत्व है। कुछ समय पूर्व स्थानीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में पढ़ने से उद्देश्य लक्ष्य हो गया वहीं पर लोगस्स से सम्बन्धित पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। पाठकों के लिए वही प्रयोग दे रहा हूं। २४ तीर्थंकरों की स्तुति की गई है। यह दैहिक, भौतिक, आत्मिक, मानसिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, लौकिक, पारलौकिक ऐश्वर्य देने में समर्थ है—

मन्त्र

ऐं ॐ ह्रीं श्रीं ऐं लोगस्स उज्जोयरे धम्म तित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्त इस्स चउवीसं पिकेवली मम मनोलिष्टि कुरु कुरु ॐ स्वाहा।

साधन—प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त हो स्नानादि कर धुले वस्त्र धारण कर, पूर्वाभिमुख खड़े होकर १०८ बार उक्त मन्त्र का शान्ति, धैर्य व

आनन्द मग्न हो जाप करें, ऐसा निरन्तर १४ दिन तक करें। एक समय शुद्ध, हल्का, शाकाहारी भोजन करें व ब्रह्मचर्य का पालन करें। ऐसा करने पर राज्य पक्ष से भय, चोर भय दूर होते हैं। ऐश्वर्य वृद्धि, अष्ट-सिद्धि, नव-निधि की प्राप्ति, व्यवसाय में वृद्धि, धर्म-कर्म में इच्छा बलवती होती है। समस्त कष्टों से छुटकारा मिल जाता है।

गणेश प्रयोग

भगवान गणेश जी की पूजा समस्त मंगल कार्यों में की जाती है। वे विघ्न विनायक, ऋद्धि, सिद्धि के दाता, स्वामी, वैभवदाता, विद्या और ज्ञान की वृद्धि करने वाले तथा संकटनाशक हैं। देवता भी उनका पूजन करते हैं। तंत्र शास्त्र में गणेश जी की महिमा बड़े विस्तार से वर्णित है। शंकर पार्वती के पुत्र गणेशजी अपने भक्त का दुःख दारिद्रय और अज्ञान अमंगल के निवारण करने में सर्वप्रथम और शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवता माने जाते हैं। हजारों व्यक्तियों का अनुभव है कि श्रद्धापूर्वक किसी भी रूप में गणेश जी की पूजा की जाए, वह निश्चित रूप से कल्याणकारी होती है।

सामान्यतः गणेशजी की मूर्ति की पूजा की जाती है। कारण यह है कि यह सरल होती है एवं प्रत्येक व्यक्ति सरलता से कर सकता है। मन्त्र जप, स्तोत्र पाठ, मूर्तिदर्शन, ध्यान, आरती, पूजा आदि सहज क्रियाएं हैं। सामान्यतः भक्तजन इन्हीं विधियों से गणेशजी की पूजा अर्चना करते हैं। परन्तु यदि कुछ अधिक समय तक मानसिक संयम के साथ कोई व्यक्ति गणेशजी का यन्त्र बनाकर पूजा करे तो आश्चर्यजनक परिणाम निकलते हैं। गणेश यंत्र की साधनाओं से समस्त सद्इच्छाओं की पूर्ति होती है। तन, मन, धन का सारा क्लेश मिट जाता है। गणेश यन्त्र की महिमा इस प्रकार कही जाती है—

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।

अतः सर्वसाधारण के हितार्थ गणेश यन्त्र का विधान प्रस्तुत कर रहा हूं। ध्यान में रखने की बात है कि प्राचीन ग्रंथों में इस प्रकार की मन्त्र साधना में कहीं-कहीं प्रयोग भेद भी है, अतः साधक को किसी भ्रम में न पड़कर अत्यधिक मान्य पद्धति का ही अनुसरण करना चाहिए। नीचे गणेश

यन्त्र की एक बहुप्रचलित और सरल पद्धति लिखी जा रही है:

तांबे के मोटे पत्तर पर अथवा भोज-पत्र पर अष्ट गंध से गणेश यंत्र की रचना करें। ताम्रपत्र पर इसे खुदवाया जा सकता है। यदि अक्षर उभरे हों तो अति उत्तम है। यंत्र निर्माण के लिए किसी से शुभ मुहूर्त पूछ लेना चाहिये। वैसे किसी भी गणेश चतुर्थी के दिन गणेश यंत्र की रचना की जा सकती है। यंत्र बन जाने पर गणेश चतुर्थी के दिन ही उसकी पूजा प्रारम्भ कर देनी चाहिए।

सर्वप्रथम यंत्र को गंगाजल अथवा पंचामृत से स्नान करवाएं। तदुपरान्त आसन पर लाल वस्त्र बिछाकर उसे स्थापित कर दें। लाल चन्दन, लाल पुष्प से पूजा करके धूप दीप दें फिर गुड़ मोदक का नैवेद्य स्थापित करें। इस सारी क्रिया में यह मन्त्र बराबर स्थापित कर देना चाहिए।

श्री गणेशाय नमः

यदि यन्त्र रचना में अधिक समय लगे तो उसे बनाने का कार्य गणेश चतुर्थी के दिन प्रारम्भ करके जब तक पूरा यन्त्र तैयार न हो जाए बराबर करते रहना चाहिये। यन्त्र बन जाने पर अगली गणेश चतुर्थी के दिन प्रातः काल स्नान करें। विधिवत् उसकी साधना आरम्भ कर देनी चाहिए।

नैवेद्य अर्पित करने के बाद यन्त्र को प्रणाम करके रुद्राक्ष अथवा लाल चन्दन की माला पर आगे लिखे मन्त्र का जाप करना चाहिये। जप के पूर्व ध्यान करना आवश्यक है। तदुपरान्त मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिए। हो सके तो अधिक ही करना चाहिये। यदि नियमित रूप से एक माला भी जप करें तो एक वर्ष में गणेश जी की कृपा हो जाती है। वैसे एक लाख मन्त्र जप का संकल्प करके और जिस दिन एक लाख जप पूरा हो जाये, उसी दिन १०८ बार हवन करें तथा पांच कुमारी कन्याओं को भोजन करायें तो यन्त्र साधना सफल हो जाती है।

मंत्र जप के पूर्व इस श्लोक को पढ़ते हुये गणेश जी का ध्यान करना चाहिये।

गजाननं भूत गणादि सेवितं
कपित्थ जम्बु फल चारु भक्षणम्
उमा सुत शोक विनाश कारकं
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।

जप का मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ गं गणपतये नमः

प्रतिदिन जप समाप्त होने पर यह श्लोक पढ़कर यन्त्र को प्रणाम करना चाहिये।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभम्।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥
सर्व विघ्न विनाशाय सर्व कल्याण हेतवे।
पार्वति प्रिय पुत्राय गणेशायनमो नमः ॥

विशेष—साधना काल में ब्रह्मचर्य का पालन विशेष रूप से करना चाहिये। निरन्तर गणेश जी का ध्यान और आस्तिक विचार करना आवश्यक है। सामान्य रूप से भी यदि कोई व्यक्ति गणेश यन्त्र की रचना करके १०८ बार मन्त्र जपे तो उसे संकटों से मुक्ति मिल जाती है। फिर यदि दैनिक पूजा और जप भी होता रहे, तब क्या कहना है। भगवान गणपति अपने भक्त को ज्ञान, सुख-समृद्धि, सम्पदा सभी कुछ प्रदान करते हैं।

मन्त्र

ॐ क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं उस भमजियं च वंदे, सम्भव मभिणं दणं सुमई पउमप्पह सु पोस जिणं च चंदप्पह वंदे स्वाहा।

इस मन्त्र का जाप मौन रहकर किया जाना चाहिये तथा प्रातःकाल स्नानादि कर पूजा के वस्त्र पहिन उत्तर की ओर मुंह करके १०८ बार पद्मासन में बैठकर जाप करें। यह जाप शुभ मुहूर्त में ही प्रारम्भ किया जाना चाहिए तथा निरन्तर सात दिन तक यह प्रयोग करने पर सिद्धि प्राप्त होती है। भोजन में दूध, दही, मट्ठा, चावल, दूध का खोआ आदि लें तथा शुद्ध सात्विक एक ही वार भोजन करें। भूमि शयन करें, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें एवं शुद्ध सत्य भाषण करें।

ऐसा करने पर धन वृद्धि, ऐश्वर्य लाभ, सर्वानन्द, ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है। मनोच्छा पूर्ण एवं रुका हुआ, खोया या गया हुआ धन पुनः प्राप्त होता है।

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्याधिपतये धन धान्य समृद्धि में देहि दापय स्वाहा।

१०८ बार नित्य तीन माह तक जपने से आशातीत लाभ होता है।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

शुभ तिथि व शुभ दिन प्रातः जप करना प्रारम्भ करें। कम-से-कम ग्यारह हजार मन्त्र जाप अवश्य करें।

मन्त्रों में जो अंक लिखे रहते हैं वे अंक किसी विशिष्ट देवता अथवा मन्त्र विशेष के सांकेतिक चिन्ह होते हैं। यन्त्रों की उत्पत्ति शिव के ताण्डव नृत्य से मानी जाती है। मुस्लिम मन्त्र शास्त्र में एक यन्त्र १५ का है, जिसके साथ मन्त्र भी है, जिसकी प्रथम पंक्ति में ६।७।२ द्वितीय में १।५।९ और तृतीय में ८।३।४। प्रथम पंक्ति के प्रथम कोष्ठक में या बुदह द्वितीय में या जा की तृतीय कोष्ठक में या बुदह, द्वितीय पंक्ति के प्रथम कोष्ठक में १ या अल्ला ५ या हादी ९ या ताहर, तृतीय पंक्ति में ८ या हलीम ३ या जी भी, ४ या दावम लिखें।

जैन धर्म में १५ का यन्त्र पद्मावती गजब का धनदायक, ऐश्वर्यदायक, सिद्धिदायक यन्त्र है। चाहे जन्मपत्री में दारिद्रय योग भी क्यों न हो, चाहे जातक महाकंगाल भी क्यों न हो, धन हानि योग हो, ऐसी स्थिति में भी यह यन्त्र अटूट धन प्रदान करता है, ऐश्वर्य प्रदान करता है।

चंद्र बल देखकर अति उत्तम मुहूर्त देख लें, उस दिन त्रिलोह के पत्र पर मन्त्र उत्कीर्ण करवा लें। त्रिलोह के पत्र में स्वर्ण एक रत्ती, चांदी दो भाग व तांबे का भाग सर्वाधिक हो। यन्त्र के धातु का तोल सवा तोले के लगभग हो। इस यन्त्र को ५ दिन गंगाजल में डूबा रहने दें। शनिवार, सोमवार या रविवार तक। मंगल को प्रातः स्नानादि कर धुले वस्त्र पहनें, पूर्ण श्रद्धा व विश्वास के साथ यन्त्र को जल में से निकालकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ चौकी पर स्थिर करें। वह जल कुएं या जलाशय में विसर्जित कर दें। फिर अबीर, गुलाल, कुंकुम मौली, लाल कनेर पुष्प, घी का दीपक जलायें, मिश्री युक्त दूध से भोग लगाएं। धूप, दीप कर आरती करें। इस समस्त क्रिया काल में मन्त्र जाप निरन्तर रहे।

इसके उपरान्त प्रवाल की माला, प्रवाल के अभाव में चन्दन की

माला से १००० बार, समयाभाव होने पर १०८ बार मन्त्र जाप करें। सायंकाल पूजन करें, मंगलवार का व्रत रखें, मंगलवार को किसी देवी के मन्दिर में जा देव दर्शन करें। अवश्य ही छः माह बीतते-बीतते फल प्राप्त होने लगेगा। यश, मान, ऐश्वर्य मिलता है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहिनी सर्वकार्य करणी मम विकट संकट संहारिणी मम महामनोरथ पूरणी मम सर्व चिन्ता चूरणी ॐ पद्मावती नमः स्वाहा।

दोपहर को पीपल के पत्ते, घृत का दीपक तैयार कर लें। शुभ मुहूर्त के दिन रात्रि काल में ठीक बारह बजे घृत का दीपक जलाकर, पीपल के २१ पत्रों का आसन बनाकर उस पर पूर्वाभिमुख बैठ नित्य ११ हजार जप करें। ऐसा निरन्तर ४१ दिन तक करें। यकायक धनोपार्जन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

मंत्र

ॐ ठूं ट्रूं फट् फट् ऐं ह्रीं श्रीं धन देहि ह्रौं स्वाहा।

महत्वाकांक्षा, इच्छा, जिज्ञासापूर्ति, अभिलाषापूर्ति, मनोरथ सिद्धि के लिए यह एक अमोघ मन्त्र है। बालक, छात्र, मध्यम वर्गीय, व्यवसायी, सेठ, साहूकार, ज्योतिषी, राजनीतिज्ञ, नेता, वकील, इन्जीनियर, डॉक्टर, नौकरी पेशा, अधिकारी, शिक्षक तात्पर्य यह कि हर व्यक्ति के हृदय में कुछ इच्छाएँ, अभिलाषाएँ अवश्य होती हैं। इनकी पूर्ति घण्टाकर्ण द्वारा सम्भव है। श्रद्धा व भक्तिपूर्वक नित्य धूप-दीप, दर्शन, वंदना कर नियमपूर्वक निम्न मन्त्र की ११ माला का जाप करने से अपने-अपने अभीष्ट कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं घण्टाकर्णो नमोऽस्तुते ठः ठः ठः स्वाहा।

प्रत्येक माह में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को लाल कनेर के पुष्प, सुगंधित अन्य पुष्प, हार, इत्र, नारियल, पेड़े, श्वेत वस्त्र चढ़ाएँ।

धनदा देवी भी आद्यशक्ति का ही एक रूप है। प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों

में धनदा देवी के साधन की जिस विधि का वर्णन किया गया है, उसी को मैं यहां स्पष्ट कर रहा हूं।

मन्त्र

ॐ धं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा।

स्नानोपरान्त श्रेष्ठ, मनोरम तथा गोपनीय स्थान में एकाग्रचित्त से बैठकर मन्त्र का स्मरण करते हुए न्यासादि करें।

इस मन्त्र के ऋषि कुबेर हैं, छन्द पंक्ति है तथा सर्वसिद्धि प्रदायिनी धनदा देवी-देवता है। वह धनदा देवी अर्थ, काम, धर्म तथा मोक्ष को देने वाली है।

ॐ ह्रां हृदयाय नमः।

ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ह्रूं शिखायै वोषट्।

ह्रैं कवचाय हुं।

ह्रौं नेत्र त्रयाद वोषट्।

ह्रः अस्त्राय फट्।

इसके उपरान्त देवी का ध्यान करना चाहिए। ध्यान का स्वरूप इस प्रकार है—

देवीं कांचन कान्ति मिन्दु विमलां रक्तांशु काच्छादिताम्।
हेमाम्भोज युगाभ्यां कृशकरां रत्नौल्ल सत्कुण्डलाम्।
सर्वाभीष्ट फल प्रदांत्रियनां नागेन्द्र हारोज्ज्वलां।
वन्दे सर्वभयाम हृति जगतां पापहारी पराम्॥

पूजन विधि—उक्त प्रकार से देवी का ध्यान करने के उपरान्त मान-सोपचार से पूजन करें। तदुपरान्त अर्घ्य को स्थापित कर योनि मुद्रा का प्रदर्शन करें फिर पीठ देवता की पूजा करके पीठ मन्त्र का जाप करें।

आधार शक्ति से पद्मासन तक पीठ देवताओं के नाम के आदि में 'ॐ' तथा अन्त में 'नमः' शब्द लगाकर पूजा करनी चाहिए। तदुपरान्त फिर ध्यान करके मूल मन्त्र द्वारा आह्वान पूर्वक 'ह्रीं हृदयाय नमः' इत्यादि के क्रम से षडङ्ग पूजा को समाप्त करके जीव न्यास करना चाहिए।

इसके पश्चात् मूल मन्त्र का उच्चारण करके पूजा के समस्त द्रव्यों के नामों को लेकर, उनमें से चतुर्थ्यन्त देवताओं के नाम का उच्चारण करते हुए पूजा के समस्त द्रव्यों को देवी के समक्ष समर्पित करना चाहिए।

इस तरह अपनी सामर्थ्य के अनुसार पाद्यापि उपहारों से देवी की पूजा करनी चाहिए।

अब धनदा देवी के पूजन के यन्त्र करना आवश्यक है। इस यन्त्र के जानने से साधक सब प्रकार से मुक्ति पा लेता है।

कर्णिका के मध्य में नव योनिमय चक्र लिखकर उसके दस दल कमल अंकित करके, उसके बाहर चार कोने खींचें। उन चारों कोनों के मध्य में वज्र को लिखकर कर्णिका के बीच में 'ध' बीज को लिखें। यह यन्त्र साक्षात् देवी का स्वरूप है।

यन्त्र लेखनोपरान्त लक्ष्मी, पद्मालया, श्री, हरिप्रिया, कमला, ऊल्बा, चंचला तथा लोला इन सब देवताओं के चतुर्थ्यन्त नाम के आदि में प्रण तथा अन्त में नमः लगाकर पूजा करें, जैसे 'लक्ष्म्यै नमः' आदि।

उसके उपरान्त प्राणायाम करके अपनी सामर्थ्यानुसार मूल मंत्र का जप करें तथा गुह्यातिगुह्य गोप्त्रीत्वमित्यादि—इस मन्त्र से देवी के हाथ में जप का समर्पण करें, फिर पुनः प्राणायाम करके अष्टाङ्ग प्रणाम करें तथा उठकर विशेष अर्घ्य को निवेदन करें—

तत्पश्चात् साधक स्वयं को देवी को समर्पित करके किंचित् नैवेद्य व निर्माल्य को स्वीकार करके इच्छानुसार विचरण करना चाहिये।

पूर्वोक्त मन्त्र का १ लाख की संख्या में जप, जप का १/१० होम, होम का १/१० तर्पण, तर्पण का १/१० ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार से देवी की आराधना करने वाला व्यक्ति साक्षात् बृहस्पति तुल्य हो जाता है।

जो साधक इस प्रकार धनदा देवी का पूजन करता है, समस्त सिद्धियाँ जैसे उसके हाथ में विद्यमान रहती हैं। इस भाँति पूजन करने वाला साधक धनी, लक्ष्मीवान, सरस्वती की कृपा का फल प्राप्त करता है। वह साधक पृथ्वी पर इन्द्र के समान सुखों का उपभोग करता है। उक्त विधि से धनदा देवी की आराधना करने वाला साधक जो भी अभिलाषा करता है उसे

प्राप्त कर लेता है तथा सर्व सुख प्राप्त करता है।

अब धनदा देवी के स्तोत्र का वर्णन किया जाता है—

नमः सर्वस्वरूपे च नम कल्याणदायिके।
महासम्पत्प्रदे देवि धनदात्रै नमोऽस्तुते॥
महाभोगप्रदे देवि महाकाम प्रपूरिते।
सुख मोक्षप्रदे देवि धनदात्रै नमोऽस्तुते॥
ब्रह्मरूपे सदानन्दे सदानन्द स्वरूपिणि।
द्रुत सिद्धिप्रदे देवि धनदात्रै नमोऽस्तुते॥
उद्यत्सूर्य प्रकाशाये उद्यदादित्य मण्डले।
शिव तत्वप्रदे देवि धनदात्रै नमोऽस्तुते॥
विष्णुरूपे विश्वमते विश्वपालन कारिणि।
महासत्व गुणाकान्ते धनदात्रै नमोऽस्तुते॥
शिवरूपे शिवानन्दे कारणानन्द विग्रहे।
विश्व संहार रूपे च धनदात्रै नमोऽस्तुते॥
पच तत्त्व स्वरूपे च पंचाचार सदारते।
साधकाभीष्ट देयेवि धनदात्रै नमोऽस्तुते॥

अब धनदादेवी का कवच स्पष्ट कर रहा हूँ—

धनदा कवचस्यास्य कुबेर ऋषिरीरितः।
पंक्तिश्छन्दो देवता च धनदा सिद्धिदा सदा।
धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः॥
ध बीजं मेशिरः पातु ह्रीं बीज मेललाटकम्।
श्रीं बीजं मे मुखं पातु रकारं हृदि मेऽवतु॥
विकार पातु जरं, प्रकारं पृष्ठतोऽवतु।
ये कारं जंघयोर्युग्मे स्वाकार पादमूलके॥
शीर्षादिपाद पर्यन्तं हकारं सर्वतोऽवतु॥

पञ्च ब्रह्म का विधान

१. जो मनुष्य कपिला गाय के पञ्चगव्य से स्नान कर अष्टक का जाप करके आठ सहस्त्र तिल की आहुति देता है, वह समस्त पापों से छूट जाता है।

२. जो मनुष्य घड़े को पानी से भरकर, उस पानी को उक्त मन्त्र से १०० बार अभिमन्त्रित करके प्रतिदिन स्नान करता है वह धनवान व पुत्रवान होता है।

३. दक्षिण मूर्ति देव का सूर्यास्त तक जप करते रहने के बाद आठ सहस्त्र आहुतियों द्वारा हवन करने से सभी उप-पातक दूर हो जाते हैं।

४. गुग्गल की गुट्टी बनाकर, पंचामृत में मिलाकर अग्नि में हवन करने से यक्ष, राक्षस तथा प्राणीमात्र वशीभूत हो जाते हैं। संग्राम में विजय होती है तथा साधक को सभी कष्टों से मुक्ति मिल जाती है।

५. किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित होने पर देवता के दायीं ओर बैठकर ८ हजार मन्त्र का जाप करने से ८ हजार दही, घी, मधु की आहुति देने से विघ्न शान्त हो जाते हैं।

६. बछड़े वाली कपिला गाय के दही व घी को मधु में मिलाकर ८ सहस्त्र आहुति देने से इच्छित पुत्र की प्राप्ति होती है।

७. घी मिले हुए गुग्गल की ८ हजार आहुति देने से कल्याण की प्राप्ति होती है। एक लाख आहुति देने से समस्त प्राणी वशीभूत हो जाते हैं।

८. भिक्षा का आहार करने वाला मनुष्य जल को अभिमन्त्रित करके शिवजी के निमित्त बैल अथवा बेल-पत्र का दान करने से अश्वमेध का फल प्राप्त होता है।

९. पंचगव्य के दान से अग्निस्टोम का, तीर्थ जल के दान से समस्त फलों का एवं कुशा व सर्वगंध के दान से अभय फल की प्राप्ति होती है।

१०. जो साधक तिल, घी तथा साठी के चावलों द्वारा सौ बार हवन करता है उसके परिवार में कोई व्यक्ति दरिद्री नहीं होता।

११. जो व्यक्ति मन्त्र का ८०० की संख्या में जप करता है उसे कल्याण की प्राप्ति होती है तथा यात्रा काल में दुर्गमों, भय स्थान तथा नदी आदि में उसे किसी प्रकार का भय प्राप्त नहीं होता।

१२. शिव पूजन करने वाला व्यक्ति सूर्य के उन्मुख हो, ऊपर को भुजा उठाकर मन्त्र का जप करे तो उसके ब्रह्म हत्या के पाप दूर हो जाते हैं।

१३. जल में स्थित होकर ७ दिन तक मन्त्र का जप करने तथा जल-

पान करने से गुरुत्याग, मिथ्या, पवित्र स्थान में मूत्र त्याग, चोरी तथा गुरु-पत्नी गमन के पाप दूर हो जाते हैं।

१४. राजा का प्रतिग्रह लेने तथा स्त्री एवं शूद्र के अन्न को अधिक खाने से जो पाप लगता है, उस पातक से मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक मास तक निरन्तर एवं जितेन्द्रिय रहकर तीनों सन्ध्याओं में जप करना चाहिए।

१५. जो व्यक्ति जल में शिव मन्त्र का जप करता है वह गज, सिंह, वाराह, शत्रु व राज-भय से मुक्त होता है।

१६. जो व्यक्ति एकाग्र चित्त होकर शिव ध्यान में स्थित होकर मन्त्र का जाप करता है वह सिद्ध हो जाता है।

१७. पापी पाप मुक्त हो जाता है।

ग्रहण काल में सिद्ध करने योग्य सामग्री

निकट भविष्य में दो सूर्य ग्रहण और दो चन्द्र ग्रहण पड़ने वाले हैं। ग्रहण काल साधकों के लिये विशेष महत्व का है। इस काल में विशेष उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए कुछ विशेष दुर्लभ वस्तुओं को सिद्ध किया जाता है। तांत्रिक साधनाओं से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट मन्त्रों को सिद्ध करने के लिए भी ग्रहण काल महत्वपूर्ण है।

इस पुस्तक में उपरोक्त बातों की जानकारी विस्तार से दे रहा हूँ।

साधकों के लिए ग्रहणकाल विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि ग्रहणकाल में यदि साधना की जाए तो निश्चित सफलता प्राप्त होती है। यही नहीं कुछ दुर्लभ वस्तुएँ भी इस ग्रहण काल में सिद्ध की जाती हैं। जिससे मनोवांछित सफलता प्राप्त की जाती है।

अतः साधकों को चाहिए कि वे इस समय का पूरा-पूरा उपयोग करें और कुछ साधनाओं के माध्यम से सफलता अर्जित करें। इन ग्रहणों में साधना करने से सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत यदि साधना सफल हो जाती है, या कोई त्रुटि रह जाती है तो उसका विपरीत परिणाम भी भोगना पड़ता है। अतः इस ग्रहण काल में साधकों को चाहिये कि वे अपनी इच्छानुसार साधना चुनकर उसे सिद्ध करें और सफलता प्राप्त करें।

१. सियारसींगी

यह एक दुर्लभ पदार्थ होता है, और प्रकृति का मानव को आश्चर्य-जनक वरदान भी है। सियार एक जानवर होता है जो कि पूरे भारत के जंगलों में पाया जाता है। परन्तु इस जानवर के सिर पर सींग नहीं होते।

प्रकृति का यह चमत्कार ही है कि कुछ सियारों के सिर पर कभी-कभी अचानक सींग उग आते हैं। सैंकड़ों सियारों में से किसी एक सियार के सिर पर ही सींग आते हैं। यह सींग छोटा-सा होता है परन्तु उसका आकार सींग जैसा ही होता है।

धनराशि व्यय करने पर भी इस प्रकार का सींग दुर्लभ पदार्थ आसानी से नहीं मिल पाता है। परन्तु कुछ शिकारी या जंगल में रहने वाले लोग इस प्रकार के सींग प्राप्त कर लेते हैं, उन्हीं से सम्पर्क करने पर इस प्रकार का सींग प्राप्त हो सकता है।

तांत्रिक कार्यों में इसका विशेष प्रकार का महत्व माना गया है और इसके माध्यम से कई दुर्लभ कार्य सिद्ध किए जाते रहे हैं। यही नहीं, अपितु इसके द्वारा कुछ विशिष्ट क्रियाएँ भी की जाती हैं। जिससे साधक को मनो-वांछित सफलता मिलती है।

इस प्रकार का सींग दुर्लभ अप्राप्त होने के कारण ही महंगा है। और कितना भी व्यय करने के बाद भी यदि यह सींग प्राप्त हो जाता है तो उसे सौभाग्य ही समझा जाना चाहिए। जिन लोगों को दुर्लभ वस्तुएँ संग्रह करने का शौक होता है वही व्यक्ति इन्हें संजोकर रखता है।

सामान्यतः जिनके घर में यह सींग होता है उसके घर पर तांत्रिक प्रयोग सफल नहीं हो पाता या यों कहा जाये कि उस व्यक्ति के परिवार के सदस्यों पर सामान्य रूप से तांत्रिक प्रयोग करने पर भी कोई हानि नहीं होती। अतः प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न यह होता है कि वह किसी भी प्रकार येन केन प्रकारेण इस प्रकार का सींग प्राप्त कर लें एवं घर में रखें।

परन्तु यह सावधानी बरतनी चाहिए कि ऐसा सींग असली हो, क्योंकि कुछ धूर्त स्वार्थवश नकली सियारसींगी बेचते हुये देखे गये हैं। ग्रहणकाल में इस सियारसींगी पर कुछ विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न किए जाते हैं और इस प्रकार का प्रयोग कोई भी गृहस्थ या साधक ही सम्पन्न कर सकता है।

इसके लिए कोई विशेष जटिल विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती, और यदि यह प्रयोग असफल भी हो जाता है तो साधना करने वाले को कोई हानि नहीं होती।

प्रयोग १. जब ग्रहण काल तक साधक को चाहिए कि स्नान करके तथा धोती पहनकर किसी प्रकार के आसन पर सियारसींगी को अपने सामने रखकर बैठ जावें। मुंह किसी भी दिशा की ओर हो सकता है। सियारसींगी के सामने गूगल या लोबान का धूप लगा दें। फिर उस सियारसींगी को देखते हुए निम्न मन्त्र का जाप करें।

मंत्र

क्लीं हूं वशमानाय स्वाहा

मन्त्र की पांच मालाएँ फेरनी चाहिये। माला किसी प्रकार की हो सकती है। जब पांच मालाएँ पूरी हो जाएँ तब सियारसींगी को उठाकर एक तरफ रख दें। इस प्रकार वह सियारसींगी सिद्ध हो जाती है और बाद में यदि साधक को किसी पुरुष या स्त्री को वश में करना हो या उसे अपने अनुकूल बनाना हो तो उस सियारसींगी के सामने नीचे लिखे मन्त्र का केवल ११ बार जप करें।

क्लीं हूं अमुकं (यहां उस स्त्री या पुरुष का नाम बोलना चाहिए) वश मानाय स्वाहा।

इस प्रकार ११ बार उच्चारण कर सियारसींगी को अपनी जेब में रखकर उस पुरुष या स्त्री के सामने जाते ही वह वश में हो जाता है और जिस प्रकार से आप आज्ञा देंगे वह उसी प्रकार कार्य करेगा।

इस प्रकार किसी पुरुष या स्त्री को अथवा अपने अधिकारी, नौकर, दुकानदार प्रतिस्पर्धी, शत्रु, प्रेमिका, पत्नी, पति, पुत्र या जिसको भी चाहें वश में कर सकते हैं।

इस प्रकार यह सियारसींगी आगे के कई वर्षों तक साधक के लिए सफलतादायक बनी रह सकती है।

प्रयोग २. ग्रहण काल में सियारसींगी को लाल वस्त्र में लपेटकर अपने सामने रख दें और सिद्धिदा यक्षिणी को स्मरण करें। मन में यह भावना रखें कि सिद्धिदा यक्षिणी मेरे सामने आवे और जब मैं उसे कोई

आज्ञा दूँ तो वह मेरा कार्य पूरा करे। ऐसी भावना मन में रखकर नीचे लिखे मन्त्र की २१ मालाएँ उस सियारसींगी के सामने फेरें। माला कोई भी हो सकती है। एक माला में १०८ दाने होते हैं।

मन्त्र

ॐ ह्रूं धनदा यक्षिणी मम कार्य सिद्धि करे वश मानाय स्वाहा।

ऐसा करने के बाद साधक को चाहिए कि वह उस सियारसींगी को अपने सन्दूक में रख दें। इसके बाद प्रत्येक दिन इसी मन्त्र की २१ माला फेरे तो सात दिन के भीतर-भीतर यह यक्षिणी सिद्ध हो जाती है और सिद्ध होने पर वह जीवन भर के लिए वश में रहती है।

बाद में उस यक्षिणी को जो भी आज्ञा दी जाती है वह पूरा करती है। इस प्रकार से साधक जीवन भर अनुकूल फल प्राप्त कर सकता है।

२. हत्था जोड़ी

हत्था जोड़ी भी प्रकृति का मानव को वरदान है। यह जंगल में स्वतः प्राप्त होती है। और इसका स्वरूप दोनों हाथ परस्पर जुड़े हुए के समान होता है। बिरले भाग्यशाली लोगों के घर में ही इस प्रकार की आश्चर्यजनक वस्तु पाई जाती है।

शास्त्रों में हत्था जोड़ी को लक्ष्मी रूप भी कहा जाता है। अतः यदि कुछ भी नहीं किया जाये और असली हत्था जोड़ी घर में रहे तब भी व्यक्ति स्वतः ही आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो जाता है।

प्रयोग—ग्रहण के दिन साधक को चाहिए कि वह ग्रहणकाल में पश्चिम की तरफ मुँह करके बैठ जाये तथा अपने सामने हत्था जोड़ी को रखकर निम्न मन्त्र की पाँच मालाएँ फेरे तो लक्ष्मी प्रसन्न रहती है। और उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं स्थिर अष्टलक्ष्म्यै स्वाहा।

यदि कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाए तो अति उत्तम रहता है।

इस प्रकार जब माला समाप्त हो जाये तब साधक को चाहिए कि वह

उस हत्था जोड़ी को अपने सन्दूक या लॉकर में रख दे। अथवा जहाँ पर भी गहने आदि कीमती वस्तुएँ रखी जाती हैं वहीं रख दे तो उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं रहता। व्यापार में उन्नति होती रहती है। यदि स्वयं बेरोजगार होता है तो नौकरी प्राप्त करने में सफल हो जाता है तथा यश, मान, प्रतिष्ठा, वैभव सम्पत्ति आदि की दृष्टि से उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है।

इस प्रकार की हत्था जोड़ी कई वर्षों तक अनुकूल परिणाम देती रहती है।

कहा गया है कि हत्था जोड़ी पर ग्रहण के समय प्रयोग नहीं भी किया जाये तो तब भी हत्था जोड़ी घर में रहती है और उस व्यक्ति के घर में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है और किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

यह भी सही तथ्य है कि अपनी जेब में सियारसींगी हो तो वह ग्रहण काल में सिद्ध नहीं भी की हुई हो तब भी जेब में रहने पर उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सामने वाले व्यक्ति पर विशेष रूप से पड़ता है। और वह संभावतः ही अपने अनुकूल बन जाता है।

३. गोमती चक्र

यह भी एक दुर्लभ पदार्थ है और आसानी से प्राप्त नहीं होता है। यह एक सफेद टुकड़ा होता है जिस पर चक्र बना होता है। यह चक्र स्वतः प्रकृति द्वारा निर्मित होता है।

ग्रहण काल में साधक को चाहिए कि वह ऐसा गोमती चक्र अपने सामने रख ले और नित्य मन्त्र की ग्यारह मालाएँ फेरे—

मन्त्र

ॐ आरोग्यानिकरी रोगानशेषानमः

इस प्रकार जब ग्रहण काल में ११ मालाएँ सम्पन्न हो जाएँ तब साधक को वह गोमती चक्र सावधानीपूर्वक एक तरफ रख देना चाहिए। वह सिद्ध गोमती चक्र तीन वर्ष तक प्रभावयुक्त रहता है।

इसका प्रयोग बीमारी पर विशेष रूप से किया जाता है। कोई बीमार

हो, साफ गिलास में शुद्ध जल लेकर उसमें गोमती चक्र डाल दें और ऊपर लिखे मन्त्र को २१ बार पढ़ें और उस गोमती चक्र को बाहर निकाल लें तब वह पानी रोगी को पिला दें तो रोगी आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ हो जाता है।

आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा प्रयोग किसी भी प्रकार के रोगी पर किया जा सकता है। तीन वर्ष के बाद इस गोमती चक्र को पुनः सिद्ध किया जा सकता है।

अब मैं ग्रहण काल में सिद्ध करने योग्य कुछ विशिष्ट मन्त्र व उनकी विधि स्पष्ट कर रहा हूँ।

१. **स्तंभन प्रयोग**—यदि मुकदमे में सफलता न मिल रही हो या शत्रु हमारे ऊपर हावी हो या शत्रुओं की तरफ से परेशानी प्राप्त हो तो नीचे लिखे मन्त्र की ६० मालाएं ग्रहण के समय फेरने से शत्रु स्तंभन हो जाता है, और वह भविष्य में कभी भी तकलीफ नहीं देता। एक प्रकार से वह वश में हो जाता है। इस मन्त्र के जप से मुकदमे में सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं बडवामुखि ह्रीं सर्वदुष्टानां ह्रीं वाचा मुखं स्तम्भय ह्रीं बुद्धि नाशय, ॐ स्वाहा।

इसके लिए किसी विशेष विधान की आवश्यकता नहीं है। केवल मात्र छः हजार जप करने से ही कार्य में सफलता मिलती है। ऊपर मन्त्र में जहाँ सर्वदुष्टानां शब्द आया है वहाँ अपने शत्रुओं का नाम लेना चाहिए।

२. **कार्य सिद्धि प्रयोग**—यदि किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो और बराबर बाधाएँ आ रही हों तो नीचे लिखे मन्त्र के पाँच हजार मंत्र, जप, ग्रहण काल में करने से उस कार्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

मंत्र

ॐ पं वायुपुत्राय एहि एहि आगच्छ आगच्छ आवेश्य आवेश्य कार्य सिद्धि करि स्वाहा।

इसमें किसी विशेष विधान की आवश्यकता नहीं होती। मन्त्र जप से

पूर्व हनुमान का ध्यान कर जिस कार्य की पूर्ति के लिए मन्त्र का जप किया जाये, वह कार्य बताकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिये। यह मंत्र जप ग्रहण काल में प्रारम्भ होना चाहिये। और पाँच हजार जप पूर्ण हो जाने पर उठ जाना चाहिये।

३. **किंकरी सिद्ध मन्त्र**

किंकरी भूत साधना है, और ग्रहण काल में यह साधना सिद्ध की जाती है। मन्त्र जप से किंकरी वश में हो जाती है। बाद में नित्य रात्रि को द्रव्य या स्वर्ण देती है।

साधक को चाहिये कि वह ग्रहण काल में मन्त्र जप प्रारम्भ कर दे। एक ही आसन पर बैठ दक्षिण की तरफ मुंह करके दस हजार मन्त्र जप करें। ऐसा करने पर किंकरी स्वयं सामने आती है, और भविष्य में नित्य स्वर्ण या द्रव्य देने का वायदा करती है। इसमें इसी बात का ध्यान रखा जाता कि साधक में मनोबल बहुत अधिक हो। दुर्बल या कमजोर साधकों को यह प्रयोग नहीं करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ नमो भगवति श्मशानवासिनि सर्वभूतसमेत्विते एहि एहि श्मशान किंकरि महामहिषभक्षिणि आगच्छ आगच्छ ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं स्वाहा।

साधना में सफलता तभी मिल सकती है जबकि साधक एकाग्र हो और उसकी मन्त्रों के प्रति पूर्ण आस्था हो, साथ ही साथ वह पूर्णता से कार्य करे तो अवश्य ही सफलता प्राप्त हो सकती है।

ग्रहण काल साधकों के लिए वरदान स्वरूप होता है। और वे इसका उपयोग कर साधना में सफलता प्राप्त करते हैं। धैर्य, एकाग्रता, मन्त्रों के प्रति आस्था, साधना में पूर्णता आदि से निश्चय ही सफलता मिलती है।

श्री बटुक मन्त्र विधान

अनुष्ठान के नियम

१. मन्त्र साधना करने का स्थान एकान्त हो। साफ और पवित्र हो। वहाँ अन्य कोई दूसरा आए, जाए नहीं, और न ही वहाँ कोई शब्दादि हो।

२. अनुष्ठान के समय आलस्य तथा प्रमाद से दूर रहो. परन्तु कितनी भी अशान्ति क्यों न हो, ढीले मत रहो और नियम को मत छोड़ो, जरा सा आलस्य सारे किए-कराए पर पानी फेर देता है।

३. बाहिर अथवा कुल का चाहे कितना ही दुःखदायी व दुखमय समाचार क्यों न हो, अपने हृदय को मत हिलाओ। उस समय मन को वश में ही रखने की चेष्टा करो।

४. अनुष्ठान के दिनों में यह चेष्टा बराबर करो कि मन शान्त रहे। कोई ऐसी बात मत करो कि जिससे तुम्हारे मन में भय उत्पन्न हो।

५. कोई भी ऐसा कार्य छोड़कर साधना करने मत बैठो, जिससे मन चंचल हो जाये तथा साधना करते समय उसमें विशेष बाधा हो।

६. किसी प्रकार की इच्छा रखकर अनुष्ठान करने में थोड़ी सी भी कमी आ जाने पर अनुष्ठान भंग हो जाता है। कभी-कभी विपरीत फल का भी भय रहता है। ध्यान से करें।

७. किसी मनुष्य से सुनने मात्र से ही अनुष्ठान करने मत बैठो। जब तक पूरी विधि या गुरु बतलाने वाला न हो उसे मत करो।

८. जिस मन्त्र या देवता का अनुष्ठान करो उसमें पूर्ण विश्वास तथा प्रेम होना चाहिये अन्यथा सफलता संदिग्ध रहती है।

९. सब संबंधियों तथा मित्रों को पहले ही सूचित करदो कि कितनी ही आवश्यकता पड़े, परन्तु वे बीच में किसी भी प्रकार की रुकावट तथा खलल न डालें।

१०. यदि शरीर में कोई रोग पीड़ा अथवा उसके लक्षण हों तो आपको शिथिल नहीं होना चाहिए। सब रोगादि तथा पीड़ा स्वयंमेव तुमसे दूर भाग जायेंगे।

११. अनुष्ठान के मध्य में अहार आदि सर्वथा साधारण होना चाहिए। अपने शरीर तथा ऋतुनुसार प्रयोग करें। फलों का प्रयोग विशेष करें।

१२. अनुष्ठान के दिनों में किसी भी प्रकार का समाचार पत्र, टेलीफोन तथा अन्य समाचार नहीं सुनें। जहाँ तक हो सके इनसे दूर रहने की चेष्टा करें।

१३. अनुष्ठान करने के दिनों में ब्रह्मचर्य का पूर्णरूप से पालन

करना चाहिये। सत्य, अहिंसा, प्रकृति के नियमों पर कठोरता से स्थिर रहें।

१४. कुछ भी चमत्कार देखो तो भयभीत नहीं होना चाहिए। दृढ़ विश्वास तथा धैर्य से परिणाम की प्रतीक्षा करो, जैसी अवस्था हो उसके अनुसार अपना अनुष्ठान करते रहो।

१५ अपनी साधना की बात किसी पर प्रकट मत होने दो, चाहे उससे किसी भी प्रकार का संबंध क्यों न हो। सर्वथा उसे गुप्त रखने की चेष्टा करो।

१६. बिना इच्छा से जो अनुष्ठान किया जाता है यदि उसमें किसी भी प्रकार की कमी आ जाये तो वह हानिकारक नहीं होती, अन्त में सफलता ही होती है।

१७. किसी भी अनुष्ठान के सफल न होने पर धैर्य को नहीं छोड़ना चाहिए। उसको दूसरी बार करना चाहिए। असफलता आपको किसी कमी के कारण ही होती है।

प्रयोग की आवश्यकता

१. यदि जन्म, मास, गोचर, दशा, अन्तर्दशा, स्थूलदशा आदि में बह पीड़ा होने का योग हो।

२. किसी महारोग यक्ष्मा आदि से कोई पीड़ित हो।

३. भाई आदि पृथक् हो रहे हों।

४. नगर में हैजा, प्लेग आदि से मर रहे हों।

५. राज्य या पद प्रतिष्ठा जाती हो।

६. धन ग्लानि हो।

७. मेलापक में नाड़ी दोष, षडाष्टक आदि आता हो।

८. राजभय हो।

९. मन धर्म से विपरीत हो गया हो।

१०. राष्ट्र के टुकड़े हो गये हों।

११. मनुष्यों से परस्पर में घोर क्लेश हो रहा हो।

१२. त्रिदोष वश दुर्निवार्य रोग हो।

मन्त्र विधान :—ॐ अस्य आपुदद्धार बटुक मंत्रस्य बृहदारण्यक ऋषि

अनुष्टुप छन्द, भैरवो देवता वं बीजं ह्रीं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोग।

ॐ बृहदारण्यक ऋषये नमः शिरसि।

ॐ अनुष्टुपछन्द से नमो मुखे।

ॐ भैरवो देवतायै नमो हृदि।

ॐ बीजाय नमो गुह्य।

ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ह्वां वां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(हृदयाय नमः)

ॐ ह्वीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा (शिरसे स्वाहा) ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां वषट्।

(शिखायै वषट्) ॐ ह्रैं वैं वैं अनामिकाभ्यां हुम्।

(कवचाय हुम्) ॐ ह्रौं वौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

(नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ ह्रः वः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्। अस्त्राय फट्।

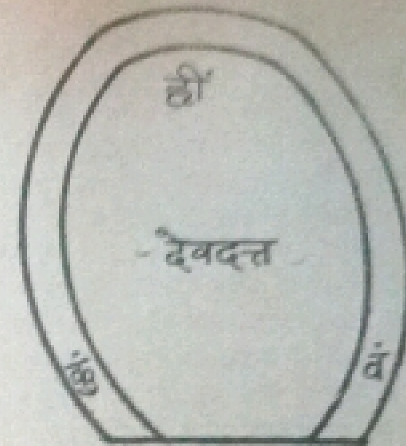
मानसोपचारैः सम्पूज्य।

ध्यानम्—

कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणी
तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती।
ऋतु समय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतु
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

मू० ॐ ह्रूं वीं वटुकायं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रवीं, पूर्व में १२५००० सवालक्ष जपें।

प्रथम कांस्य पात्र में सिंदूर का चौका लगायें उसमें त्रिकोण यन्त्र लिखें जैसा कि ऊपर छपा है। भीतर अक्षर लिखें। संकल्प करके आह्वानादि करके षोडषोपचार वा पंचोपचार पूजन करें। अथवा गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करें। तथा यंत्र के पास नीचे लिखा सामान रखें। उरद की दाल के बड़े, तिल्ली के तेल में सिके हुए, दही में मिला सिंदूर लगाकर, कच्चा दूध, गुड़ मिला हुआ, भुना हुआ केला, नुकती का लड्डू



और इमरती, लाल कनेर व गुड़हल के फूल। पूजन नित्य करें। रात्रि के ९ बजे से प्रातः ३ बजे तक जप करें और दशांश घी, शहद व चीनी का हवन करें। ग्यारह दिन में कार्य सिद्ध होगा!

भैरवाष्टक स्तोत्र

ॐ यं यं यं यत्र रूपं दश दिशि वदन भुवि कंपायमानम्।
सं सं सं संहार कृति शिर मुकुट जटा शेर कर चंद्रबिम्बम्॥
दं दं दं दीर्घकाय विकृतनख मुखं ऊर्ध्वं रोम करालम्।
पं पं पं पाप नाशं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्र पालम्॥ १॥
ॐ रं रं रं रक्त वर्णं कट कटित तनुं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालम्।
घं घं घं घोष घोषं घघ घघ घटितं घर्घरा घोर नादम्॥
कं कं कं काल रूपं घिम घिम धृमितं ज्वालितं कामदेहम्।
दं दं दं देहं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्र पालम्॥ २॥
ॐ लं,लं लं लंब दन्तं लल लल लुलितं दीर्घ जिह्वा करालम्।
धूं धूं धूं धूमवर्णं स्फुट विकृत मुखं भासुरं भीम रूपम्॥

डं डं डं कण्ड माल रुधिरमय मुखं ताम्रनेत्र विशालम् ।
नं नं नं नग्न रूपं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्र पालम् ॥ ३ ॥
ॐ वं वं वं वायु वेगं प्रलय परिमितं ब्रह्म रूपम् ।
खं खं खं खड्ग हस्तं त्रिभुवन निलयं भास्कर भीम रूपम् ॥
चं चं चं चालयंतं चल चल चलितं चालित भूत चक्रम् ।
मं मं मं मायरूपं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्र पालम् ॥ ४ ॥
ॐ शं शं शं शंख हस्तं शशिकर धवलं यक्ष सम्पूर्ण तेजम् ।
मं मं मं भाय कुल मकुलकुल मन्त्र मूर्ति स्वतत्वम् ॥
भं भं भं भूतनाथं किलाकिलित वचश्चारु गृह्णात्तुलतम् ।
अं अं अं अन्त रिक्षं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्र पालम् ॥ ५ ॥
ॐ खं खं खं खड्ग भेदं विषममृत मंत्र काल कालान्धकारम् ।
क्षीं क्षीं क्षीं क्षिप्रवेगं दह दहमं. नेत्र संदीप्य मानम् ॥
हूं हूं हूं कार शब्द प्रकटित गहनं गर्जित भूमि कम्पम् ।
बं बं बं बाल लीला प्रणमत सततं भैरव क्षेत्र पालम् ॥ ६ ॥
ॐ सं सं सं सिद्धियोग सकलं गुणमय देव देव प्रसन्नम् ।
पं पं पं पद्मनाभं हरिहर वरदं चन्द्र सूर्याग्नि नेत्रम् ॥
जं जं जं यक्षनाथं सतत भय हरं सर्व देव स्वरूपम् ।
रौं रौं रौं रौद्ररूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्र पालम् ॥ ७ ॥
ॐ हं हं हं हंस घोष हसित कह कहा राव रौद्राट्टहासम् ।
यं यं यं यक्ष सुप्तं शिर कनक महा बद्धखट्वांग नाशम् ॥
रं रं रं रंग प्रहसित वदनं पिंग कस्याश्म नाशम् ।
सं सं सं सिद्ध नाथ प्रणमत सततं भैरव क्षेत्र पालम् ॥ ८ ॥
ॐ ह्रं वीं क्रों अवस्थ भैरव क्षेत्र पालम् आगच्छागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं,
पुष्पं, धूपं, चरु बलि स्वस्तिक यज्ञ भागे च यज्ञा महे प्रति गृह्यताम् स्वाहा।
एवं पूर्वादिष्ट दिक्षु ।
एवं यो भाग युक्तं प्रपठित च यतः भैरवस्याष्टकं हि ।
निर्विघ्नं दुःख असुर भय हरं शकि नीनां विनाशम् ॥
दस्युर्नं व्याघ्रं सर्पः क्षुति विदसी सदा राज शत्रोस्तयाज्ञात् ।
सर्वे नश्यन्ति दूराद् ग्रहण विषमश्चिमिता चेष्ट सिद्धि ॥ ९ ॥

श्री बटुक भैरवाय नमः ॥
ॐ चण्ड प्रति चंड कर धृत दण्डं कृतरिपुखण्डं सौख्य करम् ।
लोक सुखयंत विलसित वं तं प्रकटित व तं नृत्य करम् ॥
डमरुध्वनि शंखतरलवतंस मधुर हसत लोक भरम् ।
भज भज भूतेशं प्रकट महेश भैरववेषं कष्ट हरम् ॥ १ ॥
चर्चित सिन्दूरं रणभुवि शूरं दुष्ट विदूरं श्री निकरम् ।
किंकिणि गणरांव त्रिभुवन पादं खर्प्पर सावं पुण्यभरम् ॥
करुणामयवेषं सकल सुरेशं मुक्त सुकेशं पाप हरम् ।
भज भज..............................हरम् ॥ २ ॥
कलिमल संहारं मदन विहारं फणिपति हारं शीघ्र करम् ।
कलुष शमयन्तं परिभृत संत मत छ गं जं शुद्ध तरम् ॥
गलि निदित हेशं नरतनदंशं स्वच्छ कशं सन्मुण्डकरम् ।
भजभज..............................हरम् ॥ ३ ॥
धृत भूत पिशाचं स्फुट मृदुवाचं स्निग्ध सुकाचं भक्त भरम् ।
तनुभाजित शेषं विमल सुदेशं कष्ट सुरेशं प्रीतिनरम् ॥
भज भज..............................हरम् ॥४॥
ललितानन चन्द्र सुमुद वितंद्र बोधितमंद्र श्रेष्ठ वरम् ।
सुखिताखिल लोकं परिगत शोकं शुद्ध विलोक पुष्टिकरम् ॥
वरदा भयं हारं तरलिततारं क्षुद्रविदारं तुष्टिकरम् ।
भज भज..............................हरम् ॥५॥
सकला युध भारं विजन विहारं विश्व विशारं भृष्टमलम् ।
शरणागत पालं मृगमद भालं संजित कालं स्वेष्टबलम् ॥
पद नूपुर सिंजं त्रिनयनं कं जं गुणीजन रंजं कष्ट हरम् ॥
भज भज..............................हरम् ॥६॥
मदयितु सरावं प्रकटित भावं विश्व सुभावं ज्ञान पदम् ।
रक्तांशुक जोषं परकृत तोषं नाशित दोषं सन्मतिदम् ॥
कुटिलभ्रकुटीकं ज्वरघन वीकं विसंरधीकं प्रेम भरम् ॥
भज भज..............................हरम् ॥७॥

परिनिर्जितकामं विलसित वामं योगिजना भयोगेशम् ।
बहुमधपनाथं गीत सुगाथं कृष्ट सुनाथं धीरेशम् ॥
कलयंत मशेषं भूतजन देशं नृत्य सुरेशं दत्वरम् ।
भज भज··································हरम् ॥८॥

ध्यानम्

ॐ वन्दे बालस्फटिक सदृशं कुंडलोद्भासिवक्त्रं ।
दिव्याकल्पैर्नं वमणिमयैः किंकणीनुपुराद्यम् ॥
दीप्ताकारं विविधवसनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं ।
हस्ताब्जाभ्यां बटुक मनिशं शूलदण्डौ दधानम् ॥

श्री बटुक भैरव पञ्चरत्न स्तोत्रम्

ॐ कर ललित कपालं गल रुण्ड मालं कुलिजनपाल देव वरम् ।
नाशं जगजालं रूप विशालं साजित कालं सौख्य करम् ।
शरणागत पालम् दुर्जनकालं कालीबालं कष्ट हरम् ।
भज श्री बटुकेशं सकल सुरेशं कौल गणेशं सिद्धिकरम् ॥१॥
खड्गायुध धारं श्रुतिपथं सारं निजजन जारं भूतेशम् ।
संनिर्जित मारं विश्वाधारं श्वैराचारं योगेशम् ॥
श्रुतिगण गुणसारं शम्भुकुमारं मुक्ताहारं वामेशम् ।
भज श्री··································करम् ॥२॥
विधि हरिहर रूपं भाल उडूपं शुद्ध स्वरूपं ज्ञानपदम् ।
तारणं भव कूपं भाव अनूपं सुखर भूपं जन सुखदम् ॥
अतिस्थूलं अणुपं प्रियतमरूपं घ्रापित धूपं प्रमभरम् ।
भज श्री··································करम् ॥३॥
संचित सुखधामं बहुविधि नाम्नें विलसित वामं दुःख हरम् ।
नुतन घनश्यामं पूरणकामं धृतपयवामं मुंडधरम् ।
निगमागम गीतं नाम पुनीतं विश्वातीतं शुभामतिदम् ॥
भज श्री··································करम् ॥४॥
फणिपति उपवीतं हरिहर मीतं ध्यान प्रीततं सद्गतिदम् ।
भवास्थितिलय करणं जन दुःख हरणं कृतविषजरणं पाप हरम् ॥

साधकमण भरण स्फटिक वरणं पूजित चरणं पुण्य भरम् ।
भज श्री··································करम् ॥५॥
भैरवस्य नरो भक्तया महास्तोत्रमिदंपठेत् ।
सर्वसिद्धि मवाप्नोति लक्ष्मी विदंति पुष्कलाम् ॥
नरसिंह कृत स्तोत्रं पुत्रपौत्र विवर्द्धनम् ।
सर्व रोग हर पुण्यं ग्रहबाधानिवारणम् ॥
पूजाकाले चार्धरात्रौ रुद्रवारे पठेत् सदा ।
राजानौ वश्यतां यांतु शत्रुनाशं प्रजायते ॥

ध्यानम्

ॐ फणिवर फणिनाथो देवदेवाधिनाथः,
क्षितिपतिक्षितिनाथो वीर वैताल नाथः ।
निधिपतिनिधिनाथो योगिनीयोगनाथो,
जपति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

श्री तामस ध्यानम्

ध्याये-त्रैलोक्य कांत शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं ।
दिग्वस्त्रं पिंगकेशं डमरूमथ सृणि खड्ग दधानम् ॥
नागं घंटा कपालं करतरसिरूहैर्बिभ्रतं भीम दंष्ट्रं ।
सर्पा कल्पं त्रिनेत्रं मणिमय विलसत्किंकिणी नूपुराद्यम् ॥

शान्ति स्तोत्रम्

ॐ यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके
कर्म प्रसिद्धमिति मान फलं प्रसूते ।
तं संततं सकलं साधक चित्तवृत्ति
चिन्तामणि सुरगणाधिपति नमामि ॥१॥
रक्तांबरंज्वलिन पिंगजटा कलापं
ज्वालावली कुटिल चन्द्रधर प्रचण्डम् ।
बालार्क कोटि फल कांचन धातुवर्ण
देवी सुतं बटुकनाथ महं नमामि ॥२॥
हरतु कुल गणेशो विघ्न संघान्यशेषन्
नयतु कुल सपर्या पूर्णतां साधकानाम् ।

पिबतु बटुकनाथ: शोणितं निन्दकानां,
दिशतु सकल कामान् कौलिकानां गणेश: ॥३॥

श्री राजस ध्यानम्

ॐ उद्यभास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्तांग रागस्त्रज: ।
स्मरास्यं वरदं कपालमभयं शूल दधानं करै: ॥
नीलग्रीवमुदारभूषण युक्तं शीतांशुखंडो ज्वलं ।
बंधूकारूण वाससं भयहरं देवं सदा भावयेत् ।

अथ मन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ नम: शिवाय ।"

महा चमत्कारी चिन्तामणि-मंत्र

महा चमत्कारी चिन्तामणि मंत्र की महिमा "मन्त्र महार्णव", "मंत्र महोदधि", "भैरव पद्मावती कल्प", "श्री देव्यर्थवशीन्" तथा अनेक तंत्र मंत्र ग्रन्थों में वर्णित है। यह एकाक्षर मन्त्र "हीन्" तांत्रिक प्रणव है तथा स्वार्थसिद्धि का देने वाला है। प्राचीन ग्रन्थों में इस महामंत्र के प्रभाव से एक हिन्दु-सम्राट को अखण्ड राज्य प्राप्ति होना वर्णित है। "श्री देव्यर्थवशीयम्" मे चिन्तामणि मंत्र के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है कि—

वियदीकार संयुक्तं, वीति होत्र समकन्वतम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या, बीजं स्वार्थ साधकम् ।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतय: शुद्धचेतस: ।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशय: ।

इस परमसिद्ध मन्त्र के विषय में जितना लिखा जाये थोड़ा है। साधना करने से ही इसकी महत्ता अनुभव होती है। असीम अति केन्द्रिय आनन्द की अभिव्यक्ति शब्दों में कर सकना असंभव है। जप केवल बीज मंत्र, "ह्रीं का करें अथवा ॐ ह्रीं नम:" जपे। इस मंत्र के प्रयोग का अनुभव अनेक साधकों ने बतलाया था। जिनमे से कुछ ने तो गोपनीय रखने का आदेश दिया था। अतएव उनका अनुभव तो प्रकाशित नहीं किया जा

सकता है। एक साधक को इसके जप से स्वप्न में उत्तर मिलने लग गया था। एक महाशय आजीविका प्राप्त न होने के कारण अत्यन्त ही दु:खित थे। इस मंत्र के प्रभाव से अब पूर्णतया सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। एक अन्य सज्जन ने इस मंत्र का अनुष्ठान करके विद्या की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त कर प्रधानाचार्य का पद प्राप्त किया था। इस मंत्र का अनेक रूप में प्रयोग किया जाता है। "कामरत्नम्" नामक तांत्रिक ग्रंथ में इस मंत्र से युक्त अनेक मंत्रों का भी उल्लेख किया गया है। जिसे विस्तार से न लिख कर केवल मूलमंत्र का ही उल्लेख किया गया है। साधकों को इस एकाक्षरी मंत्र की साधना से परम लाभ की प्राप्ति करनी चाहिए।

सप्तशती-साधना

भगवती दुर्गा की अपूर्व शक्ति तथा महिमा का वर्णन 'मार्कण्डेय-पुराण' में है, जिसमें ७०० श्लोक होने के कारण 'दुर्गा सप्तशती' नाम पड़ा है। दुर्गा सप्तशती द्वारा लाखों भक्तगण भगवती की आराधना करते हैं। शक्तिसाधना हेतु दुर्गा सप्तशती का पाठ अमोघ सिद्ध हुआ है। जिसका प्रत्यक्ष अनुभव अब तक लाखों पाठक कर चुके हैं। सप्तशती के पाठ शास्त्रीय विधि के अनुसार करने चाहिएं। जिनकी जानकारी किसी अच्छे तांत्रिक या कर्मकाण्डी पंडित द्वारा प्राप्त करनी चाहिए। अनुष्ठान के समय मूल नवार्ण मंत्र का भी जप करना चाहिए। पाठ अथवा सप्तशती के किसी भी श्लोक का मन्त्र रूप में जप करते समय शापोद्धार, शाप विमोचन तथा उत्कीलन मन्त्र आदि का जप अवश्य करना चाहिए। शापोद्धार हेतु निम्नलिखित मंत्र का जाप आदि तथा अन्त में ७-७ बार करना चाहिए।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रह कुरु कुरु स्वाहा।

इसके बाद उत्कीलन मंत्र २१-२१ बार आदि और अन्त में करना चाहिए। उत्कीलन मंत्र इस प्रकार है।

ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

इसके अतिरिक्त मंत्र शक्ति को संजीवित करने के लिए निम्नांकित

"मृत संजीवनी विद्या" मन्त्र तथा शाप विमोचन मन्त्र का भी जप करना चाहिए।

ॐ ह्रीं श्रीं वं ऐं ऐं मृत संजीवनी विद्ये । मृत्युत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं स्त्रीं वं स्वाहा। इस मन्त्र का मारीच कल्पनानुसार १०८ बार पाठ आदि और अन्त में करना चाहिए। और आदि और अन्त में ७-७ बार पाठ करना चाहिए।

ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हुँ हूँ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।

विस्तार भय से सप्तशती प्रयोग से सम्बन्धित विस्तृत तांत्रिक प्रणाली का उल्लेख न करते हुए केवल कुछ सिद्ध मन्त्रों का विवरण अंकित किया जा रहा है। वैसे सप्तशती का प्रत्येक श्लोक मन्त्रवत् है किन्तु विभिन्न साधकों द्वारा बतलाएँ गये कुछ ही अनुभूत मन्त्रों का नीचे उल्लेख किया जावेगा।

१. उच्च पद प्राप्ति के लिए

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

इस मन्त्र का कामना भेद से ह्रीं श्रीं या क्लीं बीज मंत्र का सम्पुट लगाकर सवालक्ष जप करने से उच्च पद तथा विजय की प्राप्ति होती है। अनेक बार अनुभूत है।

२. सर्व विश्व कल्याण के लिए

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी, नारायणि नमोस्तुते ।।

बीज मंत्र के सम्पुट से सवालक्ष जप से सर्वकार्य सिद्धि होती है। परीक्षित है।

३. रोग निवारण के लिए

देहि सौभाग्यमारोग्यम् देहिमे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि, यशो देही द्विषो जहि ।।

इसका भी सवालक्ष जप करना चाहिए।

४. विपत्ति निवारण के लिए

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ।।

इस मन्त्र का बीज मंत्र सहित सवालक्ष जप का विधान है।

५. स्वप्न में उत्तर प्राप्ति हेतु

ॐ ह्रीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थ साधिके।
मम सिद्धिम् सिद्धि वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शय ह्रीं ॐ ।।

पहले अनुष्ठान द्वारा सवा लाख जप करके मंत्र सिद्ध होने पर एक कामा रात्री को सोते समय जपने से स्वप्न में उत्तर मिल जाता है।

ऊपर कुछ साधनों का संक्षेप में केवल संकेत मात्र का वर्णन किया गया है। योग्य साधकों को विधिवत् जप करके उनसे लाभ उठाना चाहिए। अपने अपने अनुभवों से लेखक को अवश्य ही सूचित करें।

श्री बगलामुखी मंत्र

यह ब्रह्मास्त्र स्वरूप शत्रु स्तम्भनकारक मन्त्र सभी को स्तम्भित कर सकता है। अधिक क्या लिखूं। इसके स्मरण मात्र से पवन की गति तेज हो जाती है। यह तन्त्र शास्त्र का प्रसिद्ध मन्त्र है और इसको प्रायः सभी तांत्रिक महानुभाव जानते हैं।

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

यह छत्तीस अक्षर का मन्त्र समस्त ऐश्वर्य देने वाला है। इसमें ह्लीं प्रधान बीजमन्त्र बगीमुखि देवी जी का है। यह वस्तुतः शक्तिमन्त्रराज ह्रीं के स्थान में ह्लीं मायाबीज है। केवल रकार के प्रतिनिधि के रूप में लकार का प्रयोग किया गया है। रकार अग्निबीज और रकार पृथ्वीबीजमन्त्र पूर्ण ऐश्वर्य देने वाला श्रीं के स्थान में क्लीं बीजमन्त्र के समान है।

इन मन्त्रों की पूजा पद्धति पहले ही दी जा चुकी है, अतः यहां पुनः देना व्यर्थ होगा। श्रद्धालु भक्तजनों को प्रायः कुल्यादि से लेकर आवरणपूजा तक के कर्म विधिवत् करने चाहिए। तदनन्तर धूपादि देकर यथाशक्ति

मन्त्र जप कर त्रिशूमुद्रा दिखलाकर तीन पुष्पांजली देकर देवी जी के सम्मुख योनिमुद्रा दिखलाए। तब भैरव जी को बलि दें। तब विसर्जन के बाद कर्म समाप्त करें।

उक्त मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख मन्त्र से होना चाहिए। इस का अभ्यास जैसे-जैसे होगा वैसे-वैसे विश्वास जमेगा और देवी ध्यान में विभोर होकर पूर्ण भक्त पूर्ण विराम होने पर निश्चय देवी का दर्शन कर भक्त उपासक कृतार्थ हो जायेगा। पीताम्बर धारण कर पूर्वाभिमुख होकर एक लाख मन्त्र हरिद्रा ग्रन्थिमयी माला से जप करे। साधक ब्रह्मचर्य व्रता-वलम्बन पूर्वक संयत मन ध्यान परायण हुआ, प्रति दिन प्रियंगु वा अन्य किसी पीले फूल से होम करें।

अभिचार प्रेमी साधक निशा में दस हज़ार मन्त्र जप कर उक्त मन्त्र हरिद्रा, हरताल और लवण के अथवा घृत, मधु और शर्करा के साथ पीत पुष्प द्वारा होम करे तो दुष्ट व्यक्ति का वाक स्तम्भन और बुद्धि नाश हो। परन्तु यदि सच्चा भक्त हो जाए तो संसार का उद्धार हो और स्वयं धर्मार्थ काम मोक्ष चारों पदार्थ प्राप्त करें।

कांक्षाकल्पतरु प्रयोग

निम्नांकित प्रयोग पाठकों के कल्याणार्थ प्रेषित कर रहा हूँ। यदि इससे पाठकों को कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपना प्रयास सफल समझूंगा।

जगन्मात्रे नम:

शिव उवाच

रक्तेन चन्दनेनेह बिल्वस्य कण्टकेन च।
बिल्वपत्रेषु दुर्गायाश्चरित्रं मध्यमं शिवे॥
चन्द्रे शुक्रस्य वा वारे नवरात्र चतुष्टये।
अष्टोत्तरशत योग संलिखेच्छ्रद्धयान्वित:॥

पूजयित्वा विधानेन देव्या हस्ते निवेदयेत।
सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वित:।
सद्यो भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिश्च गच्छति।
नारायणेन साकं सा देवि विश्वम्भरी रमा॥
रमते भवते तस्य धनधान्यप्रवर्षिणी।
यत्नोयंज मया दृष्ट: सर्वत्र सफल: प्रिये॥
येराय: केभ्योपि न देय: प्रयोग: साधुसेवित:।

चारों नवरात्रि में सोमवार और शुक्रवार के दिन साधक बिल्वपत्रों पर भगवती दुर्गा के मध्यम चित्र को रक्त चन्दन से बिल्व के काँटो से ८ बार श्रद्धापूर्वक लिखें। तदनन्तर भगवती का सविधि पूजन कर फल देवी के हाथ में समर्पित करें।

इस प्रकार करने वाला धर्मात्मा व्यक्ति सब बाधाओं से तुरन्त मुक्त होकर धनधान्य पुत्रादि से सम्पन्न होता है। शाश्वत शान्ति को प्राप्त करता है। नारायण के साथ रहकर विश्व की सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली देवी लक्ष्मी धनधान्य की वर्षा करती हुई उस साधक के भवन में निवास करती है। हे प्रिय! यह उपाय मैंने सर्वत्र सफल होते देखा है।

दत्तात्रेयतन्त्रोक्त सर्वोपरि मन्त्र

मन्त्र शक्ति के सम्बन्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि—

"मंत्र परम लघु जासु बस, बिधि हरिहरि सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुं, बस कर अंकुश खर्ब॥

इसके अतिरिक्त "मंत्र-महामणि विषय-ब्याल के, मेटत कठिन कुअंक भाल के।" आदि के शब्दों द्वारा भी मन्त्रों की महत्ता को स्वीकार किया है। मंत्र की परिभाषा के सम्बन्ध में शास्त्रकारों का मत है कि—"मननात् त्रायते यस्मात् तस्मात् मन्त्र: प्रकीर्तित:।" जिसके जप से अथवा, मनन से रक्षा होती है, उसी को मन्त्र कहते हैं। मन्त्र वह ईश्वरीय शक्ति है, जिसके द्वारा गुप्त शक्तियों का उदय होकर कल्याण की प्राप्ति होती है।

मन्त्र साधना का उद्देश्य गुप्त ईश्वरीय शक्तियों को जाग्रत करके अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करना है। मन्त्र जप एक पूर्ण यौगिक एवं वैज्ञानिक विधि है, जिससे शब्द शक्ति का चमत्कारिक उद्बोधन होकर निर्वाण की प्राप्ति हो सकती है। हमारे सूक्ष्म शरीर में प्रसुप्त यौगिक केन्द्र, ग्रन्थियां एवं चक्रादि हैं जो मन्त्र जप के द्वारा जाग्रत होकर विराट् ईश्वरीय शक्ति का बोध कराते हैं। मन्त्र साधना पूर्ण योग साधना है और आत्मिक उत्थान के पथ पर अग्रसर होने के लिए नितान्त आवश्यक है। महर्षि पतंजली प्रणीत "योगदर्शन" में कहा है कि—"जल, औषधि, मन्त्र तप, और समाधि से सिद्धियां प्राप्त होती हैं।" मन्त्र जप द्वारा बिखरी हुई मानसिक शक्तियां केन्द्रित होकर सूक्ष्म शक्तियों के विकास का मार्ग प्रशस्त कर देती हैं। मंत्र का सम्बन्ध सूक्ष्म ध्वनि तरंगों से होता है जिसकी शक्ति आकाश तत्त्व से सम्बन्धित होने के कारण स्थूल तत्त्व की अपेक्षा अधिक होती है। ध्वनि-कम्पनों में विद्युत की तरह इतनी शक्ति गुम्फित रहती है कि जिस उद्देश्य से लक्षित होती है उस ओर महान परिवर्तन करने में सक्षम होती है। इसीलिए सभी धर्मों और सम्प्रदायों ने मन्त्र-साधना को धर्मोपासना का एक आवश्यक अंग होना स्वीकार किया है और मन्त्र जप पर विशेष बल दिया है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है—"यज्ञानां जप यज्ञोस्मि" अर्थात् यज्ञों में जपयज्ञ मैं हूं और इस प्रकार जप साधना को सर्वश्रेष्ठ माना है। मन्त्र शक्तियों ने बार-बार कहा है कि "जपात् सिद्धिः, जपात् सिद्धिः, जपात् सिद्धिः न संशयः।" मन्त्र जप से शक्ति उत्पन्न होकर सिद्धि की प्राप्ति होती है, और अनेक आध्यात्मिक तथा भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होती है। 'अग्नि पुराण' में जप की व्याख्या इस प्रकार की गई है कि—

"जकारों जन्म विच्छेदः, पकारः पाप-नाशकः।
तस्याज्जप इति प्रोक्तो, जन्म पाप-विनाशकः॥

अर्थात् ज का अर्थ है जन्म का विच्छेद और प का अभिप्राय है पापों का नाश। जिसके द्वारा जन्म मरण और पापों का विनाश हो, वही जप कहलाता है।

मन्त्र सिद्धि की अद्भुत महत्ता के कारण ही अनेक लोग सद्यः फलप्रद मन्त्रों की तलाश में रहते हैं, और कई लोग तो सिद्धि प्राप्ति की तलाश में उतावले होकर बिना सोचे समझे ही अनेक प्रकार के मन्त्रों की साधना में लग जाते हैं, जिससे कुछ भी लाभ न होकर केवल निराशा का ही सामना करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि मन्त्र साधना गुह्यगम्य होने से मन्त्रोपासना में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। मनमानी विधि से अल्लम-गल्लम जपने से सिद्धि की प्राप्ति होनी तो दूर बल्कि हानि होने की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त तांत्रिक मंत्रों की साधना से पूर्व कुलाकुल चक्र तथा अकड़म चक्र से तत्व का वर्गीकरण आदि से मिलान करना पड़ता है, तथा साध्य जुसाध्य अरि आदि संज्ञा का परीक्षण करना होता है। राशिचक्र, नक्षत्र चक्र आदि मंत्र की सुसाध्यता ज्ञात करके मन्त्र ग्रहण करने के लिए तिथि, मास, नक्षत्र, वार आदि का विचार भी करना पड़ता है। तत्पश्चात् अक्षर-भ्रांति लुप्त छिन्न ह्रस्व, दीर्घ कथन आदि दोषों को मन्त्रानुष्ठान के पूर्व निवारण करके साधन-पथ की ओर अग्रसर होना पड़ता है। तत्पश्चात् गुरु से मन्त्र ग्रहण कर मन्त्र के दस-संस्कार जनन, जीवन, ताड़न, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन और गुप्ति आदि संस्कार भी करने पड़ते हैं। इस प्रकार विधि-पूर्वक साधन किया गया मंत्र ही सफल होता है। अतः तांत्रिक प्रक्रिया युक्त मन्त्रानुष्ठान सर्व-साधारण के लिए कुछ कठिन होने से मन्त्र साधना से बहुत कम लोग लाभ उठा पाते हैं, किन्तु हमारे दयालु ऋषि मुनियों ने ऐसे सिद्ध मन्त्रों का भी उद्धार किया है, जो कष्ट साध्य न होने के कारण सुसाध्य एवं सुगम्य हैं। मात्र शास्त्र के एक प्रामाणिक ग्रन्थ "दत्ता-त्रेय-तन्त्र" में ऐसे ही एक सर्वोपरि मन्त्र का उल्लेख मिलता है, जो न केवल सरल और सुसाध्य है, बल्कि समस्त लौकिक एवं पारलौकिक सिद्धियां प्रदान करने में पूर्ण सक्षम एवं समर्थ है। लोक कल्याणार्थ जन साधारण के लिए उस मन्त्र को प्रकाशित करना आवश्यक समझ कर यहां उसका उल्लेख किया जा रहा है। आशा है इसकी विधिवत् साधना करके साधक गण उससे यथोचित लाभ उठा पाएंगे। यह सर्वोपरि महामन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः। उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय-कराय, ब्रह्म

हरि हराय त्रिगुणात्मने सर्वं कौतु कानि दर्शन दर्शय दत्तात्रेयाय नमः। मन्त्र-तन्त्र सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।"

यह मन्त्र अद्भुत चमत्कार पूर्ण तथा अनुभूत है। इसकी नित्य कम से कम एक माला जपने से कालान्तर में इच्छित फल की प्राप्ति की जा सकती है। अधिस्क आधिकम् फलम्। जप से अधिक उत्तम परिणामों की आशा की जा सकती है। इसकी साधना में किसी भी प्रकार का बन्धन अथवा गुह्य क्रिया नहीं है। जो लोग सब तरफ से निराश हो चुके हैं, वो इसके जप से चमत्कारपूर्ण लाभ उठा सकते हैं। इसके निरन्तर जप से साधक में अद्भुत आत्मविश्वास तथा शक्ति का विकास होगा और कवि के इन शब्दों का साम्यक यथार्थ होना अनुभव कर सकेगा।

अनुभूत पन्द्रह का यन्त्र

भारत की संस्कृति अति महान् है। वेद ईश्वर की वाणी है। जिस प्रकार ज्योतिष एक प्राचीन विज्ञान है तथा हमारे वेदों की देन है उसी प्रकार तंत्र भी एक प्राचीन विज्ञान है, यह भी वेदों की ही देन है।

तन्त्र विज्ञान आज तक गोपनीय विषय रहा है। जो लोग इस विद्या के जानकर हैं वह किसी को कुछ बताना नहीं चाहते। इस प्रकार तंत्र विद्या का भारत से लोप होता देखा गया है। धूर्त लोग, हाथ की सफाई, बाजीगरी को ही तन्त्र विद्या बताते हैं और अपनी दूकान चलाते हैं। प्रश्न उठता है कि हमारे योग्य पुरुषों को तंत्र की क्यों आवश्यकता पड़ी। तंत्र का निर्माण क्यों हुआ? इससे समाज को क्या लाभ हुआ? तन्त्र जबकि एक विज्ञान है तो उपयुक्त हाथों में समृद्धि व भलाई का कारण बना, लेकिन कुपात्र हाथों में भयंकर विनाश का पात्र भी यही विद्या रही।

बड़े-बड़े योग्य गुरुओं तथा उस्तादों ने अपने उन योग्य शिष्यों को ही यह विद्या सिखलाई जिन पर यह विश्वास किया गया कि तन्त्र विद्या से शिष्य किसी का अनिष्ट नहीं करेगा। विश्वास के अभाव में आज यह

विद्या लोप होती जा रही है। तन्त्र में देखो कि क्या सिद्धान्त लागू होता है। जबकि तन्त्र शास्त्र अति प्राचीन है, तब उसके यंत्र व मंत्र भी लाखों वर्ष पुराने हैं। जितना संयम, धैर्य, विश्वास गुरु भक्ति पहले के लोगों में थी आज उसका संभवतः हजारवाँ भी भाग लोगों में नहीं पाया जाता। ऐसे ही अविवेकी लोग इस तन्त्र विद्या को मानने से इन्कार कर देते हैं। आज के भौतिक युग में लोग तन्त्र विद्या से लाभ कमाना चाहते हैं परन्तु होता यह है कि अधिकतर लोगों को असफलता मिलती है क्योंकि इस विद्या में दृढ़ विश्वास, लगन, आत्मशक्ति व योग्य गुरु का होना अति आवश्यक है।

हमारे माननीय गुरुओं की इच्छा यही रही है कि इस विद्या से लोगों के दुःख दूर हों। ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र सभी एक दूसरे के पूरक हैं। बीमारियों, अशुभ कर्मों के कारण, शत्रुओं के द्वारा हिंसा, सिंह व सर्प आदि के कष्ट व भय को मिटाने के लिए यन्त्र, मन्त्र व तन्त्र का निर्माण हुआ। जब ज्योतिष शास्त्र ग्रहों की पीड़ानुसार किसी कष्ट का संकेत करता है तब उसी कष्ट के निवारण के लिए मन्त्र व यन्त्र का सहारा लेकर व्यक्ति उस कष्ट से शीघ्र छुटकारा पा लेता है। जो लोग इस विद्या में विश्वास करते हैं वे निसंदेह लाभ उठाते हैं।

आज के वर्तमान युग में लोग गरीबी तथा रोगों से पीड़ित हैं, क्योंकि उनके कर्म शुभ नहीं, उन्हें ईश्वर पर यकीन नहीं तो उनको रोगों व गरीबी के अतिरिक्त और क्या मिल सकता है? अगर लोग अपने इष्ट देवता पर थोड़ा सा भी विश्वास करके इन प्राचीन यंत्र व मन्त्रों से अपने कष्टों से छुटकारा पा सकता है। यंत्र कई प्रकार के होते हैं। उसके कई उपयोग होते हैं। परन्तु इस समय बीस का तथा पन्द्रह का यंत्र अपने प्रभाव के कारण विश्वविख्यात है। देखने में यह यंत्र बड़े सरल दिखाई देते हैं। हर व्यक्ति यह सोचता है कि इन्हें कुछ ही दिनों में शुद्ध कर लूंगा, अब तो मेरे कष्ट अवश्य मिटेंगे। यंत्र सामने होता है लोग लिखना भी शुरू कर लेते हैं। लाख, सवा लाख बार लिख भी लिया जाता है। लेकिन फल न्यून या कुछ भी नहीं। क्योंकि पूर्ण विधि एवं सम्पुट किये बिना सिद्धि मिलना असम्भव है। यंत्र सिद्ध होने पर उनके अलग-अलग उपयोग सम्भव हैं।

पन्द्रह के यंत्र के विषय में शुरू से लेकर अन्त तक ध्यान से मनन करें। इसकी सही विधि अपने हृदय में बिठा लीजिए, इसके बाद में असफल न होना पड़े। यन्त्र शुरू करने से पूर्व देखिये कि आपकी राशिनुसार कौन सा यंत्र शुरू करना है। क्योंकि हर यंत्र अपनी-अपनी राशि के लिए शीघ्र प्रभावकारी होता है।

एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ और नौ ये अंक पन्द्रह के यंत्र बनाने के काम आते हैं। यह यंत्र चार प्रकार के होते हैं। १. खाकी, २. बादी, ३. आबी, ४. आतिशी।

मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं पारस्व पक्ष्या नवनाग कुल सेवनाय स्वाहा।

विधि—किसी एकान्त कमरे में शुद्ध होकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके किसी कुश के आसन पर शान्त मन से बैठ जाएं। कमरे में सुगन्धित वातावरण का निर्माण करें। जिस पन्द्रह के यंत्र को सिद्ध करना है उसे अपने सामने रखें, जोत व अगरबत्ती जलावें। अपनी दृष्टि यंत्र पर जमावें। मन्त्र की जप संख्या ५१००० तक जरूरी है। इस अवधि के बीच पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन आवश्यक है। इसके बिना सफलता में संदेह है। जब ५१००० मन्त्रों का जाप पूरा हो जाए तब अपने इष्ट देवता को कुछ नैवेध का भोग लगावें।

इसके पश्चात् यंत्र को कागज पर लाल स्याही से अलग-अलग लिखें, यह संख्या ५००० तक की है। इन यंत्र को आटे की गोलियों में डाल मछलियों को डालें। उस समय भी उपरोक्त मन्त्र का मानसिक उच्चारण चालू रखें। इस प्रकार पन्द्रह का यंत्र सिद्ध होता है।

अब मैं इसके अलग-अलग प्रयोगों का वर्णन करूंगा, जिससे सिद्धि यंत्र का भिन्न-भिन्न प्रकार से लाभ उठाया जा सके।

प्रयोग — १. बट वृक्ष की कलम से कृष्ण पक्ष की चौदस से इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिखना शुरू करें तो लक्ष्मी प्राप्त होती है।

२. लाल अनार की कलम से एक हजार यंत्र पृथ्वी पर लिखें तो बंधन से छुटकारा मिले और स्वामी प्रसन्न हों।

३. पीपल वृक्ष की जड़ की कलम बना कर गौ-मूत्र, मेनसिल, कपूर,

तगर, गोरोचन इन सबकी स्याही बनाकर लिखने से मनोवांछित कार्य सिद्ध होता है।

४. आक के पत्तों पर कनेर की कलम से १०८ यंत्र लिखें और कीकर के वृक्ष पर रोज बांधता जावे तो इन्द्र के समान प्रबल शत्रु भी हार मानता है।

५. हल्दी को जल में घिसकर १०८ यंत्र पत्थर पर लिखकर शत्रु की चौखट में गाड़ दें तो शत्रु के घर में घोर उच्चाटन हो जाता है।

६. ओंगे के रस से भोजपत्र पर २१ बार लिखकर बांधे तो सभी प्रकार के ज्वर व नजर मिट जाती है।

७. सर्वकार्य सिद्धि के लिए आम की पट्टी पर गुलाल डाल कर चमेली की कलम से लिखें तो उसके सभी कार्य अनायास ही पूरे हो जाते हैं। रोजना ५१ यंत्र तो लिखे ही। उपरोक्त पट्टी पर जामुन की कलम से लिखने पर वशीकरण हो जाता है।

८. शुभ कार्य के लिए केशर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी की स्याही बनाकर सोने की कलम से भोजपत्र पर नित्य १०८ यंत्र लिखना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के घर में कभी लक्ष्मी का अभाव नहीं रहता।

इस प्रकार पन्द्रह का यंत्र सिद्ध करके अपने-अपने मनोरथ पूरे करने में व्यक्ति सफल हो जाता है।

परदेश लाभ मन्त्र

जब किसी परदेश में रोजगार, रोटी, रोजी के लिए, धनोपार्जन के लिए जाएं तो सर्वप्रथम अपने इष्ट के सामने १० हजार बार निम्न मन्त्र का जाप करें। उसके बाद सुयोग्य ब्राह्मण से उपयुक्त मुहूर्त्त निकलवा-कर यात्रा पर जाएं। जिस दिन, जिस समय गमन करने लगें। इस मन्त्र को १०८ बार अवश्य जपें। जब इच्छित नगर में पहुँचे तो यह मन्त्र १०८ बार जपें। जिस भी नगर में जाकर कार्य करें, रोजगार मिलेगा तथा आशातीत लाभ होगा। अतुल धन की प्राप्ति होती है।

जिस नगर में रोजगार के लिए जाएं, वहाँ मंगलवार के दिन प्रवेश न करें। मंगलवार के दिन प्रवेश करने पर हानि होती है।

मंत्र

ॐ णमो अर हं ताणं ॐ णमो भगवइये बन्दार्य ३ए सतद् ठाए गिरे मोर मोर हुलु हुलु चुलु चुलु मयूर वाहिनिए स्वाहा।

सर्वशान्ति मंत्र

विधि—१०८ बार जाप गुरुवार से प्रारंभ करें तो पूर्व दिशा को मुख करके बैठें। धूप से प्रारंभ कर ११००० जाप करें।

मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शांति तुष्टि पुष्टि कुरू कुरू स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्लीं सर्वारोग्यं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि— इस मन्त्र का त्रिकाल १०८-१०८ बार जाई के फूलों से जप करें तो सब प्रकार की अर्थ सिद्धि को देता है।

मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा ह्रीं नमः ।।

विधि—इस मन्त्र का लक्ष्य जाप विधिपूर्वक करने तक सिद्ध होता है। इस मन्त्र के प्रभाव से साधक जो भी भोगोपभोग की चीजों की इच्छा करता है वह साधक को प्राप्त होती हैं। स्त्री आदि तो अपना होश भूल कर साधक के पीछे-पीछे चलती है।

मंत्र

ॐ क्लीं ह्रनी ह्रँ ह्रीं ह्रां ह्रः अपराजितायै नमः।

विधि—इस मन्त्र का एक लाख बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र का दस दिन तक प्रयत्नपूर्वक आराधना करने से स्त्री, पुरुष, राजा आदिक वश में होते हैं। पद भ्रष्ट होने वाला मनुष्य दस दिन तक प्रतिदिन ११ हजार जाप करे तो जल्दी से पद की प्राप्ति पुनः हो जाती है।

मंत्र

ॐ पार्श्वनाशाय ह्रीं।

विधि—चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में या दीपावली के दिन इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए साधक को देवें। इस मन्त्र को शुद्धता से ब्रह्मचर्य

पूर्वक छः महिने तक प्रतिदिन एक हजार बार जप करने वालों को यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के प्रभाव से साधक, राजा, उन्मत्त हाथी, घोड़ा, सर्व जगत के प्राणी वश में होते हैं। सभी प्रकार के कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

मंत्र

ॐ आं ह्रां क्ष्वीं ॐ ह्रीं

विधी—पार्श्व प्रभु की मूर्ति के सामने सोने की कटोरी में १२००० जाई के फूल से इस मन्त्र का जाप करें। मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद मनोवांछित कार्य की सिद्धि होती है। मन्त्र के प्रभाव से भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, बैताल, डाकिनी, शाकिनी इत्यादिक सामने आते ही नहीं, बाधा देने की तो बात अलग रही! मन्त्र के प्रभाव से युद्ध, सर्प, चोर, अग्नि, पानी किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचती। मन्त्र के प्रभाव से सन्तान की इच्छित प्राप्ति होती है। वन्ध्या तक भी गर्भ धारण कर सकती है। जिनकी सन्तान उत्पन्न होते ही मर जाती है उनकी सन्तान जीने लगती है। कीर्ति की प्राप्ति, लक्ष्मी प्राप्ति, राज्य व सौभाग्य की प्राप्ति होती है। देवांगनाएँ, जातक की सेवा में उपस्थित रहती हैं। ऐसा ही कुछ इस मन्त्र का प्रभाव है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कुण्डदण्डाय ह्रीं नमः ।।

विधी—पुष्य नक्षत्र सप्तमी के दिन या शनिवार के दिन या रवि पुष्यामृत में पहले सफेद आक की जड़ को लेकर पार्श्व प्रभु की प्रतिमा बनावें, फिर उपरोक्त मन्त्र से मूर्ति की प्रतिष्ठा करके उसी मन्त्र से मूर्ति की पूजा करें तो जो कार्य साधक विचार करें वह सभी कार्य साधक के चिंतन मात्र से ही हो जाते हैं। न्यायालयी विवाद में, धान्य संग्रह में विजय प्राप्त होती है।

मंत्र

ॐ नमो भगवती शिव चक्रेगमालिनी स्वाहा।

इस मन्त्र का विधिपूर्वक जाई के फूलों से १३ हजार मन्त्र का जाप तीन दिन में करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो सकता है। उस मन्त्र को सिद्ध

करने के लिए स्वयं शुद्ध होकर विलेपन लगाकर सफेद वस्त्र पहन कर अम्बिका देवी की मूर्ति को स्नानादि करा कर पचामृत से पूजन कर देवी के सम्मुख बैठ भक्तिपूर्वक उपवास करके मन्त्र सिद्ध करे तो तीन दिन में मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर मन्त्र के प्रभाव से भूत, भविष्य, वर्तमान की बात को देव कान में आकर कहेगा। यानि कि जो भी प्रश्न करेंगे वही कान में आकर कहेगा।

मंत्र

ॐ ह्रीं पां प लक्ष्मी भवीं क्ष्वीं कुः हंसः स्वाहा।

इस मन्त्र का १० हजार जाप जाई के फूलों से करने से एवं दशांस होम करने से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। मंत्र के प्रभाव से स्थावर या जंगम विष की शक्ति का नाश होता है।

मंत्र

ॐ ह्रीं ला ह्रा प लक्ष्मी हंसः स्वाहा।

इस मन्त्र को छः महिने तक एकासन पूर्वक १०८ बार जाप करे तो १०० योजन तक के पदार्थ का ज्ञान होता है। इससे भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान प्राप्त होता है। इस मंत्र का कलि कुण्ड यन्त्र के सामने बैठकर जाई के पुष्पों से एक लाख बार जाप करें और दशांस होम करें। मन्त्र पूर्णतया सिद्ध हो जायेगा।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लू कलि कुण्ड नाशाय सौं ह्रः नमः।

विशेष—५ वर्ष तक ब्रह्मचर्यपूर्वक इस विद्या की जो आराधना करता है उसको प्रतिदिन विद्या के द्वारा एक पल भर स्वर्ण नित्य प्राप्त होता है। किन्तु नित्य ही जितना सोना मिले उसे खर्च कर देना चाहिए। यदि व्यय नहीं करके संग्रह किया जावेगा तो विद्या का महत्त्व घट जाता है।

विधी—इस मन्त्र का १ लाख बार जप करने से कार्य सिद्ध होता है। इस मन्त्र के प्रभाव से राजदरबार में, कोर्ट-कचहरी के बाद-विवाद में, उपदेश के समय, विद्या का छेदन करते समय, वशीकरण में, विद्वेषयादि में, धर्म प्रस्तावना के कार्यों में अति उत्तम कार्य करने वाला है।

मंत्र

ॐ ह्रुं ह्रुं हें हें कूं चूं टूं तूं पूं यूं शूं ह्रां ह्रः क्षां ह्रूं फट्।

सवा लाख जप करने से प्रत्यक्ष दर्शन होते है या साढ़े बारह हजार जप करने से स्वप्न में दर्शन होते हैं।

मंत्र

पद्मावती प्रत्यक्ष मन्त्र—ॐ आं श्री ह्रीं ऐं क्लीं ह्रों फट्। मावत्यै नमः॥

ब्राह्म मुहूर्त्त में रोज ५ माला जपने से बुद्धिमान होता है। ॐ क्षौं क्षौं शुद्ध बुद्धि प्रदेहि श्रुत देवी मँर्हंतं तुभ्यं नमः॥

सरस्वती मंत्र

ॐ ऐं श्रीं क्लीं वट् वट् वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः॥

धन तेरस को ४० माला, चौदस को ४२, दिवाली को ४३ माला उत्तर दिशा में मुख, लाल माला से, लाल वस्त्र पहनकर जपें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठ। ॐ घंटा कर्ण महावीर लक्ष्मी पुरय पुरय सुख सौभाग्यं कुरू कुरू स्वाहा। लक्ष्मी प्राप्ति

श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल का मंत्र

ॐ नमो भगवते मणि भद्राय क्षेत्र पालाय कृष्ण रूपाय चतुर्भुजाय जिन शासन भक्ताय नव नाग सहस्त्रबालाय निन्नर कि पुरुष गंधर्व, राक्षस, भूत-प्रेत-पिशाच सर्वशाकिनी नां निग्रहं कुरू कुरू स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहाः॥

कामना सिद्धि के लिए

जो साधक तीन दिन तक सन्ध्या समय गणेशाष्टक स्तोत्र का पाठ करता है, उसकी समस्त इच्छाओं की निःसन्देह पूर्ति होती है। ८ दिन तक निरन्तर इन आठ श्लोकों का एक बार और चतुर्थी तिथि को आठ बार स्तोत्र पाठ करने वाले को आठों सिद्धियों की प्राप्ति होती है। २१ बार

इस स्तोत्र का पाठ करने से विद्या का विकास, पुत्र की प्राप्ति, समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। एक मास तक नित्य प्रति ८-८ बार पाठ करने से कैद से छुटकारा मिलता है। गणेश का भक्त बनने के लिए पराभक्ति से इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। गणेश पुराण में अष्टक का माहात्म्य वर्णित है—

सर्वे ऊचुः

तऽनन्त शक्तेरनन्ताश्च जीवा
यतो निर्गुणाद प्रमेया गुणास्ते।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेद भिन्नं
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥१॥
यतश्चाविरासीज्जगत्सर्व मेतत्।
तथाऽब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता॥
तथेन्द्रादयो देवसंघा मनुष्याः।
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥२॥
यतो वह्नि-भानू भवो भूर्जलं च
यतः सागराश्चन्द्रमा व्योमवायुः।
यतः स्थावरा जंगमा वृक्षसंघा
सदा तं गणेशं नमामोभजामः ॥३॥
यतो दानवाः किन्नरा यक्षसंघा
यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च
सदा तं गणेशं नमामो भजाम् ॥४॥
यतो बुद्धिरज्ञान नाशो मुमुक्षो
यतः सम्पदो भक्ति सन्तोषिकाः स्यु।
यतो विघ्न नाशो यतः कार्य सिद्धिः
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥५॥
यतः पुत्र सम्पद्यदो वांछितार्थो
यतऽभक्त-विघ्नास्तथा ऽनेक रूपाः।
यतः शोक-मोहौ यतः काम एव
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥६॥

यतोऽनन्त शक्तिः स शेषो बभूव
धरा धारणेऽनेक रूपेः च शक्त।
यतोऽनेकधा स्वर्ग लोका हि नाना
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥७॥
यतो वेदवाचोऽति कुण्ठा मनोभिः
सदा नेति नेतीदि यदा गृणन्ति।
परब्रह्म रूपं चिदानंद मूलं
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥८॥

श्री गणेश उवाच

पुनरूचे गणाधीशः स्तोत्र मेतत् पठेन्नरः।
त्रिसंध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वं कार्यं भविष्यति ॥९॥
यो जपेदष्ट दिवसं श्लोकाष्टक मिदं शुभम्।
अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्ट सिद्धिर वाप्नुयात् ॥१०॥
यः पठेन्मास मात्रं तु दशवारं दिने दिने।
स मोचयेद् बन्धगतं राजवद्यं न संशयः ॥११॥
विद्याकामो लभेद् विद्यां पुत्रार्थी पुत्र माप्नुयात्।
वांछितांल्लाभते सर्वानिक विंशति वारतः ॥१२॥
यो जपेत् परया भक्त्या गजानन परीनरः।
एव मुक्त्वा ततो देवाश्चान्तर्धानं गतः प्रभु, ॥१३॥

(गणेशाष्टक)

ऐश्वर्य एवं संतान अभिवृद्धि हेतु

कामनाओं की सिद्धि के लिए श्री शंकराचार्य के द्वारा विरचित गणाधिप स्तोत्र का पाठ लाभकारी सिद्ध हुआ है। इसके नित्य २१ पाठ तो अवश्य होने ही चाहिएँ। तभी यह श्री, सम्पत्ति और वैभव का दाता सिद्ध होता है। दीर्घायु प्राप्त होती है और बुद्धिमान पुत्र की प्राप्ति होती है।

श्री गणाधिप स्तोत्र

सरागिलोक दुर्लभं विरोगिलोक पूजितम्।
सुरासुरैर्नमस्कृतं जरादि मृत्यु नाशकम् ॥

गिरागुरूं श्रिया हरि जयन्ति यत्पदार्चना ।
नमामि तं गणाधिपं कृपापयः पयोनिधिम् ॥
गिरीन्द्रजामुखाम्बुज प्रमोददान भास्करं ।
करीन्द्र वक्त्रमानताघसंघ वारणोद्यतम् ॥
सरीसृपेशबद्ध कुक्षिमाश्रयामि सन्ततम् ।
शरीर कान्तिनिर्जिताब्ज बन्धुबाल सन्ततिम् ॥
शुकादि मौनि वन्दितं गकार वाच्यमक्षरम् ।
प्रकाममिष्टदायिनं सकामन म्रपङ्क्तेय ॥
चकासनं चतुर्भुजैर्विकासिपद्म् पूजितम् ।
प्रकाशितात्मतत्त्वकं नमाम्यहं गणाधिपम् ॥
नराधिपत्व दायकं स्वरादिलोक दायकम् ।
जरादिलोक वारकं निराकृता सुरव्रजम् ॥
कराम्बुजैर्धरन् सृणीन् विकार शून्य मानसैः ।
ददासदा विभासितं मुदा नमामि विघ्नपम् ॥
श्रमाप्रनोद क्षमं समाहितान्तरात्मना ।
समाधिभिः सदार्चितं क्षमानिधिं गणाधिपम् ॥
रमाधवादिपूजितं यमान्तकात्म सम्भवम् ।
शमादिषड्गुणप्रदं नमामि तं ततटवभूये ॥
गणाधिपस्य पंचकं नृवामभोष्टायकम् ।
प्रणाम पूर्वकं जनाः पतन्ति यं मुदा युताः ॥
भवन्ति ते विदाम्पुरः प्रगीत गीत वैभवा ।
जनाश्चिरामुषोऽधि श्रियः सुसूनवो न संशयः ॥

लक्ष्मी सिद्धी

लक्ष्मी प्राप्ति और अपनी आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए निम्न स्तोत्र के २१ पाठ नित्य किए जाने चाहिएं ।

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्व सौख्य प्रदायिने ।
दुष्टारिष्ट विनाशाय पराय परात्मने ॥
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोप शोभितम् ।
अर्द्ध चन्द्र धरं देवं विघ्न व्यूह विनाशनम् ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः ।
सर्व सिद्धि प्रदोऽसि त्वं सिद्धि बुद्धि प्रदोभवः ॥
चिन्तितार्थ प्रदस्त्वंहि सततं मोदक प्रियः ।
सिंदूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः ॥
इद गणपति स्तोत्रं च पठेद् भक्तिमान् नरः ।
तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुंचति ।

पति वशीकरण

भारत की नारी सदैव से ही पति के अत्याचारों को सहन करती आई है। प्रायः दहेज की कमी अथवा उसकी रूप-माधुरी की कमी के कारण पतियों का व्यवहार उग्र, उपेक्षापूर्ण होता रहा है। कभी-कभी नव-विवाहिताओं को ऐसे क्रूर-नराधम पुरुषों द्वारा जलाकर या गला-घोंटकर मारते हुए भी देखा गया है।

प्रायः ऐसे भी उदाहरण सामने आये हैं कि सुन्दर पत्नी के होते हुए भी पति को अन्य स्त्रियों में लिप्त होते देखा गया है। अतः यदि किसी नारी का जीवन ऐसी ही विषमताओं से आच्छादित या दुःखपूर्ण बन गया हो, तो वह निम्न तांत्रिक सरलतम प्रणालियों का प्रयोग कर पति से स्वाभाविक-आकर्षण और प्रेम प्राप्त कर सकती है। मैंने निःसन्देह मंत्र-भेद कि किसी क्रिया को नहीं छुपाया है।

यदि निम्न साधनाओं से गृहणियों को उत्तम फल प्राप्त हो, तो दुआएं प्रदान करें, यदि सम्पन्न हो तो लेखक को आर्थिक या प्रसारित सहायता प्रदान करें।

मन्त्र

ॐ नमो महा-यक्षिणि पति में वश्यम् कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधान—किसी शुभ पर्व अथवा रविवार को लाल साड़ी आदि वस्त्र पहन, लाल आसन पर बैठकर, पूर्व की ओर मुख कर तथा गुगल अथवा धूप जलाकर उपरोक्त मंत्र की सात-ग्यारह दिनों में दस हजार संख्या पूरी करें। तत्पश्चात् प्रतिदिन एक माला ही जपें। पति की दृष्टि में नारी चन्द्रमुखी ही नहीं, सर्वगुण सम्पन्न दीखने लगेगी।

पति वशीकरण साबर तंत्र

प्रसिद्ध तांत्रिक ग्रन्थों डामर, उड्डिस कुलपति के अतिरिक्त साबर तंत्र भी अत्यधिक प्रभावशाली माना गया है। पति उपेक्षाएं निम्न सरल मन्त्र की एक माला प्रतिदिन जपे तथा तीन बार सिन्दूर पर पढ़ कर अपने मस्तक पर उसकी बिन्दी लगाए।

मंत्र

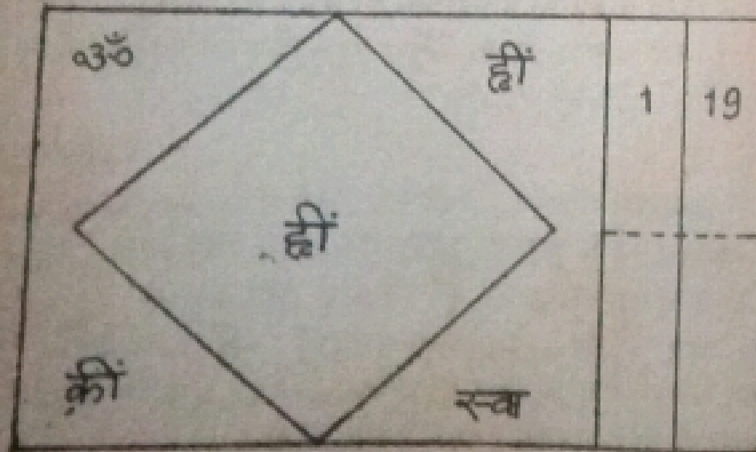
ॐ नमो आदेश गुरु को सिन्दूर कमिया सिन्दूर नाम तेरी पत्नी। कामाख्या सिर तेरी उत्पत्ति सिन्दुर पढ़ि लगावे बिन्दी हो वश होवे निबुद्धी। ॐ महादेव की शक्ति गुरू की भक्ति। कामरूप कामाख्या माई की दुहाई। आदेश हाड़ी दासी चंढी मन लाव निकार न हो तो पिता महादेव बाम पाद जाप लगे।

गृहणियों को चाहिए कि मंत्र जाप तथा प्रयोग के समय के स्थान पर अपना नाम तथा अमुक स्थान पर पति का नाम डाले।

सास-ससुर वशीकरण

नीचे प्रदर्शित यंत्र को रोटी पर केसर की सहायता से अनार की कलम से लिखकर काली कुतिया को खिलाएँ तो सास मोहित हो जाती है और काले कुत्ते को खिलाएँ तो ससुर मोहित हो जाता है।

यंत्र निम्न प्रकार है



यंत्र का विधिपूर्वक धूप, दीप, फल, फूल से पूजन करें।

अद्भुत गुंजा कल्प

बहुत समय हुआ मैं भटक रहा था, बावला बना। यंत्र, मन्त्र, तन्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक था। उन्हीं दिनों एक मित्र के यहाँ एक पुरानी हस्तलिखित पुस्तक के कुछ पन्ने मिल गये। उस पुस्तक में "गुंजा कल्प" दिया था। मैंने उस प्रयोग को किया और अद्भुत आश्चर्य-जनक फल पाया, सत्यान्वेषण किया। आज वही कल्प मैं पाठकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूँ। विश्वास है कि पाठक लाभान्वित होंगे।

गुंजा:—गुंजा का अर्थ चिरमी होता है जो पहाड़ों पर झाड़ी के रूप में उगता है, उसका बीज लाल रंग का होता है। पाठकों ने सुनारों के यहाँ या जवाहरात का काम करने वालों के यहाँ चिरमी देखी होगी। जो तोल के काम में आती है। ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव ने स्वयं पार्वती से "सब कल्पत" को सार कहकर परिचय करवाया था।

भूत, प्रेत, डाकिनी, यक्ष, राक्षक, वीर, बैताल इत्यादि वशीभूत हो जाते हैं इससे। करोड़ों प्रकार के मायाजाल, कौतुक माया से ऊपर अद्भुत, अगणित गुण युक्त यह कल्प साधक को पूर्ण सफलता, यश, सम्मान, ऐश्वर्य, भौतिक सुख आनन्द, मोक्ष देता है। परीक्षा में सफलता, गृहस्थ जीवन में श्रेष्ठता, विजय, शत्रु हन्ता, नौकरी देने में सफल कल्प है।

कल्प:—रवि पुष्य के दिन अर्थात् जिस दिन रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन साधक गुंजा की जड़ स्वयं लावे या शुक्रवार के दिन रोहिणी नक्षत्र हो या ग्रहण हो अथवा किसी माह कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हस्त नक्षत्र हो, तब अर्द्ध रात्रि के समय पूर्ण आस्था, विश्वास व शंका रहित गुंजा के पास जा धूप, दीप देकर जड़ प्राप्त करें। घर आकर मूल की विधि विधान से पूजा करके, गाय के दूध में उसे रख दें। यह कल्प करने के बाद यदि कभी किसी को सर्प दंश हो जाय तो उस समय दूध में उक्त गुंजा हिलाकर दूध रोगी को पिला दे, तत्काल सर्प काटे का विष उतर जाता है। बाँझ स्त्री यदि ताँबे के मादलिया या चौकी में मढ़वाकर कमर में बाँध ले तो पुत्र प्राप्ति होती है। वशीकरण के लिए यह राम बाण है।

काजल के साथ थोड़ा घिस कर अंजन लगा देने पर जिससे भी मिले वह वशीभूत हो जाता है। शत्रु मित्र बन जाता है, विरोधी विरोध भूल जाता है। अधिकारी गण उसके गुण गाने लगते हैं।

यदि इसे घिसकर लेपन करें अर्थात् दूध के साथ घिस कर लेपन करने पर भूत, प्रेत, यक्ष, राक्षस, डाकि शंख उसके वशीभूत होकर आज्ञा पालन करने को तत्पर होते हैं, यदि गंधक के साथ मिला कर बीसों नखों पर स्त्री लगावें तो उसे देखते ही पर-स्त्रीगामी, कुमार्गी पुरुष एक स्त्री का व्रत पालन करते हुए वशीभूत हो जाता है। केले के तैल में घिसकर आँख में लगाने पर दृष्टि दोष दूर हो जाता है। दृष्टि तीव्र एवं भूमिगत अर्थ दिखने लगता है।

गौरोचन व लौंग से लिखने पर शत्रु शत्रुता भूल जाता है, अर्थात् गौरोचन व कल्प को घिसकर स्याही बनावें व लौंग से शत्रु का नाम लिखे तो शत्रु वश में हो जाता है। शक्कर के साथ रगड़ कर तलवों पर लगा दे तो मनुष्य उड़ने तक की शक्ति प्राप्त कर सकता है। घी के साथ घिस कर शरीर पर लगाने से हठी से हठी व्यक्ति भी विनम्र हो जाता है।

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि पाठक इस प्रकार के प्रयोग को करें, वे आशातित सफल होंगे, मैं यह प्रयोग अधिकांश पर कर चुका हूँ।

वशीकरण संबंधी कुछ अचूक मुसलमानी मंत्र और तंत्र

कहते हैं कि कुछ मुसलमानी यन्त्र और तन्त्र ऐसे अचूक हैं जिसका प्रभाव तुरन्त होता है। मन्त्र या तन्त्र किसी भी धर्म सम्प्रदाय का हो उसे यदि श्रद्धा, प्रेम और पूर्ण सद्विश्वास के साथ पेश किया जाए और पूर्ण विधान का ध्यान रखा जाए तो उनका प्रभाव तुरन्त होता है। मनुष्य उसकी अद्भुत शक्ति का चमत्कार देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है। तन्त्रों के प्रयोग करने में और उसका फल प्राप्त करने में तो कोई विशेष मुश्किल या अड़चन नहीं आती किन्तु मन्त्र साधना और उसका फल प्राप्त करने में अज्ञानतावश कई मुश्किलें आती हैं। मन्त्रों में विशेष शक्ति या यों कह लीजिए कि उसकी कुल मूल शक्ति के बल पर उसके उच्चारण अर्थात् स्वर या लय में होती है। किस मन्त्र का उच्चारण कैसे किया जाए

यदि यह जान लिया जाए और उसके बाद उसकी साधना की जाए तो शत-प्रतिशत सफलता मिलना निश्चित हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं रहता है।

इसलिए कहा जाता है कि बिना गुरु के गति नहीं। क्योंकि गुरु, (किसी भी विद्या को जानने वाला व्यक्ति) ही आपको बतायेगा कि इस मन्त्र में दिये गये शब्दों में से किस शब्द का उच्चारण कैसे करना है। जैसे संगीत में, शब्दों में जादू को होता है किन्तु जादू जमाया जाता है, केवल उसके स्वर, लय अर्थात् उच्चारण से। उसी प्रकार मन्त्र के शब्दों में जादू एवं शक्ति तो है। किन्तु उसके जादू को जगाकर अपने अनुकूल करके अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए उसके उच्चारण का ज्ञान होना जरूरी है। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि यदि आप अधिक निराशा और असफलता से बचना चाहते हैं तो जिसे भाषा का ज्ञान हो उस विद्वान् से उसका सही उच्चारण सीख लेना चाहिए, तभी आपको सफलता मिल सकेगी।

बाल्यकाल से ही मेरी मन्त्र, तन्त्र एवं यंत्रों में रुचि रही है। किसी भी धर्म सम्प्रदाय में मुझे कोई मन्त्र या तन्त्र का पता लगा तो मैंने उसे पाने एवं सीखने की कोशिश की, पूर्ण प्रयत्न किया और सफल रहा। मैंने कई मन्त्रों, तन्त्रों की साधना की और अपनी आशा के अनुसार फल पाया। सभी का वैसा ही प्रभाव पाया जैसा कि सुना था। यहाँ मैं कुछ मुसलमानी इलम के कुछ अचूक सरल मन्त्र एवं तन्त्र दे रहा हूँ। जिनसे मैं लाभ भी उठा चुका हूँ और जिस जिस को भी मैंने बताया है उसने इनकी साधना की और इच्छानुसार फल पाया है। यदि आप भी सफलता और लाभ की कामना करते हैं तो उन्हें श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा से करें। आपको भी शत-प्रतिशत लाभ मिलेगा। मन्त्र और तन्त्र निम्नलिखित हैं—

वशीकरण पुतलियाँ

मुसलमानी इलम में वशीकरण का बहुत ही प्रभावशाली और अचूक तन्त्र है। यह तन्त्र बहुत मुश्किल से मेरे मुस्लिम भाई ने मुझे बताया था और साथ ही चेतावनी भी दी थी कि इस प्रभावशाली तन्त्र का उपयोग कभी भूलकर भी अपनी वासना पूर्ति के लिए नहीं करना चाहिए। इसका

प्रयोग तभी करना चाहिए जबकि आपका उससे सच्चा प्रेम और आप उसके बिना नहीं रह सकते हैं, और उसे हर हालत में प्राप्त करना चाहते हैं। अपितु उससे शादी करना चाहते हैं। तब इसप्र योग का प्रभाव चमत्कारिक सिद्ध होगा। क्योंकि मैंने तो यह अचूक, प्रभावशाली, चमत्कारिक तन्त्र अपने मित्र से इस वायदे पर लिया था कि ना मैं स्वयं इसका दुरुपयोग करूंगा और ना ही किसी ऐसे व्यक्ति को बताऊंगा। इस लिए मेरी सभी पाठकों से प्रार्थना है कि इसका प्रयोग सावधानी और उचित इच्छा के लिए ही करें, केवल वासना पूर्ति के लिए नहीं। यदि कोई ऐसा करता है तो वह स्वयं पाप का भागी होता है।

"यदि आप इसका प्रयोग अपनी प्रेमिका के लिए करना चाहते हैं तो शुक्रवार के दिन एक स्त्री और दूसरी पुरुष की पुतली बनावें (यदि आप वशीकरण किसी पुरुष केलिए करना चाहते हैं तो दोनों पुतलियां पुरुष की बनावें)। स्त्री पुतली पर अपनी प्रेमिका का नाम लिख दें और पुरुष पुतली पर अपना नाम लिख दें। इसके बाद इन दोनों पुतलियों को एक साफ शुद्ध ऐसे कमरे में रख दें जहाँ किसी का आना-जाना न हो। अपनी पुतली इस कमरे की पश्चिमी दीवार के साथ लगाकर खड़ी करें और अपनी प्रेमिका की पुतली कमरे की पूर्वी दीवार के साथ खड़ी करें। ताकि दोनों पुतलियाँ एक दूसरे के सामने हों, इसके बाद चाँद की पहली तारिख को (शुक्ल पक्ष की एकम तिथि को) अर्धरात्रि को कमरे में धूप दीप जलाकर, इन दोनों पुतलियों के बीच नेत्र मूंदकर इस मंत्र को एक हजार बार पढ़ें।

युहब्बूनहुम कहुबअल्ला वलज्जीना आमनु अशद् हुब्बार

जब तक मन्त्र समाप्त न हो जाए आंख न खोलें। यदि इसके बीच कोई बुलावे या आवाज दे तो बिल्कुल ही नहीं बोलना चाहिए। मन्त्र समाप्त होने पर पुतलियों को थोड़ा आगे सरका दें। चालीस दिन तक यही मन्त्र करके इन दोनों पुतलियों को इतना खिसकाएँ कि चालीसवें दिन दोनों एक दूसरे से लिपट जाएं। चालीसवें दिन (जिस दिन यह अम्ल समाप्त होने वाला हो) सात फूल चम्मेली के और सात सफेद इलायची इत्र में भिगो कर पास रख लें जब उस रात भी मन्त्र पूरा कर लें, उस रात्रि को यह मन्त्र ऊंची आवाज में पढ़ें। मन्त्र पूर्ण होने पर दोनों पुतलियों को लेकर एक

दूसरे से छाती से छाती मिलाकर लिपटा दें। फिर उस समय वहाँ गड्ढा खोदकर पुतलियों को उसी प्रकार लिपटी अवस्था में गड्ढे के अन्दर लिटाकर उसके चारों ओर फूल और इलायची रख दें और गड्ढे को ढक दें और भर दें। उसके बाद उसी स्थान पर नारियल के तेल का दीपक जलाकर रख दें। यह दीप जलता रहना चाहिए, अर्थात् हर रोज वहाँ पर नारियल के तेल का दीप जलना चाहिए। मन्त्र का अमल पूर्ण होने के कुछ ही दिनों में आपकी प्रेमिका—आपका महबूब खुद ही बेकरार होकर खिंचा चला आयेगा। जैसे मेगनेट की ओर लोहा खिंचा चला आता है। अर्थात् आपका मिलन अवश्य हो जायेगा और वह पूर्णरूप से आपके वश में होगी।

इस तन्त्र के रहस्य के बाद उसने प्रेम में पूर्णरूप से और सहज रूप में सफलता प्राप्ति के लिए एक मन्त्र बताया। यह मन्त्र भी अचूक और केवल २१ दिन से लेकर ३० दिन के भीतर प्रभाव करने वाला है। इस मन्त्र को हमारे जानने वाले ने पूर्ण आस्था और श्रद्धा के साथ किया और उसे अपने लक्ष में शत-प्रतिशत सफलता मिल चुकी है। उसकी प्रेमिका जिसके लिए उसने इसका प्रयोग किया था, आज उसकी पत्नी है और वह दोनों बड़े प्रेमपूर्वक अपना जीवन बिता रहे हैं।

"अपनी प्रेमिका के सिर के कुछ बाल प्राप्त करें। इसके बाद इन बालों को कैंची से बारीक-बारीक काटकर बिल्कुल छोटे-छोटे करलें फिर इनको मिट्टी के दिये में डालकर रुई की बत्ती डालकर दिये को रोगनेजातून से भरकर रख दो और दीप जलाकर इस दीप का मुख अपनी प्रेमिका के घर की ओर कर दो। यह बात याद रखनी चाहिए कि यह अमल एक साफ सुथरे कमरे में धूप दीप जलाकर शुक्रवार की रात्रि को १२ बजे करना चाहिए।

दीप जलाकर और दीप का मुख अपनी प्रेमिका के मकान की ओर करके एक टाँग पर खड़े होकर मन ही मन अपनी प्रेमिका की शक्ल का ध्यान करके उसका नाम लें और साथ ही साथ यह मन्त्र पढ़ें।

..................अशद् हवातन

यह मन्त्र २१ रात तक हर रोज एक हजार बार करना है।

मन्त्र से पहले खाली स्थान पर अपनी प्रेमिका का नाम लें। इस मन्त्र की अथाह और चमत्कारिक शक्ति के प्रभाव से २१ दिन में ही आपको अपने लश में सफलता मिलेगी। और इसी २१ दिन के बीच उसका दिल भी पत्थर से मोम हो जायेगा और वह स्वयं ही आपसे मिलेगी।

अन्त में हम शत्रुदमन का एक तन्त्र लिख रहे हैं। यह तन्त्र हमें एक पहुँचे हुए मौलवी से प्राप्त हुआ था। साथ ही उसने बताया था कि इस तंत्र का प्रयोग छोटी-छोटी बातों पर नही करना चाहिए। यह नहीं कि आपका किसी अपने मुहल्ले में रहने वाले से झगड़ा हो जाय और आप तंत्र का उपयोग करें। इसका प्रयोग तब करना चाहिए जब बिना वजह कोई आपसे शत्रुता कर लेता है। आप को हानि पहुँचाने की चेष्टा करता है। या आपके यश, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने का प्रयत्न करे तब इस तंत्र का प्रयोग करना चाहिए। बल्कि बहुत विवशतावश ही करना चाहिए।

शत्रुदमन का तन्त्र

किसी प्रकार एक चील का अण्डा प्राप्त करें। इसके बाद सात रोज तक सात बार पानी में गोता दें। गोता देते समय अपने शत्रु का ध्यान करके कहें तबाह हो, बरबाद हो। सात दिन करने के बाद आठवें दिन काली स्याही से बारीक कलम से, यह मंत्र उस चील के अण्डे पर इसी प्रकार लिखें कि वह पूरा आ जाए और उसका कोई भी भाग शेष न रह जाए। इसके बाद इस अण्डे को लुबान की धूनी देकर धरती में गड्ढा खोदकर इस अण्डे को उसमें रख दें और इसके ऊपर कीकर के कोयले की आग सुलगा दें और साथ ही ऊँची आवाज में वहीं बैठकर शत्रु का नाम लेकर या ध्यान देकर कहता रहे तबाह हो, बरबाद हो। कुछ देर बाद अण्डा फूट जायेगा और तभी इसका प्रभाव आपके शत्रु पर आरम्भ हो जायेगा। कुछ दिनों में आप अपने शत्रु को तबाह एवं बरबाद हुआ देखेंगे।

अन्त में एक बार फिर आपको बता देना चाहता हूँ कि मन्त्र साधना करने से पहले किसी विद्वान् से उस मंत्र का शुद्ध उच्चारण अवश्य ही सीख लेना चाहिए। क्योंकि शुद्ध उच्चारण से ही उसकी शक्ति जागती है। और

यंत्र इस प्रकार है।

११७	१११	६९५	
१९१६	९९९६	७/४	
७२१	५१२		
३१३			

इस यंत्र को एवं अंकों को उर्दू लिपी में ही लिखें।

इस यंत्र में अंक जिस प्रकार हैं उसी प्रकार लिखने चाहिएं।

उसका सफल प्रभाव होता है। जंत्र लिखने से पहले किसी विद्वान् से पूछ लेना चाहिए कि इस मनोरथ के लिए यह जंत्र किस समय लिखा जाय। इस जंत्र में सर्वप्रथम कौन-सा अंक भरा जाए। जंत्र को सही प्रकार लिखने से ही उसका प्रभाव होता है। आपकी जानकारी के लिए लिख दूं कि शत्रुदमन जंत्र मंगल या शनिवार को दोपहर में लिखे जाते हैं। विशेषकर मंगल या शनि की होरा में। यह होरा उस दिन सूर्य उदय होने से सात घंटे समाप्त होने पर एक घंटे के लिए आती है। जंत्र भरते समय सबसे छोटा अंक पहले आता है और सबसे बड़ा बाद में।

सर्व-सिद्धिदायक लघु सिद्ध चक्र यंत्र व मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं असि आउसा अनाहत विद्यायै नमः ॥

इस मन्त्र का नियमपूर्वक जो व्यक्ति पाँच वर्ष तक दोनों समय

संयमपूर्वक पाँच-पाँच माला का जाप करता है उसकी सब परेशानियाँ दूर होकर अचिन्त्य लाभ होते देखा गया है।

महालक्ष्मी सिद्ध मंत्र

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सबकी सवाई, आवो चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋषि सिद्धि खगे तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

विधी—दुकानदार दुकान खोले तब महादेव का थड़ा अर्थात् दुकान की गद्दी पर बैठकर इस मन्त्र की प्रथम एक माला जप लें। फिर लेन-देन करें। धूप दीप से लाभ होवे, धन की श्रीवृद्धि हो, न्याय नीति से कारोबार करें, दशवां भाग दान पुण्य में लगावें। सभी प्रकार के सुख शान्ति को प्राप्त करता है। यदि पहले इस मन्त्र का ४१ दिन में सवा लाख जाप, धूप-दीप, पुष्प, फल, नैवेद्य आदि विधान से करके फिर एक माला का नित्य जाप करें तो लक्ष्याधिपति, वैभव-संपन्न जीवन का अक्षय सुख पाता है।

स्वप्न वाराही मन्त्र

ॐ नमो भगवती कुमार वाराही गुग्गल गुंध प्रिये सत्यवादिनी लोका वशा प्रचार रहस्य वाक्यानि मम स्वप्ने वद वद सत्यं ब्रूहि सत्य ब्रूहि आगच्छ ह्रीं वौषट् नमः ॥

विधी—इस मन्त्र को दस हजार बार जपने से कार्य की सिद्धि होती है। शुक्रवार के दिन पवित्र होकर अर्द्ध रात्रि में सुन्दर कलश की स्थापना करके उसके ऊपर पान रखें, उसके ऊपर हल्दी की देवी की स्थापना प्रतिमा बनाकर करें फिर 'वाराह्यै नमः' इस नाम मन्त्र से भक्तिपूर्वक प्राण प्रतिष्ठा करके भक्त को मादक पदार्थ निवेदन करें फिर पूजा कर मन्त्र जपें। देवी के आगे मस्तक झुकाकर एकासन से जप करें और देवी के चरणों में सिर करके सो जाएं तो देवी स्वप्न में शुभाशुभ को कहती है, जिसके द्वारा साधक इच्छानुसार लाभ उठा सकता है। भक्ति के प्रसाद से साक्षात्कार भी संभव है।

मन इच्छित सफल दुर्गा मंत्र

(स्वप्नेश्वरी व दैविक आवाज)

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्र काली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

विधि—स्नानकर शुद्ध हो, साफ धुले वस्त्र पहनकर, सवा गज जमीन लीप करके आसन बिछा लें। ऊपर लाल वस्त्र बिछावें। सामने दुर्गा की मूर्ति या फोटू की स्थापना करें। भोग के लिए १/२ सेर गाय का दूध, दो पेड़े, एक छटांक चावल मिट्टी के सकोरे में डाल कर सफेद वस्त्र से ढक लें। मंत्र की २१ माला का जाप अर्द्धरात्रि में करें। धूप चढ़ावें, दीपक प्रज्वलित करें। जपने से पूर्व प्रथम लौंग, सुपारी, पुष्प लेकर इच्छित कार्य का संकल्प करें और उसे मंगल कलश में डाल दें। इस प्रकार यह जाप ६ दिन नवरात्रि में ही करें तो कार्यकाल में कभी भी स्वप्न या प्रत्यक्ष आवाज से ही सही अनुभव हो जाता है। परन्तु कर्म संयोग से मुझे तो दूसरे दिन ही साक्षात्कार में दर्शन हुए। जिसकी कल्पना करना भी असंभव था और १५-२० मिनट तक शेर पर सवार दुर्गाजी से काफी वार्तालाप हुआ। दुर्गा ने कहा, 'भक्त क्या चाहते हो?' मैंने दो बार कहा 'आपकी पूर्ण कृपा से सभी प्रकार का आनन्द है।' जवाब में कहा, 'भक्त! अब मेरे बिना कहे तीसरी बार इन्कार मत करना, तुम्हारे मन की भावना मैं समझ गई हूँ और उसका उत्तर यह होता है, सो तुम मेरी आज्ञा से इसी प्रकार करना और भविष्य में भी वक्त पर याद करना।' इतना कह कर देवी अन्तर्धान हो गई और उनका वचन, ईश्वर के वचन समान पूर्ण हुआ। स्वर-व्यञ्जन तक का भी अन्तर न था। यह सब क्रिया मन, वचन, कार्यस्थान की शुद्धता व एकाग्रतापूर्वक करनी होगी। अगले दिन उस कुल्हड़, फलादि को कन्या को देना या जलाशय में डाल देना चाहिए। कपड़ा धोकर अगले दिन कुल्हड़ पर रखना अवश्यम्भावी है।

श्री कनकधारा स्तोत्रम्

अंग हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ति भृंगांगनेव मुकुलाभरण तमालम्।
अंगीकृताखिलविभूतिरपांगलीला मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः ॥१॥

प्रकाशित होती है। जिन्होंने अपने आविर्भाव से भृगुवंश को आनन्दित किया है तथा जो समस्त लोकों की जननी है उन भगवती लक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करे।

७. समुद्र कन्या कमला की वह मन्द, अलस, मन्थर और अर्धोन्मीलित दृष्टि जिसके प्रभाव से कामदेव ने मंगलमय भगवान मधुसूदन के हृदय में प्रथम बार स्थान प्राप्त किया था मुझ पर पड़े।

८. भगवान नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी का नेत्र रूपी मेघ दयारूपी अनुकूल पवन से प्रेरित हो दुष्कर्म रूपी घाम को चिरकाल के लिए दूर हटाकर विषाद रूपी धर्मजन्यताप से पीड़ित मुझ दीनरूपी चातक पोत पर धनरूपी जलधारा की वृष्टि करे।

९. विशिष्ट बुद्धि वाले मनुष्य जिनके प्रीति पात्र होकर जिस दया दृष्टि के प्रभाव से स्वर्ग पद को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं। पद्मासना की पद्मा की वह विकसित कमल गर्भ के समान कान्तिमयी दृष्टि मुझे मनोवांछित सफलता प्रदान करे।

१०. जो सृष्टि लीला के समान वाग्देवता के रूप में स्थित होती है। पालन लीला करते समय भगवान ध्वज की पत्नी लक्ष्मी के रूप में विराजमान होती है तथा प्रलयलीला के काल में शाकम्भरी अथवा चन्द्रशेखरवल्लभा पार्वति के रूप में अवस्थित होती है। त्रिभुवन के एक मात्र पिता भगवान नारायण की उन नित्ययौवना प्रेयसी श्रीलक्ष्मी जी को नमस्कार है।

११. मातः शुभ कर्मों का फल देने वाली श्रुति के रूप में आपको प्रणाम है। रमणीय गुणों की सिन्धु रूपा रति के रूप में आपको नमस्कार है। कमल वन में निवास करने वाली शक्ति स्वरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है तथा पुष्टि रूपा पुरुषोत्तमप्रिया को नमस्कार है।

१२. कमल वंदना में कमला को नमस्कार है। क्षीरसिन्धु सम्भूता श्री देवी को नमस्कार है। चन्द्रमा और सुधा की सगी बहन को नमस्कार है। भगवान नारायण वल्लभा को नमस्कार है।

१३. कमल सदृश्य नेत्रों वाली माननीया माँ आपके चरणों में किए गए प्रणाम सम्पत्ति प्रदान करने वाले सम्पूर्ण इन्द्रियों को आनन्द देने वाले,

साम्राज्य देने में समर्थ तथा सारे पापों को हर लेने के लिए सदा ये सदा मुझे ही अवलम्बन करें।

१४. जिनके कृपाकटाक्ष के लिए की गई उपासना उपासक के लिए सम्पूर्ण मनोरथों और सम्पत्तियों का विस्तार करती है। श्री हरि की हृदेश्वरी उन्हीं आप लक्ष्मीदेवी का मैं मन वाणी और शरीर से भजन करता हूँ।

१५. भगवती हरिप्रिये तुम कमल वन में निवास करने वाली हो, तुम्हारे हाथों में नीला कमल सुशोभित है, तुम अत्यन्त उज्ज्वल वस्त्र, गन्ध और माला आदि से शोभा पा रही हो।

१६. दिग्गजों द्वारा सुवर्ण कलश के मुख से गिराये गए आकाशगंगा के निर्मल एवं मनोहर जल से अखीश्वर भगवान विष्णु की गृहिणी और क्षीरसागर की पुत्री उन जगजननी लक्ष्मी को मैं प्रातःकाल प्रणाम करता हूँ।

१७. कमल नयन केशव की कमनीय कामिनी कमले मैं अकिंचन मनुष्यों में अग्रगण्य हूँ अतएव तुम्हारी कृपा का स्वाभाविक पात्र हूँ तुम उमड़ती हुई करुणा की बाढ़ की तरल तरंगों के समान कटाक्ष द्वारा मेरी ओर देखो।

१८. जो लोग इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेदत्रयी गुणवान और स्वरूपा त्रिभुवन जननी भगवती लक्ष्मी की स्तुती करते हैं, वे इस भूतल पर महान गुणवान और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं तथा विद्वान पुरुष भी उनके मनोरथ को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।

नवग्रह उपासना

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता है। जब कोई ग्रह खराब स्थान पर बैठकर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। जीवन के सुख-दुःख, लाभ-हानि इन्हीं ग्रहों पर आधारित होते हैं। इन ग्रहों की शांति के लिए उनकी उपासना करनी चाहिए। प्रस्तुत है, इस लेख में नवग्रह उपासना पद्धति। भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्व है जितना

कि भगवान विष्णु, शिव या अन्य किसी देवता की उपासना का। जन्म से लेकर मृत्यु-पर्यन्त जितने भी उपनयन, विवाह आदि संस्कार होते हैं। उन सभी में नवग्रहों का विशेष महत्व है। किसी भी प्रकार का यज्ञ नवग्रह पूजन के बिना अधूरा रहता है, क्योंकि यज्ञ की रक्षा नवग्रहों के माध्यम से ही होती है। इसलिए गणेश आदि की स्थापना के साथ ही साथ नवग्रहों की स्थापना होनी भी आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुल बारह राशियाँ होती हैं और प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह है। मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी मंगल, वृष और तुला का शुक्र, कन्या और मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु और मीन का गुरु तथा मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी शनि है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष की मानी गई है, इसमें से सूर्य की दशा छः वर्ष, चन्द्रमा की दस वर्ष, मंगल की सात वर्ष, राहु की अठारह वर्ष, गुरु की सोलह वर्ष, शनि की उन्नीस वर्ष, बुध की सत्रह वर्ष, केतु की सात वर्ष और शुक्र की बीस वर्ष मानी गई है। जन्म कुण्डली के अनुसार जब कोई ग्रह खराब स्थान में बैठकर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है तब मानव को पीड़ा, कष्ट भोगने के लिए विवश होना पड़ता है।

किस ग्रह की शान्ति के लिए क्या पाठ, जप, श्रवण आदि करना चाहिए यह तालिका नीचे दी जा रही है।

ग्रह	आराधना	धारण	दान
सूर्य	हरिवंशपुराण-श्रवण	माणिक्य	गेहूं, गाय, गुड़, तांबा, सोना, लाल वस्त्र।
चन्द्रमा	शिव स्तुति	मोती	चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती।
मंगल	शिवस्तुति	प्रवाल	तांबा, सोना, गेहूँ, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केशर, कस्तुरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम।

बुध	अमावस्या व्रत	पन्ना	कांसी, हाथीदांत, हरा वस्त्र, मूंग, पन्ना, सुवर्ण, दासी, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस भोजन, घृत, सर्वपुष्प।
गुरु	अमावस्या व्रत	पुखराज	पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि छत्र।
शुक्र	गो-पूजा	हीरा	चाँदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, चीनी, गौ, भूमि, गन्ध-द्रव्य।
शनि	मृत्युंजय जप	नीलम	तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तुरी, सुवर्ण।
राहु	मृत्युंजय जप	फिरोजा	अभ्रक, लोह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्त धान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कम्बल, खंग।
केतु	मृत्युंजय जप	लहसुनिया	कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, वैदूर्य, काले पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र।

यदि पाठक चाहें तो वे स्वयं संबंधित ग्रह का मंत्र जप कर सकते हैं। बीज मंत्र के जप करने से विपरीत ग्रहों के प्रभाव में न्यूनता आती है और वे अनुकूल फल देने लगते हैं।

नीचे मैं प्रत्येक ग्रह से संबंधित मंत्र, बीज मंत्र तथा जप संख्या का विधान स्पष्ट कर रहा हूँ—

१. सूर्य (मंडल के मध्य में लाल गोलाकार)

मन्त्र—ॐ आ कृष्णेन राजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृत मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

बीज मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

जप : ७०००, समय उदयकाल।

२. **चन्द्रमा** (अग्निकोण में श्वेत, अर्धचन्द्र)

मन्त्र—ॐ उमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश-एष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानां राजा ॥ सोमाय नमः।

बीजमन्त्र—ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।

जप : ११०००, समय संध्याकाल।

३. मंगल (दक्षिण में लाल त्रिकोण)

मन्त्र—ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याअयम्। अपा रेतासि जिन्वति। भौमाय नमः॥

बीजमन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः॥

जप : १०००, समय दो घड़ी।

४. **बुध** (ईशानकोण में हरा, बाण)

मन्त्र—ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते ससृतेषामयं च अस्मिनत्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वेदेवा येजमानश्च सीदत॥ बुधाय नमः।

बीजमन्त्र—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

जप : १९०००, समय ५ घड़ी।

५. **गुरु** (उत्तर में पीला, अष्टदल)

मन्त्र—ॐ बृहस्पते अति यदयो अर्हाद द्युमद विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम। बृहस्पतये नमः॥

बीज मन्त्र—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥

जप : १९०००, समय सन्ध्या काल।

६. शुक्र (पूर्व में श्वेत, पंचकोण)

मन्त्र—ॐ अन्नात्परिश्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्य मिन्द्रिय विपान शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिद्र पयोमृतं मधु। शुक्रायनमः।

बीजमन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

जप : ६०००, समय सूर्योदय।

७. शनि (पश्चिम में काला, मनुष्य)

मन्त्र—ॐ शं नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः। शनैश्चराय नमः।

बीजमन्त्र—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः॥

जप : २३०००, समय सन्ध्या।

८. राहु (नैर्ऋत्यकोण में काला मकर)

मन्त्र—ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशश्चिष्ठया वृता। राहवे नमः।

बीज मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं राहवे रमः।

जप : १८०००, समय रात्रि।

केतु (वायव्यकोण में काला ध्वजा)

मन्त्र—ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। केतवे नमः॥

बीजमन्त्र—ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

जप : १७०००, समय रात्रि।

विधान—शास्त्रों के अनुसार सर्व प्रथम ग्रह शान्ति हेतु जिस ग्रह की उपासना करनी हो उसका बीजमन्त्र लिखकर उसका पूजन करना चाहिए और उसके बाद उसका मन्त्र जपना चाहिए।

स्वस्थ शरीर, आयु, यश, धन प्राप्ति तथा दुःख नाश के लिए वेद व्यास जी द्वारा वर्णित नवग्रह स्तोत्र का नित्य पाठ अत्यन्त लाभदायक माना गया है।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमो रिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युतकान्तिसमप्रभम् ॥
कुमारं शक्तिहस्तं त मगलं प्रणमाम्यहम् ।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिम बुधम् ॥
सौम्यं सौम्यगुणोपते तं बुधं प्रणामम्यहम् ।
देवानां च ऋषिणां चं गुरूं कांचनसन्निभम् ॥
बुर्कद्धभूतमं त्रिलोकस्य तं नमामि वृहस्पतिम् ।
हिमकुन्दमृणलाभं दैत्यानां परमं गुरूम् ॥
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भागर्वं प्रणमाम्यहम् ।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ॥
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ॥
सिंहिकागर्भम्सम्भूतं तं राहु प्रणमाम्यहम् ।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ॥
रौद्रं रौद्रात्कमं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।
इति व्यासमुखोदगितं यः पठेत् सुसमाहितः॥
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नानारीनृपाणां च भवेददुःस्वप्ननाशम् ॥
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।
ग्रहनक्षत्रजाः पीड़ास्तस्कराग्निसमुद्‌भवाः ॥
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

प्रत्येक साधक या पाठक किसी न किसी ग्रह से प्रभावित रहता ही है। मंगल शनि तथा राहु क्रूर ग्रह माने जाते हैं, तथा सूर्य और केतु विपरीत फल देने में विशेष सहायक होते हैं।

इन ग्रहों के प्रभाव से बाधाएँ, मानसिक परेशानियाँ, कार्य में विलम्ब, असफलता, मानसिक हानि, आर्थिक क्षति, बीमारी और कई प्रकार की

समस्याएँ नित्य पैदा होती हैं। जब इस प्रकार की स्थिति देखें तो जान लें कि किसी न किसी क्रूर पापी ग्रह का प्रभाव हमको विपरीत फल दे रहा है, अतः बुद्धिमानीपूर्वक इनका शमन कर लेना चाहिए।

सर्वसुलभ विघ्नहर नवग्रह यंत्र

जब जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाएँ और अड़चनें अनुभव होती हैं तब इस प्रकार का यन्त्र धारण कर लेना चाहिए। यह यन्त्र प्रत्येक प्रकार के विपरीत ग्रहों के प्रभाव को दूर करने में समर्थ होता है।

अनुभव में यह आया है कि विघ्नहर नवग्रह यन्त्र प्रत्येक बालक, स्त्री एवं पुरुष के लिए आवश्यक है। पति की उन्नति एवं सुखमय गृहस्थ जीवन के लिए भी यह यन्त्र प्रत्येक स्त्री के लिए आवश्यक माना गया है। यदि बालिका का विवाह नहीं हो रहा हो या सगाई, विवाह में बाधाएँ आ रही हों तो उसके लिए भी यह यन्त्र विशेष अनुकूल कहा जाता है। यदि घर में बीमारियों और परेशानियों ने डेरा जमा रखा हो तो यह यन्त्र तुरन्त धारण कर लेना चाहिए। यों भी मेरे अनुभव से प्रत्येक स्त्री, पुरुष और बालक को यह यन्त्र धारण किए रहना चाहिए, जिससे कि उसे जीवन में विशेष बाधाओं का सामना न करना पड़े।

यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावपूर्ण है, इसको धारण करने के बाद किसी भी प्रकार की उपासना जप या रत्न आदि धारण करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

आजकल रत्न अत्यन्त मँहगे हो गए हैं तथा उनकी परीक्षा तथा प्रामाणिकता भी संदिग्ध हो गई है। ऐसी स्थिति में यह यन्त्र विशेष कारगर है और यह यंत्र पूरे जीवन के लिए अनुकूल बना रहता है।

सुश्रुत के अनुसार बालकों पर आक्रमण करने वाले नव बाल ग्रह और भी हैं। वे दिव्य देहविशिष्ट हैं। इनमें से कुछ पुरुष और कुछ स्त्रियाँ हैं। इनके नाम हैं—१. स्कन्ध, २. स्कन्दापस्मार, ३. शकुनीग्रह, ४. पूतनाग्रह, ५. अन्धपूतनाग्रह, ६. शीतपूतना, ७. रेवती ग्रह, ८. मुखमन्तिकग्रह और ९. नैगमग्रह।

इस यंत्र को रविवार के दिन धूप देकर पुरुष की दाहिनी भुजा में तथा

स्त्री की बाईं भुजा में बांध देना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का बाधा प्रयोग किया जा सकता है। बालकों को यह यंत्र गले में पहनना चाहिए।

मयुरेशस्तोत्र: चिन्ता एवं रोग निवारण हेतु दुर्लभ स्तोत्र

शास्त्रों में कहा गया है कि भगवान गणपति समस्त विघ्नों को नाश करने, कार्य में सिद्धि देने वाले तथा जीवन में पूर्णता देने वाले हैं। इसलिए "कल्लौचण्डि विनायको" कहा गया है, अर्थात् कलयुग में दुर्गा एवं गणेश ही पूर्णता सफलता देने में सफल हैं।

विश्व के समस्त साधक इस बात पर एक मत हैं कि प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम गणपति का ध्यान या उनकी पूजा आवश्यक है। देवताओं ने भी गणपति की पूजा को सर्वप्रथम स्वीकार किया है, यही नहीं अपितु भगवान शिव ने भी कार्य की सफलता के लिए सबसे पहले गणपति की साधना को आवश्यक बताया है।

यों तो गणपति से संबंधित सैकड़ों, हजारों स्तोत्र हैं परन्तु इनमें "मयुरेशस्तोत्र" का महत्व सर्वोपरि है, यह स्तोत्र अपने आप में चेतन्य और मंत्र सिद्ध है अतः इसका पाठ ही पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

घर में आने वाली बाधाओं, बच्चों के रोग निवारण के लिए, घर में सुख शांति, उन्नति तथा प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए "मयुरेशस्तोत्र" को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, इन्द्र ने स्वयं इस स्तोत्र के द्वारा गणपति को प्रसन्न कर विघ्नों पर विजय प्राप्त की थी।

इस स्तोत्र का पाठ पुरुष और स्त्री समान रूप से कर सकते हैं। हमारे जीवन में प्रत्येक दिन का प्रारम्भ मयुरेशस्तोत्र से होना चाहिए।

विधि—सर्वप्रथम साधक को स्नान कर आसन पर बैठ जाना चाहिए, आसन ऊनी या सूती वस्त्र का हो सकता है, साधक को पूर्व की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। अपने सामने गणपति की मूर्ति या तस्वीर स्थापित कर लेनी चाहिए। खड़ी घाई इस प्रकार की पूजा या साधना किसी भी बुधवार से प्रारम्भ की जा सकती है।

सबसे पहले साधक या साधिका को भक्तिपूर्वक गणपति को प्रणाम करना चाहिए और निम्न ध्यान करना चाहिए।

सर्वं स्थलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुत गणपति सिद्धिप्रदं कामदम्॥
सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतरजठरं हस्तपद्मैर्दधानं
दन्तं पाशांकुशेष्टान्युरुकरविलसद्बीजपूराभिरामम्।
बालेन्दुद्योतमौलिं करिपतिवदनं दानपूरार्द्र गण्डं
भोगीन्द्राबद्धभूषं भजत गणपतिं रक्तवस्त्रांगरागम्॥

तत्पश्चात् गणपति के बारह नामों का स्मरण करना चाहिए। जिससे कि हम जीवन की पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें। यात्रा पर रवाना होते समय या प्रत्येक कार्य को करते समय भी इन बारह नामों का स्मरण करना सिद्धिदायक माना गया है।

सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजाननः
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

इसके बाद गणपति की पूरी पूजा होनी चाहिए। देवताओं के षोडश पूजन में निम्नलिखित उपचार माने गए हैं—

१. आवाहन, २. आसन, ३. पाद्य, ४. अर्घ्य, ५. आचमनीय, ६. स्नान, ७. यज्ञोपवीत, ८. गंध, ९. वस्त्र, १०. पुष्प, ११. धूप, १२. दीप १३. नेवैद्य, १४. ताम्बूल, १५. प्रदक्षिणा, १६. पुष्पांजली।

सावधानियाँ

१. गणपति की पूजा में तुलसी पत्र का प्रयोग सर्वथा निषिद्ध है।

२. गणपति को दूर्वादल अत्यंत प्रिय है।

३. अर्घ्य में जल के अतिरिक्त निम्न आठ वस्तुएँ होती हैं।

१. दही, २. दूर्वा, ३. कुशाग्र, ४. पुष्प, ५. अक्षत, ६. कुंकुम, ७. पीली सरसों और ८. सुपारी।

इन आठ वस्तुओं को एक पात्र में रखकर गणेशजी को अर्घ्य दिया जाता है।

४. जिन पदार्थों का अभाव हो उनके स्थान पर अक्षत का प्रयोग किया जाना चाहिए।

५. सभी देवताओं को पुष्प प्रिय हैं परन्तु निम्न प्रकारेण पुष्प निषिद्ध हैं।

(क) जो कीड़ों से दूषित हों,

(ख) बासी हों,

(ग) पेड़ या पौधे से नीचे गिरे हुए हों,

(घ) अधखिले पुष्प सर्वथा वर्जित हैं,

(ङ) देवता पर चढ़ा हुआ, बायें हाथ में रखा हुआ, पहनी हुई धोती के पल्ले में लाया हुआ अथवा जल से धोया हुआ पुष्प भी त्याज्य होता है। देवता लोग ऐसे पुष्प ग्रहण नहीं करते।

(च) पुष्प देवता पर चढ़ाते समय अधोमुख नहीं होना चाहिए।

(छ) फूल तोड़ने का कार्य स्नान करने से पूर्व किया जाना चाहिए। तथा तुलसी दल का चयन स्नान के बाद उचित है।

(ज) फूल को वस्त्र या हाथ में न लाकर पात्र विशेष में लाना चाहिए।

(झ) शुष्क और अपवित्र पुष्प-पूजा सर्वथा त्याज्य है।

(ञ) कुशा या दूर्वा से देवता पर जल छिड़कना पापमय माना जाता है। ऐसा जल वज्रपात तुल्य माना जाता है।

गणपति की पूर्ण पूजा कर साधक को चाहिए कि वह मयूरेशस्तोत्र का पाठ करे। यह स्तोत्र समस्त प्रकार की चिन्ताओं तथा समस्याओं को दूर करने वाला, समस्त प्रकार के भौतिक सुख, आर्थिक-व्यापारिक उन्नति, व्यापार में लाभ, राज्य कार्य में विजय तथा समस्त उपद्रवों का नाश करने में पूर्णतः समर्थ है।

स्त्री या बालक भी स्तोत्र का पाठ कर सकते हैं। किसी भी वर्ण या जाति का व्यक्ति इस पाठ को श्रद्धापूर्वक कर सकता है। स्त्रियों को चाहिए कि वह रजस्वला के दिन से सात दिन तक गणपति-पूजन का कार्य या मांगलिक कार्य में अशुद्ध मानी जाती हैं।

गणपति की पूजा में सुगन्धित द्रव्य तथा घी का दीपक विशेष महत्वपूर्ण है साधक को चाहिए वह नित्य अपनी पूजा में इस स्तोत्र को सम्मिलित कर ले। तथा सर्वप्रथम गणपति पूजन एवं मयूरेश स्तोत्र का पाठ करे। गायत्री स्मरण भी इसके बाद किया जाना चाहिए।

इसमें कोई संशय नहीं कि यह स्तोत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण त्वरित सफलतादायक, विघ्नों, बाधाओं और कठिनाईयों को दूर करने वाला, रोग निवारण, सफलता तथा जीवन में हर प्रकार के भौतिक-सुख सुविधाओं को प्रदान करने में समर्थ एवं सर्वश्रेष्ठ है।

चिन्ता एवं रोग निवारण के लिए मयूरेश स्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच

पुराणपुरुषं देवं नाना क्रीडाकरं मुदा।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्।
नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम्॥
इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं देवं सर्वरूपधरं विभुम्॥
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्।
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्॥
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्॥
समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्।
अनन्त विभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

इदं बह्माकरं स्तोत्रं सर्वेषाम्प्रणाशनम् ।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम् ।
कारागृह गतानां च मोचनं दिन्सप्तकात् ।
आधिव्याधिहरो चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम् ॥

यों तो वर्तमान जीवन में लाखों प्रकार की बीमारियाँ हैं, और लाखों प्रकार की औषधियाँ भी हैं । इस स्तम्भ में बीमारियों व दवाओं का विवरण नहीं है अपितु कुछ ऐसी दुर्लभ और गोपनीय औषधियों का विवरण होगा जो कि अन्यत्र संभव नहीं है। लेखक वर्षों तक दुर्लभ योगियों, साधुओं और सन्यासियों के सम्पर्क में रहा है, और उनसे कई ऐसी दुर्लभ औषधियों का ज्ञान हुआ है जिनका उल्लेख किसी भी चिकित्सा ग्रंथ में संभव नहीं है ।

यह स्तम्भ प्रत्येक गृहस्थ के लिए अनुकूल रहेगा वे इस प्रकार से अपने परिवार और समाज का भला कर सकेंगे, इस भावना को ध्यानमें रखकर समय-समय पर गोपनीय एवं दुर्लभ औषधियों का विवरण दिया जायेगा ।

१. **खाँसी**—कई कारणों से व्यक्ति को खाँसी हो जाती है और खाँसते-खाँसते बुरा हाल हो जाता है, इसके लिए महात्मा ने सरल औषधि बनाई थी जो कि इस प्रकार है—

नागरबेल के पत्ते (सामान्य भाषा में पान) पर फिटकरी पकाकर उसका चूर्ण नागरबेल के पत्ते पर रखकर उसे मुँह में दबा लें, उससे जो रस या लार बने उसे बाहर नहीं थूकें अपितु गले के अन्दर जाने दें । एक या दो बार करने से खाँसी पूरी तरह समाप्त हो जाती है ।

२. **पीलिया**—नींबू के दो टुकड़े कर दें तथा उसमें से बीज निकाल दें फिर कटे हुए नींबू पर फिटकरी को पकाकर उस को पीस कर जो पाउडर बने उसे उस कटे हुए नींबू पर तब तक डालते रहें जब तक कि नींबू का रस उसे सोखता रहे, जब सोखना बन्द कर दे। उस नींबू को अच्छी तरह से चूस लें । इसी तरह एक-दो बार करने से पीलिया पूरी तरह समाप्त हो जाता है ।

महावीर हनुमान शारीरिक शक्ति के प्रतीक हैं, वे अतुलनीय पराक्रमी बलवान और साहसी हैं, तथा कलयुग में उनकी साधना पूर्णतः फलदायक है। हनुमानजी दुष्टशक्तियों और जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाले हैं, उनकी शारीरिक शक्ति के सामने विपरीत परिस्थितियाँ और बाधाएँ उसी प्रकार दब जाती हैं जिस प्रकार पर्वत के नीचे छोटा-सा तिनका दबकर समाप्त हो जाता है ।

हनुमान, महावीर, बजरंग के साथ उन्हें वायु-पुत्र भी कहा जाता है। महाभारत युद्ध में अर्जुन ने अपनी ध्वजा पर उनके चिन्ह को अंकित करके वायु अर्थात् प्राणों पर विजय प्राप्त की थी। अतः उनको वायु-पुत्र कहा जाता है। प्राणों पर अर्थात् चंचल चित्त पर विजय प्राप्त करने के लिए और मन को पूर्णतः नियंत्रण में करने के लिए भी हनुमान साधना सर्वोपरि मानी गई है, इनकी कृपा से मन और प्राण स्थिर होते हैं तथा साधना शक्ति के साथ-साथ साधक की मन-शक्ति भी बढ़ जाती है ।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक 'जुंग' के अनुसार मानव की मौलिक भावनाओं का स्रोत उसका मन होता है। क्योंकि मन से ही गुप्त शक्ति का विकास होता है, अतः मानव-जीवन भावनाओं तथा विचारों को बार-बार मन में दोहराता है, वह जिस प्रकार की मानसिक स्थिति में बना रहता है, उसका वैसा ही स्वभाव बन जाता है। अतः बजरंग बाण में पूरी श्रद्धा रखकर इसे बार-बार दोहराने से मानव में हनुमान की शक्तियों का विकास होने लगता है और मन की संकल्प-शक्ति में वृद्धि होती है, साथ ही साथ कष्टों, बाधाओं और परेशानियों से जूझने की शक्ति जागृत होती है, फलस्वरूप उनमें निर्भिकता और साहस आ जाता है ।

सैकड़ों पुस्तकों में बजरंग बाण के महत्व को बताया गया है, सैकड़ों लोगों का व्यक्तिगत अनुभव है कि बजरंग बाण का नियमित पाठ बाधाओं और आने वाली कठिनाईयों को दमन करने में सक्षम है । तांत्रिक, यांत्रिक क्षेत्र में भी उसका महत्वपूर्ण स्थान है, ऊँचे से ऊँचे साधक एवं योगियों ने भी एक स्वर से स्वीकार किया है कि यह स्तोत्र स्वयं ही मन्त्रमय है, और इसका नित्य पाठ ही अपने आप में आश्चर्यजनक सफलता देने वाला है।

शारीरिक व्याधि, घर में भूत प्रेत की बाधाएं, मानसिक परेशानियां आदि के निवारण में यह स्तोत्र रामबाण की तरह है। जिसके घर में इसका नित्य पाठ होता है उसके घर में साक्षात् महावीर विराजमान रहते हैं और किसी भी प्रकार की कोई बाधा उसके घर में व्याप्त नहीं हो पाती है।

पूजा कैसे करें ?

साधक को चाहिए कि वह अपने सामने हनुमान जी का चित्र रख ले, और पूरी भावना, श्रद्धा तथा आत्मविश्वास के साथ उनका ध्यान करे, यह विचार करे कि हनुमान जी की दिव्य और बलवान शक्तियाँ मेरे शरीर में प्रवेश कर रही हैं। मेरे चारों ओर अणु उत्तेजित हो रहे हैं और सशक्त वातावरण मुझे और मेरी मन-शक्ति को बढ़ाने में सहायक हो रहा है। धीरे-धीरे इस प्रकार का अभ्यास करने से साधक के मन में शक्ति का स्रोत खुलने लगता है और एकाग्रता पर उसका नियन्त्रण होने लगता है। जब ऐसा अनुभव हो तब बजरंग बाण की सिद्धि समझनी चाहिए।

इसके बाद हनुमान जी की मूर्ति या चित्र पर चन्दन पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए और श्रद्धायुक्त प्रणाम कर नीचे लिखी स्तुति करनी चाहिए।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

अर्थात् जो अतुल बल के धाम सोने के पर्वत के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन के लिए अग्निरूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी और श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त हैं उन पवन पुत्र श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

इस प्रकार की स्तुति कर साधक को चाहिए कि वह अपने पास ही दाहिने तरफ एक आसन बिछा दें, जैसा कि शास्त्रों में उल्लिखित है कि जब भी बजरंग बाण का पाठ किया जाता है। श्री हनुमान जी स्वयं आसन पर आकर बैठते हैं।

हनुमान जी की पूजा में इत्र, सुगन्धित द्रव्य एवं गुलाब के पुष्पों का

प्रयोग निषिद्ध है। साथ ही साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण किये बैठे। यदि साधक लाल वस्त्र की लंगोट पहने तो ज्यादा उचित माना गया है।

शास्त्रों के अनुसार स्त्रियों को बजरंग बाण का पाठ नहीं करना चाहिए। परन्तु वे हनुमान जी की मूर्ति के सामने अगरबत्ती व दीपक जला सकती हैं। और उन्हें गुड़ का भोग लगा सकती हैं।

साधक को चाहिए कि वह बजरंग बाण कंठस्थ कर लें। यों नित्य पाठ करने में यह स्तोत्र स्वयं ही कंठस्थ हो जाता है। प्रातःकाल या रात्रि को सोने से पूर्व भी इस स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है, परन्तु जब भी इसका पाठ करे, पृथ्वी पर ऊनी वस्त्र पर आसन बिछाकर मन में हनुमान का ध्यान कर पाठ करें।

यदि साधक यात्रा पर हो तब भी वह रेल पर यात्रा के समय इसका पाठ कर सकता है, धीरे-धीरे साधक अनुभव करेगा कि वह पहले की अपेक्षा ज्यादा सशक्त है, विरोधियों पर हावी हो रहा है, उसका मन ज्यादा एकाग्र हो रहा है और उसके मन में एक नई चेतना और एक नया जोश और एक नई शक्ति का प्रादुर्भाव हो रहा है।

बच्चों की नजर उतारने, शान्त और गहन निद्रा के लिए कष्ट और संकट के समय रात्रि को अकेले यात्रा करते समय भूत बाधा दूर करने तथा अकारण भय को दूर करने के लिए यह स्तोत्र आश्चर्यजनक सफलता-दायक है। किसी महत्वपूर्ण कार्य पर जाने से पूर्व भी यदि इसका पाठ किया जाए तो उसे निश्चय ही सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

बजरंग बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करे सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्धि करे हनुमान ॥
जय हनुमंत संत-हितकारी।
सुनि लीजै प्रभु बिनय हमारी ॥
जन के काज बिलम्ब न कीजे। आतुर धाय महासुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु के पारा। सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥

आगे जाय लंकिनी रोका। मारहु लात गई सुरलोका॥
जाय विभिषन का सुख दीन्हा। सीता निरखी परम पद लिन्हा॥
बाग उजारी सिंधु मह बोरा। अति आतुर जम कातर तोरा॥
अक्षय कुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥
अब विलंब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तरजामी॥
जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर ह्वै दुख करहु निपाता॥
जय हनुमान जयति बल सागर। सुर-समूह सम अति भट नागर॥
ॐ हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहि मारु वज्र की कीले॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सनुमंत कपीसा। हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥
जय अंजनिकुमार बलवंता। संकरसुवन बीर हनुमंता॥
वदन कराल काल कुल घातक। राम सहाय सदा प्रतिपालक॥
भूत प्रेत पिसाच निसाचर। अग्नि बेताल काली मारी मर॥
इन्हें मारु तोहे सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद राम की॥
सत्य होहु हरि समर्थ पाई कै। रामदूत धरू मारू धाई कै॥
जय जय हनमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहि जानत कुछ दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग गिरीगृहमाहीं। तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं॥
जनकसुता हरि दास कहावौ। ता की सपथ विलम्ब न लावौ॥
जय जय धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा॥
चरनपकरि कर जोरि मनावौं। यहि ओसर अब केहि गोहरावौं॥
उठउठ चल तोहि राम दोहाई। पाय परो कर जोरि मनाई॥
उचम चम चम चमचाल चलंता। हनु हन हनु हनु हनुमंता॥
ॐ हैं हैं हांक देत कपि चंचल। सं सं सहमि पराने खल दल॥
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय अनंद हमारो॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहो फिरि कवन उबारै॥
पाठ करैं बंजरंग बाण की। हनुमत रच्छा करे प्राण की॥
यह बजरंग बाण जो जापै। तासौं भूत प्रेत सब कांपै॥
धूप देय जो जपै हमेसा। ताके तन नहीं रहै कलेसा॥

उर प्रतीति दृढ़ ह्वै पाठ करे धरि ध्यान।
बाधा सब हर करैं सब काम सफल हनुमान॥

लक्ष्मी साधना

भगवती लक्ष्मी धन-सम्पत्ति की अधिष्ठाता देवी है। तंत्रशास्त्र में वर्णित दस महाविद्याओं में ये कमलात्मिका रूप में प्रतिष्ठित हैं। वे आदि, मध्य, अन्तहीन सम्पूर्ण सृष्टि की कारण स्वरूपा तथा भगवान विष्णु की आर्धांगिनी हैं। कमला, पदमालया, पदमा, इन्दिरा, क्षीराब्धितमया, सिन्धुजा, विष्णुप्रिया आदि अनेक नाम रूपों वाली हैं। भगवान विष्णु जब अवतार ग्रहण करते हैं तब-तब भगवती लक्ष्मी भी उनकी धर्मपत्नी के रूप में अवतरित होती हैं। रामावतार में सीता तथा कृष्णावतार में रुक्मणि के रूप में भगवती लक्ष्मी ही अवतरित हुई थी।

भगवती लक्ष्मी तीनों लोक, चौदहों भुवन में सर्वत्र व्याप्त हैं। स्वर्ग लक्ष्मी, राज्य लक्ष्मी, यश लक्ष्मी, गृह लक्ष्मी, गृह लक्ष्मी, भाग्य लक्ष्मी आदि अनेक रूप हैं। यद्यपि भगवती अनादिरूपा है, परन्तु सगुणोपासना की धारा में उनकी उत्पत्ति समुद्र के गर्भ से मानी गई है। भगवती लक्ष्मी के प्रकट होने के विषय में पौराणिक मतानुसार संक्षिप्त वृतान्त यह है कि एक बार अमृत प्राप्ति के लिए देवताओं और दैत्यों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया। समुद्र में कुल चौदह रत्न प्रकट हुए। भगवती लक्ष्मी भी अलौकिक रूप में प्रकट हुई। समुद्र से निकले रत्नों को देवताओं और राक्षसों ने आपस में बाँट लिया। लक्ष्मी भगवान विष्णु को प्राप्त हुई, और तबसे उन्हीं के साथ रहते हुए क्षीरसागर में शेष कन्या पर लेटे हुए अपने पति विष्णु जी के चरण कमलों को दबाती रहती हैं, अतः उन्हें पदमा, पदमालया, कमला, कमलासना आदि नामों से पुकारा जाता है। यथार्थ में लक्ष्मी परम पुरुष की पराशक्ति है। अस्तु वे ब्रह्माण्ड जन्म स्थिति एवं प्रलय की कारणरूपा भी हैं।

लक्ष्मी-महिमा

लक्ष्मी की अनिवार्यता को प्रत्येक व्यक्ति अनुभव करता है क्योंकि संसार का प्रत्येक कार्य इसी से सम्पन्न होता है। यह जीवन की प्रथम

आवश्यकता है। व्यक्ति का ही नहीं वरन् समाज और राष्ट्र का उत्थान भी इसी पर निर्भर करता है।

जिस घर में लक्ष्मी का निवास नहीं होता, वहीं दुःख दारिद्रय, कलह-क्लेश, मनमुटाव, निराशा-असंतोष व विभिन्न प्रकार की समस्याओं का उत्पन्न होना माना जाता है। लक्ष्मी का अभाव दुर्भाग्य का सूचक माना जाता है और लक्ष्मी के अनुग्रह को ही सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। भर्तृहरि के अनुसार, पण्डित, गुणज्ञ विद्वान, कुलीन व रूपवान वही है, जिनके पास लक्ष्मी है। वेद व्यास ने महाभारत के उद्योग पर्व में यहाँ तक कहा है कि—"पुरुषाधनं वधः" लक्ष्मी का अभाव मनुष्य के लिए मृत्यु का चिह्न है। नीति वाक्य भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं—"सर्व कष्टा दरिद्रता" कि दरिद्रता ही सब कष्टों की जननी है। अतः लक्ष्मी का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है।

परन्तु लक्ष्मी किसे प्राप्त होती है? यह एक जटिल प्रश्न है, धन अत्यन्त परिश्रम से प्राप्त होता है। भाग्य का उदय अकस्मात नहीं हो जाता है। उसके पीछे त्याग, लगन, परिश्रम का हाथ अवश्य ही रहता है। लेकिन सभी को अपने परिश्रम का उचित फल मिल जाए ऐसा संभव नहीं है। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि किसी व्यक्ति के श्रेष्ठ प्रतिभावान, परिश्रमी, लगनशील होने पर भी उसे अपने परिश्रम का यथेष्ट फल नहीं मिल पाता, तब यह मानने को विवश होना पड़ता है कि "भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न पौरुषम्" भाग्य ही सर्वत्र फल देता है, विद्या और पौरुष भाग्य के बिना फलीभूत नहीं होते। ऐसी स्थिति में लक्ष्मी साधना ही दैव को इस हेतु अनुकूल बनाने का उत्तम साधन है।

मेरे पास मिलने सैकड़ों लोग आते रहते हैं, उनमें अधिकांश व्यक्तियों के प्रश्न धन-सम्पत्ति विषय से संबंधित ही होते हैं कि मुझे अपने परिश्रम के अनुसार धन लाभ नहीं हो रहा है। व्यापार में उपेक्षित धन लाभ नहीं हो रहा है। पैसे की तंगी है, घर में बरकत नहीं हो रही है। घाटा हो रहा है, कर्जा चढ़ गया है इत्यादि! मुझे प्राप्त होने वाले नब्बे प्रतिशत पत्रों में भी धनाभाव से पीड़ित व्यक्तियों का ही जिक्र होता है। मैंने उन लोगों को उनकी सुविधानुसार लक्ष्मी से संबंधित प्रयोग बताए

हैं, बाद में यह पाया कि वे मन्त्र-तन्त्र सर्वथा सफल सिद्ध हुए हैं। आज उनमें सभी व्यक्ति अर्थोपार्जन के क्षेत्र में मनोवांछित सफलता प्राप्त कर रहे हैं। लक्ष्मी प्राप्ति के ऐसे ही कुछ अनुभूत मन्त्र, यन्त्र, स्तोत्र, कवच आदि का उल्लेख कर रहा हूँ ताकि जनसाधारण भी इससे लाभ उठा सके तथा आर्थिक, सांसारिक क्षेत्र में प्रविष्ट हो कर, प्रगति कर सके।

भगवती लक्ष्मी की उपासना केवल धन प्राप्ति के लिए ही नहीं की जाती, अपितु समस्त देवी उपासनाओं के मूल रूप में भी की जाती है। भारत के विभिन्न प्रान्तों में व्याप्त श्रीविद्या की उपासना भी इसी उपासना का एक रूप है। इसलिए साधक को चाहिए कि यदि वह धन की लालसा न भी रखता हो तब भी महालक्ष्मी की उपासना से विमुख न होवे। भगवती लक्ष्मी की उपासना सभी प्रकार से मंगलकारी है।

एकाक्षर लक्ष्मी बीज मन्त्र

महालक्ष्मी का प्रधान बीज मन्त्र श्रीं है, जिसका प्रयोग सर्वत्र किया जाता है। इसे लक्ष्मी बीज अथवा श्री बीज भी कहा जाता है। श, र, ई, अनुस्वार आदि चार स्वर-व्यंजन शामिल हैं।

—श……………महालक्ष्मी

—र……………धन-सम्पत्ति

—ई……………तुष्टि

—अनुस्वार………दुःख हरण

नाद का तात्पर्य विश्वमाता। इस प्रकार श्रीं का अर्थ हुआ, धन, सम्पत्ति, तुष्टि, पुष्टि की अधिष्ठात्री माता महालक्ष्मी तेरे दुःखों का नाश करें।

इस एकाक्षर लक्ष्मी बीज मन्त्र के विनियोग, ध्यान आदि इस प्रकार हैं—

विनियोग—ॐ अस्य श्री लक्ष्मीबीज मन्त्रस्य भृगु ऋषिः निवृच्छन्दः श्री लक्ष्मीदेवता मम् श्राप्तये जपे विनियोगः।

ध्यान—

ॐ कांत्या कांचन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।

हस्तोक्षिप्त हिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानश्रियम ।।

बिभ्राणां वरमब्जुग्ममभय हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम् ।
क्षौमाबद्धनितम्ब विम्बललितां वन्देरविन्दस्थिताम् ॥

मन्त्र

श्रीं

इस पुरश्चरण में दस लाख मन्त्रों का जप होता है । इसके दशांश के क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन करें । हवन में कमल के पुष्पों का प्रयोग करने से मन्त्र सिद्धी शीघ्र ही प्राप्त होगी । मन्त्र सिद्ध होने पर साधक इसका कभी भी प्रयोग कर सकता है । यह एकाक्षर लक्ष्मी बीज मन्त्र है, जिससे लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होती है ।

चतुरक्षर लक्ष्मी बीज मन्त्र

'शारदा तिलक' नामक तन्त्रग्रन्थ के अनुसार लक्ष्मी का चार अक्षरों वाला बीजमन्त्र एवं उसका ध्यान इस प्रकार है ।

ध्यान—

माणिक्य प्रतिमप्रभां हिमनिभैस्तु गँश्चतुभिगजैं,
हँस्ताग्राहितरत्नकुंभसलिलैंरासिच्यमाना मुदा ।
हस्ताब्जैंर्वरदमनमम्बुज युगा भीतिर्दधानां हरेः,
कान्तां कांक्षितपारिजात लतिकां वदे सरोजासनाम् ।

मन्त्र

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं

इसके पुरश्चरण में बारह लाख मन्त्रों का जप करें ।

अन्य सारी विधियाँ व विनियोग एकाक्षर लक्ष्मी बीज मन्त्र के अनुसार ही है ।

दशाक्षर लक्ष्मी मन्त्र

विनियोग—

ॐ अस्य श्री लक्ष्मी मन्त्रस्य दक्ष ऋषिः विराट् छन्दः
श्री लक्ष्मीर्देवता सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ।

ध्यान—

आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती,
दान पद्मयुगाभये च वपुषा सोदामिनी सन्निभां ।

मुक्ताहार विराजमान पृथु लातु गस्तोनदभासिनी,
पायाद्वः कमला कटाक्ष कटाक्ष विभ वैरान दर्धात हरिम् ।

मन्त्र

ॐ नमः कमल वासिन्यै स्वाहा ।

इसके पुनश्चरण मे दस लाख मन्त्रों का जाप करें तथा इसके दशांश के क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन करे । इससे यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा ।

द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र

विनियोग

ॐ अस्य श्री महालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिःगायत्री छंदः
श्री जगन्माता महालक्ष्मीर्देवता श्री बीजम सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः

ध्यान

अक्षरस्यक्षरशुगदेषुकुलिशं पद्मं कुण्डिकां,
दण्ड शक्तिमासि च चर्मजलजं घंटां सुराभाजमानम् ।
शूल पाशसुदर्शने च दधतीहस्तैः सरोजस्थिताम् ॥

मन्त्र

ॐ एकं ह्रीं क्लींह सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ।

इसका पुरश्चरण बारह लाख मन्त्र जप का है । जप करने के पश्चात उस जप संख्या के दशांश के क्रम में हवन, तर्पण, मार्जन, ब्रह्मभोजन करें । तभी मन्त्र सिद्ध होगा ।

सप्त दशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र

विनियोग

ॐ अस्य श्री महालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः श्री महालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजम् नमः शक्ति सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ध्यान

ॐ सिंदूरारुणकांतिमब्जवसति सौन्दर्यवारांनिधिम् ।
कोटी रांगद हार कुंडल कटी सूत्रादिभिर्भूषिताम् ॥

हस्ताब्जैर्वंसुपत्रमब्जयुगला दर्शो वहन्ति परामावीतां परिचारिकाभिरनिश ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः ॥

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ।

इस महालक्ष्मी का पुरश्चरण एक लाख मन्त्र का है । तत्पश्चात दशांश के क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन करें । पूर्णरूप से तभी यह मन्त्र सिद्ध होगा ।

सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्धलक्ष्मी मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजम् ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् कम सर्वक्लेश पीड़ा परिजारार्थम् सर्वदुखदारिद्र्यनाशनार्थम् सर्वकार्यसिद्धयर्थम् च श्री सिद्धलक्ष्मी मन्त्र जपे विनियोग ।

ध्यान

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम् ।
त्रिनेत्रां खड्ग त्रिशूल पद्मचक्रगदाधारम् ॥
पीताम्बरधरं देवीं न नालकारभूषिताम् ।
तेजः पुंजधराम श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारीकाम् ॥

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः ।

इस सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख मन्त्र जप का है । इसके बाद हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन करना चाहिए ।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र

विनियोग

ॐ अस्य श्री ज्येष्ठ लक्ष्मी मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अष्टि छंदः ज्येष्ठा लक्ष्मीर्देवता ह्रीं बीजम् श्रीं शक्तिः ममा भीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान

उघद्भास्कर सन्निभास्मितमुखी रक्ताम्बरा लेकना ।
सत्कुंभम् धनभाजनम् सृणिमथोपाश करैर्बिभ्रति ।
पद्मस्था कमलेक्षणा दृढ़कुचा सौन्दर्यवारनिधिः ।
ध्यातव्या सकमलाभिलाषफलदा श्री ज्येष्ठा लक्ष्मीरियम्

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मी स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः

एक लाख मन्त्र जपने से इसका पुरश्चरण होता है, मन्त्र जप के पश्चात दशांश के क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन करें ।

वसुधा लक्ष्मी मन्त्र

विनियोग

ॐ अस्य श्री वसुधासंज्ञक ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः निचृद्-गायत्री छन्दः वसुधा श्री देवता ग्लौं बीजम् श्री शक्ति ममाभीष्ट प्राप्त्यै जपे विनियोगः ।

ध्यान

कल्पद्रुमाधो मणिवेदिकायां समास्थिते वस्त्रविभूषणाढ्ये ।
भर्मिश्रियौ वांछितवामदक्ष संचितयेद्देव मुनीन्द्र वन्द्ये ।

मन्त्र

ॐ ग्लौं श्री अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नम् प्रदापय स्वाहा श्री ग्लौं ॐ ।

इसका पुरश्चरण एक लाख मन्त्र जप है । मन्त्र जप के बाद जप संख्या का क्रमशः दशांश हवन, तर्पण मार्जन, ब्राह्मण भोजन करें, इससे ही मंत्र की सिद्धि प्राप्त हो सकेगी । मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद ही मन्त्र का प्रयोग करना श्रेयस्कर है ।

महालक्ष्मी गायत्री

भगवती महालक्ष्मी का गायत्री मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्

लक्ष्मी साधना के समय उपरोक्त महालक्ष्मी गायत्री का जप अवश्य

करते रहना चाहिए। इससे साधना में अत्यन्त तीव्रगति से प्रगति होती है, तथा उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

टिप्पणी—किसी भी मन्त्र को प्रयोग में लाने से पूर्व उसको विधिवत् पुरश्चरण करके सिद्ध अवश्य कर लेना चाहिए। तभी वह मन्त्र पूर्णरूपेण फलदायक सिद्ध होगा। इस हेतु मन्त्र जप के लिए जितनी मन्त्र संख्या निर्दिष्ट हो सर्वप्रथम उतना जप करें। तत्पश्चात् उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करवाएं। तभी इस मन्त्र का पुरश्चरण पूरा होगा और वह सिद्ध हो जाएगा। लेकिन यदि कोई व्यक्ति हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन आदि कराने में असमर्थ हो तो उसे जप संख्या पूरी करनी चाहिए और निर्दिष्ट संख्या का दशांश और जप करना चाहिए।

यह सभी लक्ष्मी प्राप्ति के लिए विशेष अनुकूल एवं प्रभावपूर्ण है। इसमें से किसी एक को विधिवत् सिद्ध कर लेने के बाद उसका नित्य १००० बार अथवा कम से कम १०८ बार जप करना चाहिए। इसे समस्त प्रकार के संकटों से मुक्ति प्राप्त होगी तथा जीवन में निरन्तर सर्वतोमुखी उन्नति होती रहेगी। शरीर स्वस्थ रहेगा तथा सर्वत्र यश-सम्मान, लोकप्रियता प्राप्त होगी। धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि सांसारिक सुखों में वृद्धि होगी तथा जीवन में फिर कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं रहेगा।

सर्वसिद्धिदायक महालक्ष्मी यन्त्र

यह सर्वश्रेष्ट लक्ष्मी यन्त्र है। प्राचीन ग्रन्थों में इसकी अत्यन्त प्रशंसा की गयी है। इसके स्वरूप के विषय में कहा गया है—

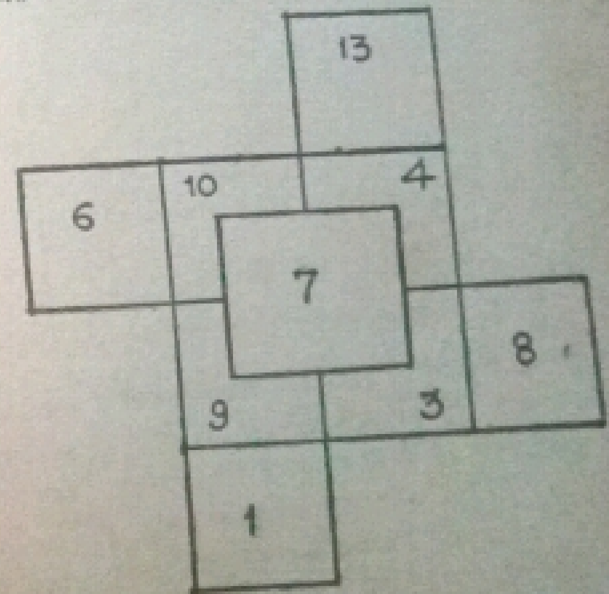
षट्कोणं वसुपुत्रं च कमलं भूपुरान्वितम्।
सम्प्रोक्तं कमलायन्त्रं श्री बीजेने समन्वितम् ॥

इस निर्देश के अनुसार इस लक्ष्मी यन्त्र की आकृति बनेगी जो उसमें मध्य में श्री बीज से युक्त षटकोण होगा, तत्पश्चात उसको घेरता हुआ अष्टदल होगा और बाहर तीन रेखाओं से बना चार दलों वाला भूपुर होगा।

सर्वप्रथम इस यन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त में स्वर्ण, रजत अथवा

ताम्रपात्र पर उत्कीर्ण करवावें, तत्पश्चात् उसकी विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा करवाकर इसे अपने पूजागृह अथवा व्यापार स्थान में स्थापित करें। इसका नित्य धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन तथा इसके सम्मुख ॐ श्री महालक्ष्मी नमः मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए। इससे भगवती लक्ष्मी अत्यन्त प्रसन्न होंगी तथा उनकी अनुकम्पा से आर्थिक क्षेत्र में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति होगी। समस्त सांसारिक सुख प्राप्त होंगे तथा जीवन में किसी भी वस्तु का अभाव न रहेगा। इस यन्त्रराज की यह विशेषता है कि इसे जिस स्थान पर स्थापित किया जायेगा वहाँ पर कभी घटी न पड़ेगी। अतः इसे गल्ले अथवा तिजोरी में स्थापित कर दें।

इस यन्त्र को विधिवत् सिद्ध करने के पश्चात्, किसी शुभ मुहूर्त में अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए अथवा स्वर्ण रजत या ताम्रपात्र पर उत्कीर्ण करवाना चाहिए।



यन्त्र का नित्य धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन एवं लक्ष्मी स्त्रोत का पाठ अवश्य करते रहना चाहिए। प्रभाव से धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि समस्त

सुखों में वृद्धि होती है तथा हर प्रकार के दुःख दूर होते हैं। शास्त्रों के अनुसार यह यन्त्र जहाँ पर रहता है उस स्थान को लक्ष्मी कभी नहीं त्यागती वरन् स्थिर होकर रहती है।

यह यन्त्र समस्त प्रकार के आर्थिक संकटों, विपत्तियों, बाधाओं का नाश करने में समर्थ है। आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए यह रामबाण है।

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को दीपावली की रात्रि में अष्टगंध की स्याही से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर बनाकर इसके चारों ओर ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मी मन्त्र लिखें तथा इसे गुगल की धूप देकर और महालक्ष्मी मन्त्र से १०००८ बार अभिमन्त्रित करके सिद्ध कर लें। इस महा सर्वतोभद्र यंत्र के प्रभाव से साधक को जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में यश, सम्मान, सफलता प्राप्त होगी और जीवन में कभी धन का अभाव नहीं रहेगा। इस यंत्र को रजत पत्र पर उत्कीर्ण करवा कर भी स्थापित किया जा सकता है। जिस घर में यह

यंत्र हो वहां भूत प्रेत नहीं आते, अन्य तांत्रिक मन्त्रों का प्रभाव नहीं होता।

लक्ष्मी स्तोत्र

ईश्वर उवाच

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथात्वम् सुस्थिरा कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्री पद्मधारिणी॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मी सपूज्य यः पठेत।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥

जो व्यक्ति लक्ष्मी पूजन के समय लक्ष्मी जी के बारह नाम वाले इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके यहाँ भगवती लक्ष्मी स्थिर होकर रहती है तथा उसके स्त्री, पुत्र आदि निरन्तर उन्नति करते रहते हैं।

इसी प्रकार लक्ष्मी जी के अष्टोत्तर शतनाम, सहस्त्रनाम आदि स्तोत्र भी हैं।

लक्ष्मी कवच

विनियोग

ॐ अस्य सर्वैश्वर्यप्रदास्यास्य लक्ष्मीकवचस्तोत्रस्य विधिः ऋषिः पंक्तिश्छन्दः पद्मालया देवता सिद्धैश्वर्यजपेष्वेव विनियोगः।

कवचम्

मस्तकं पातु मे पद्मा कण्ठं हरिप्रिया।
नासिकांपातु मे लक्ष्मीः कमला पातु लोचनम्॥
केशान केशवकान्ता च कपाल कमलालया।
जगत्प्रसूर्गण्डयुग्म स्कन्धं सम्पत्प्रदा सदा॥
ॐ श्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा पृष्ठ सदावतु।
ॐ श्रीं पद्मालयायै स्वाहा वक्षः सदावतु॥
पातु श्रीमम ककालम् बाहुयुग्म च ते नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यैनमः पादौ पातु मे सततं चिरम्॥
ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मायै स्वाहा सर्वांगम् पातु मे सदा।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा माम् पातु सर्वतः॥

यह सर्वैश्वर्य प्रदायक लक्ष्मी कवच है, जो सम्पूर्ण दुःखों को दूर करने वाला, धन सम्पत्ति ऐश्वर्य प्रदान करने वाला तथा समस्त शत्रुओं का मर्दन करने वाला है। मनुष्य इसे विधिपूर्वक कंठ में अथवा दाहिनी भुजा में धारण कर सकता है। वह सर्वत्र विजयी होता है। महालक्ष्मी उसके घर को कभी नहीं त्यागती, बल्कि प्रत्येक जन्म में छाया की भाँति उसके साथ रहती है। इस लक्ष्मी कवच को धारण करने से साधक की लक्ष्मी साधना में आने वाली विपत्ति, बाधाओं से रक्षा होती रहती है। इस महालक्ष्मी कवच का पाठ किए बिना जो भगवती महालक्ष्मी के मन्त्र का जप करता है, उसके लिए करोड़ों की संख्या में जप करने से भी लक्ष्मी मन्त्र सिद्धि-दायक नहीं होता। यह परमसिद्ध लक्ष्मी कवच अत्यन्त दुर्लभ है। मुझे यह अपने गुरुदेव से आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुआ था।

टिप्पणी—तन्त्र ग्रंथों में लक्ष्मी प्राप्ति हेतु अनेक यंत्र, मंत्र, स्तोत्रों का उल्लेख मिलता है, लेकिन विस्तार भय के कारण उन सभी का विवरण नहीं दिया गया है। इस लेख में मैंने केवल उन्हीं अनुभव सिद्ध तान्त्रिक प्रयोगों का विवरण दिया है। जो सहस्त्रों बार के परीक्षण में सत्य सिद्ध हुए हैं। ये लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अचूक है, अमोघ है। इनका विधिवत् प्रयोग कभी असफल नहीं होता है। मैंने इनका जब भी प्रयोग किया अथवा करवाया है, तब अभीष्ट कार्य की सिद्धि अवश्य हुई है।

साधना काल

लक्ष्मी साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए उसके उचित साधना काल का चयन अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि मैंने यह देखा है कि शुभ एवं अनुकूल मुहूर्त में साधना प्रारम्भ न करने से साधना की सम्पन्नता में अत्यन्त विघ्न आते हैं तथा मनोवांछित कार्य की सिद्धि भी नहीं हो पाती है। अतः हम पाठकों के लाभार्थ लक्ष्मी साधना के लिए उपयुक्त मास, पक्ष, तिथि, बार, नक्षत्र आदि का वर्णन कर रहे हैं ताकि पाठक इनके अनुसार अपने लिए शुभ मुहूर्त का निर्णय करके लक्ष्मी साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

मास—चैत्र, भाद्रपद, कार्तिक, माघ

पक्ष—शुक्लपक्ष

तिथि—२, ५, ७, १०, १२, १५

बार—बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र—रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी, रेवती।

लग्न—शुभ एवं बलवान। लग्न से अष्टम एवं द्वादश भावों में कोई ग्रह न हो।

विशेष ज्ञातव्य

प्रत्येक कार्य के लिए कुछ निश्चित नियम होते हैं, उन्हीं के अनुसार कार्य करने से वह कार्य सिद्धि होता है अन्यथा नहीं। इसी प्रकार लक्ष्मी साधना के लिए निम्न महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखे और इसके ही अनुसार आचरण करे अथवा अत्यन्त परिश्रम करने पर भी साधना निष्फल रहेगी अथवा उसका पूरा फल प्राप्त न होगा।

१. लक्ष्मी पूजन के लिए कमल का पुष्प सर्वाधिक शुभ माना गया है।

२. लक्ष्मी जी को आँवला अत्यधिक प्रिय है।

३. लक्ष्मी पूजन के समय घंटा बजाना वर्जित है।

४. लक्ष्मी साधना के समय साधक को यथासाध्य श्वेत आसन और श्वेत वस्त्रों का ही प्रयोग करना चाहिए।

५. लक्ष्मी साधना में साधक को केशर के तिलक का प्रयोग करना चाहिए।

६. लक्ष्मी साधना करते समय साधक को आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए।

७. लक्ष्मी मन्त्र को कमल पुष्प, कमल गट्टा, गजदन्त, स्फटिक, मूंगा, रुद्राक्ष में से किसी एक की माला का प्रयोग किया जाना चाहिए।

८. लक्ष्मी मन्त्र के जप के समय आसन पर पद्मासन की मुद्रा में बैठना चाहिए।

९. लक्ष्मी साधना में मन्त्र सिद्ध के लिए मन्त्र का उपांशु जप किया जाना चाहिए।

नहा धोकर किसी साफ जगह पर बैठकर ४१ दिन तक इस मन्त्र की एक माला रोजाना फेरनी चाहिए। जप करते समय यह ध्यान रखना है कि मन्त्र का प्रथम चरण "बिस्मिल्ला............रहीम्" का उच्चारण केवल एक बार (प्रारम्भ में) और दूसरे चरण का उच्चारण पूरी माला में करना चाहिए। इस मन्त्र का प्रभाव ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देता है कि कारावासी को मुक्ति मिल जाती है।

नोटः—मुस्लिम मन्त्रों की साधना के लिए किसी मौलवी, फकीर से शब्दों का उच्चारण ठीक से समझ लिया जाना चाहिए।

वशीकरण मंत्र

बिस्मिल्ला हररहमान नीर रहीम्
आलमोति हो वल्लहि।

किसी शुभ तिथि नक्षत्र वाले शुक्रवार से इसका नियमित जप किया जाए। एक महिने तक नित्य एक माला जपना आवश्यक है। जप हो जाने पर, इस मन्त्र से अभिमन्त्रित (प्रभावी) करके जो भी वस्तु किसी को खिलाई जाए उसके प्रभाव से वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जायेगा। ध्यान रहे कि साधक को कभी भी निंद्य उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए ऐसी साधना नहीं करनी चाहिए।

हाजरात का मंत्र (नख दर्पण)

"बिस्मिल्ला हररहमान नीर रहीम्
ख्वाजा खिज्र जिन्दपीर मैंदर मादरदस्तगीर
मदद मेरा जीरान पीर करो घोड़े पर भीड़ चढ़ो"
हजरत पीर हाजर सो हाजर।

नोटः—प्रथम पंक्ति का उच्चारण केवल एक बार ही किया जाता है।

साधना विधि—साधक को बहुत शान्त, स्थिर, निश्चिन्त और निर्भीक होना चाहिए। घर का कोई एकान्त स्थान लीप पोतकर शुद्ध कर लिया जाए। साधक नहा धोकर उस स्थान पर कम्बल बिछाकर बैठे। समय आधी रात्रि या सुबह का ठीक रहता है। साधक का मुंह पश्चिम

की ओर होना चाहिए। साधक के सामने या दाहिनी ओर अंगीठी (मिट्टी की बना ली जाती है) में अंगारे या उपले (कण्डा) की आग हो। पास ही एक कटोरे में लौंग, इलायची, धूप लोबान भर कर रख लें। कोई भी पवित्र माला रखनी चाहिए। हकीक की माला हो तो अति उत्तम हो। साधक कटोरे से थोड़ी हवन सामग्री आग में डाल दें। और बिस्मिल्ला वाला पद जप करे। इस पद को पूरा करके एक चुटकी हवन सामग्री अंगारों पर डाल दें। इसके बाद ख्वाजा खीज्र हाजर वाला पद पढ़े। और एक चुटकी धूप डाल दें। पूरी माला जपी जाय। और हर मनके पर ख्वाजा खीज्र वाला पद पढ़कर आग में धूप डाली जाए। इस प्रकार नित्य एक माला जपने से २१ दिन साधना की जाय। २१ दिन की साधना से प्रत्येक दिन १०८ बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। माला जपते समय ध्यान रहे कि साधारण ढंग से आगे की ओर उंगलियाँ सरकाकर मनके को उल्टी दिशा में अर्थात अपनी ओर से सामने की ओर (इसे उल्टी माला जपना कहते हैं।) फेरना चाहिए। साधना प्रारम्भ शुक्रवार से किया जाए तो अच्छा रहता है।

२१ दिन तक नियमित रूप से निश्चित स्थान पर, और समय पर निर्विघ्न जप पूरा हो जाय तो समझना चाहिए कि ईश्वर बड़ा कृपालु है। और समझना चाहिए मन्त्र सिद्ध हो गया है। इसके बाद जब कभी मन्त्र का प्रभाव देखने का विचार हो (वह दिन भी शुक्रवार हो तो अच्छा रहेगा) सुबह लगभग सात बजे के किसी लड़के को एकान्त स्थान पर (जहाँ साधना की थी या फिर कोई और साफ सुथरा स्थान धूप लोबान से शुद्ध करके) ले जाए। लड़का अबोध, ईमानदार, सच्चा, शुद्ध होना चाहिए। प्रयोग से पूर्व लड़के को साफ सुथरे कपड़े पहनाए जाएं। कोई दस, बेना, बम्मेनी ही उचित रहता है। ध्यान रहे कि बालक शान्त प्रकृति का हो। बहुत चलता पुर्जा और कांइया इस प्रयोग में सफल नहीं होता। साधक उस लड़के को अपने पास बैठाकर उपयुक्त मन्त्र जपते हुए बालक के अंगूठे के नाखून पर काजल लगा दें। पूरा नाखून काला हो जाना चाहिए। उस स्थान पर अंधेरा रहे तो अधिक उत्तम होगा। या फिर कम से कम प्रकाश रहना चाहिए। साधक को उस लड़के को (नाखून को) गौर से

देखने को कहें । अर्थात् लड़के को भली-भाँति समझा दिया जाए कि वह कुछ और न सोचकर खूब गौर से अपने अंगूठे को देखता रहे । निगाह टले नहीं, जब कुछ दिखाई पड़े तो बता देना लेकिन निगाह अंगूठे पर बराबर जमी रहे । साधक पास ही बैठा मन ही मन मन्त्र का जाप करता रहे । थोड़ी देर बाद लड़के को नाखून पर कुछ दिखाई देगा । धीरे-धीरे वह स्पष्ट हो जाएगा । जब लड़का बताये कि मैं आदमी को देख रहा हूँ । तब समझ लेना चाहिए कि मन्त्र सिद्ध हो गया है । अब साधक लड़के को आदेश दे कि दो आदमी आवें. जब लड़का बताये कि आ गये, इस प्रकार इस तरह आठ आदमी आ जाएं तो साधक आदेश दे कि झाड़ू वाले को बुलाओ, इस प्रकार आदेश साधक ही देगा । पर इसका फल लड़के को नाखून में दिखाई देगा । वह बताता रहेगा कि कौन क्या कर रहा है । दो-दो करके जब आठ आदमी आ जाएं तब लड़के से कहना चाहिए कि भिश्ती को बुलाकर पानी छिड़कने को कहो । लड़का नाखून पर दृष्टि जमाए और उसमें दिख रहे आदमियों से कहेगा कि भिश्ती को बुलाओ । तुरन्त ही वह देखेगा कि एक भिश्ती आकर पानी छिड़काव कर रहा है । जब वह यह बता दे कि भिश्ती ने पानी छिड़क दिया है,तब फर्श वाले को बुलाया जाए। इस प्रकार दरबारी, महफिल सजाने वाले, सारे हुक्म दिये जाएँ, झाड़ू लगे, पानी छिड़का जाए, फर्श पर कालीन बिछे. कुर्सी, तख्त, तकिया, मसनद, गद्दी सब सामान बैठने के लिए पूरी सजावट की जाए । महफिल की सजावट पूरी हो चुकने पर लड़के से कहा जाए—'पीराने पीर साहब' से अर्ज करो कि आपका खादिम (भक्त)⋯⋯यहाँ साधक अपना नाम बताएँ । आपको याद कर रहा है । अपने पीर मुंशी के साथ आ जावें ।

जब लड़का यह वाक्य दोहरा दे और बताए कि पीरान पीर साहब और उनका मुंशी आकर कुर्सियों पर बैठ गए हैं, तब उससे कहना चाहिए कि मुंशी से अर्ज करो कि पीर साहब तक मेरी फरियाद पहुंचा दें।

लड़का मुंशी से यह बात कहेगा, मुंशी की स्वीकृति मिल जाने पर साधक अपना कोई प्रश्न बताए, लड़का मुंशी से कहेगा, मुंशी पीर साहब से कहेगा । पीर साहब मुंशी को उत्तर देंगे । इसका उत्तर मुंशी लड़के को बता देगा, यदि लड़का कह दे कि मुझे लिखकर समझाइये तो मुंशी लिख-

कर भी बतायेगा । इस तरह साधक के प्रश्नों का उत्तर पीर साहब से मिलता रहेगा । मुंशी पीर साहब और लड़का साधक का माध्यम रहेगा । इसी बीच साधक लड़के के माध्यम से पीर साहब से चाहे जैसा प्रश्न पूछ सकता है । नौकरी, चोरी की गई वस्तु, गड़ा हुआ धन, यात्रा, सुरक्षा, भाग्यरेखा, खोये गये व्यक्ति का पता, खोये हुए जानवर की खबर, अपने काम का भविष्य, ये सब कुछ पीर साहब बता देते हैं ।

जब प्रश्न पूछे जा चुकें, साधक की इच्छा पूरी हो जाए तब लड़के के द्वारा पीर साहब को आदाब करके इनसे जाने की अर्ज करनी चाहिए । पीर साहब के चले जाने पर महफिल सूनी हो जायेगी, सारा दृश्य अदृश्य हो जायेगा । लड़के को काली स्याही के अलावा फिर कुछ नहीं दिखेगा । इस हालत में लड़के की स्याही धो दी जानी चाहिए ।

ध्यान रहे कि इस पूरी क्रिया में धूप लोबान की धूनी सुलगती रहे । आसपास का वातावरण शान्त, पवित्र हो। वहाँ दुष्ट प्रकृति वाले अविश्वासी, पापी और दुराचारी लोग न रहें। एक बार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर जब भी इच्छा हो किसी सुयोग लड़के पर इसका प्रयोग किया जा सकता है।

राशि अनुसार दैनिक जप के मन्त्र

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रत्येक मनुष्य का नाम किसी-न-किसी राशि में होता है। राशि समय सूचक एक माप है । जिसका सम्बन्ध चंद्रमा और नक्षत्रों की गति से जुड़ा होता है। रश्मिविज्ञान की मान्यता है कि प्रत्येक राशि और उससे सम्बद्ध नक्षत्र तथा चन्द्रगति का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य पड़ता है और वह प्रभाव राशियों की भिन्नता के आधार पर अनेक रूपों में प्रकट होता है। राशियों की संख्या १२ है। प्रत्येक मनुष्य की राशि अर्थात उसके जन्म समय की स्थिति उन्हीं १२ में से कोई एक होती है। बच्चे के जन्म का समय जानकार (सही घंटा, मिनट में हो तब) ज्योतिषी लोग बताते हैं कि जातक किस राशि नक्षत्र में जन्मा है तथा उसके जीवन में इन सबका क्या प्रभाव पड़ेगा।

यह एक बहु-अनुभूत तथ्य है कि प्रत्येक राशि का जातक कुछ विशिष्ट और भिन्न प्रभाव वाला होता है। उनमें कुछ गुण होते हैं तो कुछ दोष

११. कुम्भ राशि—कुम्भ राशि के जातक के लिये निम्नलिखित दो मंत्र उपयोगी होंगे।

गोपाल गोबिन्द मंत्र—श्री गोपाल गोबिन्दाय नमः।

श्याम मंत्र—ॐ क्रो ह्रीं साम्मने श्यामरामाय नमः।

१२. मीन राशि—राशि चक्र की इस बारहवीं और अन्तिम राशि के लिये भी दो मंत्र कहे गये हैं। जातक कोई भी एक जप सकता है।

दामोदर मंत्र—ॐ ह्रीं दामोदराय नंदनाय नमः।

चक्रपाणि मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्रों सथाग चक्राय नमः।

हाजरात की मन्त्र अँगूठी

जिस प्रकार हाजरात मंत्र को सिद्ध करके नाखून पर स्याही में सब कुछ देखा जाता है, वैसा ही (नख दर्पण की भाँति) प्रभाव मंत्र द्वारा बनाई गई अंगूठी में भी होता है।

अंगूठी बनाने की विधि निम्न प्रकार है।

एक अंगूठी बनवाइये—सोना, चाँदी, ताँबा या किसी भी धातु की। किसी जौहरी से स्फटिक का असली नग लावें। नग चौकोर होना चाहिए। यह नग बाद में अंगूठी में जड़ा जायेगा। इसलिए अंगूठी बनवाते समय उसकी कटोरी या पंजे ऐसी नाप के हों कि नग उनके बीच में फिट हो जाए।

ध्यान रहे कि यह अंगूठी हिन्दू मंत्रों द्वारा हिन्दू पद्धति से बनती है। अतः सारे कार्य हिन्दू मंत्र, तंत्र, शास्त्र के अनुसार शुभ मुहूर्त, शुभ दिन आदि देखकर बनावें व शुद्धता, पवित्रता, संयम और आस्था तांत्रिक कार्यों के लिए पहले होनी चाहिये।

शमशान जाकर चिता का कोयला लाइये। उसे पीसकर पाउडर जैसा बना लें। कपूर जलाकर मिट्टी के औंधे दिये में काजल तैयार करें। काले साँप की केंचुली पहले से ढूंढकर रखें। उसे भी जलाकर राख कर दें। ये तीनों पाउडर बराबर-बराबर लेकर एक में मिलाएँ और कटोरी में रखकर गरम करें। गरम हो जाने पर उसे अंगूठी के खाँचे में जहाँ नग जड़ना हो

डाल दें। यह गरम पाउडर खाँचे की तह में बराबर फैल जाना चाहिए। उसके ऊपर चमेली का तेल शुद्ध दो बूंद टपका दें। इसके बाद नीचे लिखा मन्त्र २१ बार पढ़ें। प्रत्येक बार मन्त्र समाप्ति पर अंगूठी पर फूंक मारें।

जब २१ बार मन्त्र जप पूरा हो जाये तब वह स्फटिक का नग अंगूठी में जड़ दें। बस अंगूठी तैयार हो गई। इसे त्रिकालदर्शी अंगूठी कहते हैं।

अंगूठी तैयार हो जाने पर किसी भी समय में ८-१० साल का कोई बच्चा बुलाइये। ब्राह्मण और देवगण का बालक ही ठीक रहता है। वैसे भी कोई देवगण का सरल-निष्कलुष और शान्त गम्भीर बालक बुलाया जा सकता है। बच्चे को पहले स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र पहनाने चाहिएँ। ये समस्त कार्य गणेश जी का ध्यान करते हुये करने चाहिएँ। स्थान वैसा ही एकान्त-पवित्र हो और पूरे क्रिया कलाप के समय धूप सुलगती रहे।

बच्चे का मुंह पूर्व या उत्तर की तरफ करें। गणेश जी का ध्यान करते हुये वह अंगूठी जो २१ बार मन्त्रजप द्वारा शुद्ध की जा चुकी है, पहना दी जाये।

बच्चे से कहिये कि गणेश जी का ध्यान करके अंगूठी को गौर से देखे। जब वह नगीने पर निगाह जमा लेगा, तो थोड़ी देर बाद उसे नग का काला रंग बदल कर सफेद दीखने लगेगा। जब रंग काले की जगह सफेद दिखाई देने लगे तब समझ लें कि अंगूठी प्रभाव दिखा रही है। उसके बाद बच्चे से जो कुछ भी पूछोगे उसका उत्तर बताने वाला दृश्य बच्चे को नगीने में दिखाई देगा। वह एक टक देखते हुए बतायेगा कि वहाँ कैसा क्या है। भूत, भविष्य, वर्तमान की कोई भी घटना, चोरी की गई वस्तु, प्रवासी व्यक्ति की स्थिति, खोई हुई वस्तु का पता, नौकरी, धन्धा, व्यापार आदि का कोई भी प्रश्न पूछिये लड़का उस नगीने में उसका उत्तर प्रत्यक्ष रूप से देखते हुए आपको बताता जाएगा कि ऐसा हो रहा है। ऐसा होगा।

सुनने में, पढ़ने में यह काम झंझटी जरूर है पर स्थिर चित्त होकर निर्भय, निश्चिन्त होकर पूरी आस्था और शुद्धता के साथ अगर कोई इनके नियमों का पालन करेगा निश्चित ही वह लाभान्वित होगा।

अंगूठी को शोधित करने, उसे शक्तिशाली बनाने वाला यन्त्र जिसे २१ बार जपना पड़ता है, निम्नलिखित है—

ॐ ह्रीं श्मशानवासिनी महाकालिके आगच्छ आगच्छ,
अवतर अवतर, दर्शय दर्शय ह्रीं स्वाहा।

ऐसी एक अंगूठी बनाई जाती है किन्तु उसका प्रभाव अलौकिक दर्शन दर्शन नहीं सुख समृद्धि और धनधान्य की वृद्धि के लिए होता है। सौभाग्य बढ़ाने में वह अंगूठी निश्चय ही सफल रहती है। हाँ बताने की क्रिया थोड़ी जटिल अवश्य है। पर साधना में यदि जटिलता न हो तो राह चलते सभी लोग उसे साधकर सृष्टि और समाज में अराजकता उत्पन्न कर सकते हैं। फिर सुख, समृद्धि के लिए पहले परिश्रम तो करना ही पड़ता है। हम जो अन्न और फल खाते हैं उसके लिए उन्हें प्राप्त करने के लिए तो पसीना गिराना पड़ता है। बिना श्रम के कुछ नहीं मिलता। ईश्वर भी उसी की सहायता करता है जो श्रम करने के लिए प्रसन्न मन से तैयार रहता है। सौभाग्यप्रदायक उस अंगूठी की निर्माण विधि आगे लिखी जा रही है।

घंटाकर्ण मन्त्र

घंटाकर्ण देवता का वर्णन हिन्दू धर्म के सभी संप्रदायों में प्राप्त होता है। इनकी कृपा पाने के लिए अनेक मंत्र रचे गये हैं। यहाँ एक सरल मंत्र दिया जा रहा है। इसकी साधना कुल तीन दिनों की होती है। पर यदि इसे नियमानुसार सिद्ध कर लिया जाए तो पूरे एक वर्ष के लिए धन की समस्या दूर हो जाती है। व्यापारीजन इससे विशेष लाभ उठा सकते हैं। वैसे तो कोई व्यक्ति साधना करे फल अवश्य मिलता है। मंत्र इस प्रकार है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रीं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मीं पूरय पूरय सुख सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा।

जप विधि—इसकी साधना दीपावली के कुछ दिन पूर्व अर्थात् तेरस से प्रारम्भ होती है। क्रम यह रहना चाहिये कि प्रथम दिन ४० माला, दूसरे दिन ४२ माला और तीसरे दिन अर्थात् दीपावली को ४३ माला फेरनी चाहिएँ। जप के समय स्थान शुद्ध, पवित्र और एकान्तमय होना

चाहिये। जप के पूरे समय तक धूप और दीप जलता रहना चाहिए। साधक का मुँह उत्तर दिशा की ओर रहना चाहिए और सफेद वस्त्र पहन कर सफेद ऊनी आसन पर बैठकर जप करे। माला लाल रंग की होनी चाहिए। रुद्राक्ष, लाल चन्दन या मूँगा की माला प्रयुक्त की जा सकती है।

चक्रेश्वरी मंत्र

प्रतिदिन दस माला के हिसाब से २१ दिनों तक निम्न मंत्र का जप किया जाना चाहिए। उसके बाद एक माला नित्य। इस मंत्र के प्रभाव से घर, परिवार और समाज में विरोध, उपद्रव शान्त होकर साधक के लिए सुख समृद्धि का मार्ग खुलता है। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ॐ ह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी, चक्रवारुणी, चक्रधारिणी, चक्रवेगेन मम उपद्रवं हन हन शांति कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्लीं चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

इस दूसरे मंत्र को दीपावली की रात्रि में चाँदी की कलम से, यक्ष-कर्दम की स्याही से भोजपत्र पर लिखें और चाँदी के तावीज में भरकर भुजा में बाँध लें, तो ज्वर पीड़ा आदि रोग तथा भूत-प्रेत का निवारण हो जाता है।

कामनापूरक मंत्र

यह मन्त्र बहुत सरल है और दोहे के रूप में रचा गया है।

कोदर तमसी रामसुख, पीथल मोती हीर।
भोप दीप सुख श्यामजी, भिक्षु शिष्य बड़वीर॥

साधना विधान—शुद्ध एकान्त स्थान में किसी शुभ मुहूर्त पर इस मंत्र का जाप प्रारम्भ किया जाना चाहिए। साधक का मुँह पूर्व की ओर हो। वह सफेद वस्त्र पहने, सफेद आसन पर बैठे और पद्मासन मुद्रा में सफेद आसन पर बैठकर सफेद माला से ही जप करे। इस मंत्र को तीन दिन में १२५०० जपना चाहिए। यह संख्या पूरी हो जाने पर कुछ हवन, पूजन करके निश्चिन्त हो जाये। यही मंत्र सिद्धि करने की क्रिया है। इसका

फल प्राप्त करने के लिये यह नियम है कि साधक को यदि कहीं जाना है तो प्रस्थान से पूर्व वह हाथ-मुंह धोकर शुद्ध हो जाए और दोनों हथेलियों को मुंह के सामने करके नौ बार वह मन्त्र पढ़े, और प्रसाद के रूप में वह मंत्र सिद्ध हथेलियाँ अपने सर पर रख दें तथा चेहरे छाती, पैर पर फेर लें। निश्चय ही वह प्रभावपूर्ण हो जायेगा। ऐसा साधक जहाँ भी जाएगा उसे सफलता प्राप्त होगी।

भय निवारक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं एं नमः स्वाहा।

नियम—शुभ मुहूर्त में, एकान्त में पवित्र स्थान पर बैठकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिये। कुल जप सख्या १२५०० है। एक दिन में जप पूरा करके कुछ हवन पूजन कर देने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

प्रभाव—यह मंत्र भय, भ्रम, चिन्ता को दूर करके मानसिक शक्ति में वृद्धि करता है। मनोबल बढ़ाने, निश्चित स्थिति उत्पन्न करने और बाधानाश में यह अपना चमत्कारपूर्ण प्रभाव दिखलाता है। विभिन्न अवसरों पर इसका प्रयोग इस प्रकार होता है।

शत्रु नतमस्तक हो जाता है—शत्रु सामने हो तो (इस मंत्र के सिद्ध हो जाने के बाद) सात बार अपनी हथेलियों पर पढ़े, फिर शत्रु का नाम लेते हुये हथेली अपने मुंह पर फेरे तो विरोधी नम्र होकर अपने वशीभूत हो जाता है।

सभी कार्यों में सफलता—कोई भी कार्य प्रारम्भ करना हो उसके पूर्व एक माला इस मंत्र की जप लेने से सफलता मिलती है।

प्रतियोगिता में सफलता—मुकदमा, विवाद, पंचायत, तर्क, प्रतियोगिता आदि में जाने से पूर्व इसका जप कर लेने से सफलता मिलती है।

व्यापार में सफलता—व्यापारिक उद्देश्य से कहीं जाना हो तो उस नगर की नदी, तालाब या कुँएं के पास बैठकर एक माला जप लेने से सफलता मिलती है। नगर प्रवेश के पूर्व किया गया यह प्रयोग आगे की सारी बाधाएँ समाप्त कर देता है।

सम्मोहन मन्त्र

सम्मोहन का प्रभाव विलक्षण होता है। इसके द्वारा विरोध भावना समाप्त हो जाती है और अभीष्ट व्यक्ति साधक का विरोधी भी अनुगामी बन जाता है। सम्मोहन के अनेक मंत्र, तन्त्र प्राप्त होते हैं। जिनका यथा-स्थान वर्णन किया जायेगा। यहाँ एक अति सरल मंत्र प्रस्तुत है।

ॐ हुँ फट्।

विधि—किसी सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्र ग्रहण के अवसर पर इस मन्त्र को १२५०० बार जप कर सिद्ध कर लिया जाता है। उसके बाद जब कभी आवश्यकता पड़े इष्ट व्यक्ति के सामने खड़े होकर १०० बार इस मन्त्र का जप करे तो वह व्यक्ति मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण साधक का अनुगामी बन जाता है। और प्रसन्न मन से आज्ञा का पालन करेगा। दूसरा मंत्र इस प्रकार है—

ॐ हां ग जूं सः (······) मे वश्य वश्य स्वाहा।

विधि—किसी शुभ समय और शुभ स्थान पर इस मंत्र की १२५००० जप कर इसे सिद्ध करना चाहिए। रिक्त स्थान में उस व्यक्ति का नाम लें जिस पर प्रयोग करना है। सिद्ध हो जाने के बाद भी एक मंत्र की माला रोजाना फेरते रहें। यह दैनिक जप सोने से पूर्व किया जाना चाहिये। अवसर पर अभीष्ट को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कोई वस्तु (पान, सुपारी, इलायची, पानी, सर्बत) दें। इसके सेवन से वह साधक का अनुगामी बन जायेगा।

पेट के रोग को दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो इट्टी मिट्टी भस्म कुरु कुरु स्वाहा।

इस मत्र को १२५०० बार जप कर हवन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। सुविधानुसार हवन भी किया जा सकता है। बाद में जब भी कोई पेट दर्द से परेशान हो थोड़ा-सा जल लेकर उसे इसी मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर लें। वह पानी रोगी को पिला दें। रोगी ठीक हो जायेगा।

अतिभोजन का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को अगस्त्यं कुम्भकरणं च शनि च बड़वानल:

आहार पाचनार्थाय स्मरत भीमास्य पंचकम् स्फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

प्रयोग—भोजन करने के बाद सात बार इस मंत्र को पढ़ते हुए पेट पर हाथ फेरने से अधिक मात्रा में खाया हुआ अन्न सरलता से पच जाता है।

वायुगोलानाशक मन्त्र

ॐ नमो काली कंकालिनी नद पार बसै इस्माईल जोगी,
लोहे का कछोटा काट काट लोहे का गोला काट काट
तो खब्द न साबा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

प्रयोग—इतवार अथवा मंगलवार के दिन रोगी को सामने बैठाकर उपयुक्त मन्त्र पढ़ते हुये चाकू से रेखा बनाकर काटें और रोगी पर फूंक मारे तो वायुगोला का दर्द मिट जाता है।

सर्पभयनाशक मंत्र

१. हुं क्षूं ठः ठः।

प्रयोग—पहले किसी शुभ मुहूर्त पर इस मंत्र को ११००० बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके बाद जब कभी सर्प दिख पड़े तो उसकी ओर इस मन्त्र को जपते हुए फूंक मारनी चाहिये या भभूत धूल फेंकनी चाहिए। इसके प्रभाव से साँप की गति अवरुद्ध हो जाती है। वह आगे नहीं बढ़ेगा। या तो लौट आयेगा या दूसरी ओर मुड़ जायेगा।

२. ॐ ह्रौं ह्रीं गरुड़ाज्ञा ठः ठः।

प्रयोग—इस मंत्र को ११००० बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर कभी सर्प दिखाई पड़े तो मंत्र को पढ़कर धरती पर एक रेखा खींच देनी चाहिये। साँप उस रेखा को पार नहीं कर सकता, लक्षमण रेखा की तरह अलंघ्य हो जाती है।

३. ॐ ल ल ल ला ला कुरु स्वाहा।

प्रयोग—इस मंत्र को ७००० बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर कभी सर्प दिखाई पड़े तो खाली घड़ा वहाँ रखकर,यह मंत्र पढ़ते हुए उस पर धूल या भभूत डालने से साँप उसमें प्रविष्ट हो जाता है। बाद में ढक्कन लगाकर साँप को कहीं भी ले जाया जा सकता है।